सं० भूकेश—पु० वट, बरगद, २ शैवल, सिवार ।

प्रा० भूख—(सं० बुभुक्षा) स्त्री० खाने की चाह, क्षुधा ।

प्रा० भूखबन्दहोजाना—बोल० भूख नहीं लगना । [होना ।

प्रा० भूखलगना—बोल० भूखमालूम

प्रा० भूखभागना—बोल० सुख होना, आराम पाना, खाने पीने का कुछ दुःख नहीं रहना ।

प्रा० भूखा (सं० बुभुक्षित) गु० जिसको खानेकी चाह हो, २ किसी चीज का चाहनेवाला, ३ कंगाल, गरीब । [मण्डल ।

सं० भूगोल—(भू+गोल) पु० पृथ्वी

सं० भूचक्र—पु० भूमण्डल ।

सं० भूचर—(भू=धरती, चर्=चलना) पु० धरती पर चलनेवाला जीव ।

प्रा० भूड—स्त्री० बलुआ धरती, रेतली धरती, रेगिस्तान ।

प्रा० भूड़ल—पु० अभ्रक ।

सं० भूत—(भू=होना) पु० पिशाच, प्रेत, २ प्राणी, जीवधारी, जन्तु, ३ शिव के गण, ४ अतीतकाल, बीताहुआ समय, भूतकाल, ५ तत्त्व (जैसे पृथ्वी, पानी, आग, हवा और आकाश) गु० हुआ, बीता हुआ, पाया हुआ, २ सच, ठीक, कुमार्गी, धरणी ।

सं० भूतघ्न (भूत+हन्) पु० भोजपत्र, लस्सुन, लशुन, ऊंट, वायु भिडंग, हींग । [महादेव, २ भैरव ।

सं० भूतनाथ—(भूत+नाथ) पु०

सं० भूतल—(भू+तल) पु० पृथ्वी, धरती, धरातल ।

सं० भूति—(भू=होना) स्त्री० ऐश्वर्य, संपत्ति, विभूति, अष्टसिद्धि, २ भस्म, राख ।

सं० भूतेश—(भूत+ईश) पु० महादेव, शिव ।

सं० भूदार—(दृ=फाड़ना) कृ० पु० शूकर, सुअर ।

सं० भूदेव—(भू=धरती, देव=देवता) पु० ब्राह्मण, विप्र, भूसुर ।

सं० भूधर } (भू=धरती, धृ=रखना)
भूध्र } पु० पहाड़, पर्वत, गिरि ।

प्रा० भून्ना—(सं० भर्जन, भृज्=या भ्रस्ज्=भून्ना) क्रि० स० आगपर रख कर झुलस लेना, जैसे मक्की आदि, २ गर्म घी या तेल में डाल कर खूब हिलाना, जैसे मांस आदि, ३ गर्म राख या बालू में पका लेना, जैसे चना आदि ।

सं० भूप—(भू=पृथ्वी, पा=पालना) पु० राजा, नृप, बादशाह व ज्योतिष में १६ का नाम ।

सं० भूपति—(भू+पति) पु० राजा, महीपाल, भूपाल ।

सं० भूपाल—(भू=पृथ्वी, पाल्=पालना) पु० राजा, भूप, नरपति, भूपति ।

प्रा० भूभल—स्त्री० गर्म राख, अङ्गार।

प्रा० भूभुरि-पु० छोटे काँटा।

सं० भूभृत्- पु० पहाड़, राजा, शेष, कच्छपराज, दिग्गज।

सं० भूमि-(भू=होना, जिस पर मनुष्य होते हैं) स्त्री० पृथ्वी, धरती, २ जगह, स्थान।

सं० भूमिका—(भूमि) स्त्री० प्रसंग, प्रकरण, आभास, तमहीद।

सं० भूमिनाग-पु० केंचुआ, साधारण सांप, सँपोला।

सं० भूमिपति-(भूमि+पति) पु० राजा, भूपाल, भूपति।

सं० भूमिपाल-(भूमि=पृथ्वी, पाल् =बचाना) पु० राजा।

सं० भूमिपिशाच—पु० ताड़वृक्ष, तालद्रुम।

प्रा० भूमिया-(भूमि) पु० जमीं दार, २ पृथ्वी का देवता।

प्रा० भूर }
भूरसी } स्त्री० दक्षिणा, दान, भीख।

प्रा० भूरा-गु० एकतरह का रंग।

सं० भूरि-(भू=होना) गु० बहुत, अधिक, ढेर।

सं० भूरिशः-अव्यय० बहुत, बारंबार, मुतवातिर। [वृक्ष, दरख़्त।

सं० भूरुह-(रुह=उगना) क० पु०

प्रा० भूल-(सं० भ्रम) स्त्री० चूक, सहो।

प्रा० भूलना—क्रि० स० चूकना, याद न रखना।

प्रा० भूलाबिसरा }
भूलाभटका } बोल० भटका हुआ, रास्ता भूल कर इधर उधर फिरनेवाला।

सं० भूषक-(भूष्+अक) क० पु० अलंकारकारक, भूषणधारी।

सं० भूषण-(भूष्=शोभना) पु० गहना, आभूषण, आभरण।

सं० भूषित- (भूष्=शोभना) गु० शोभित, शोभायमान, अलंकृत।

प्रा० भूसा- सं० बुष, बुष्=छोड़ना) पु० जानवरोंके खानेका चारा, तुस।

प्रा० भूसी— सं० बुष, बुष्=छोड़ना) स्त्री० चोकर, अनाज के ऊपर का छिलका। [पु० ब्राह्मण, विप्र।

सं० भूसुर (भू=पृथ्वी, सुर=देवता)

सं० भृकुटी-(भ्रू=भौं, कुट=टेढ़ा होना) स्त्री० त्योरी, घुड़की, भौं का चढ़ाना।

सं० भृगु-(भ्रस्ज्=भूनना, अर्थात् सबके मन में धर्म की आग को प्रकाश करना) पु० एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जिसने विष्णु की छाती में लात मारी थी, ब्रह्मा का बेटा, एक प्रजापति।

सं० भृगुकुलकेतु—पु० परशुराम, भृगुवंशकेपताका।

सं० भृगुनाथ }
भृगुपति } (भृगु=भृगुवंशियों के, नाथ वा पति= स्वामी) पु० परशुराम, परशुधर।

सं० भृङ्ग—(भृ=भरना, वा भ्रम्=फि-

रना) पु० भौंरा, भ्रमर ।
प्रा० भृङ्गी-(सं० भृङ्ग) स्त्री० भौंरी, लखेरी, शिवगण, पार्वती ।
सं० भृति-(भृ=भरना) स्त्री० मूल्य, वेतन, भरण, पोषण ।
सं० भृतिभुज्-गु० वेतनोपजीवी, नौकरी से जीनेवाला ।
सं० भृत्य-(भृ=भरना, अर्थात् जिस को मज़दूरी या तनख़्वाह देना) पु० नौकर, चाकर, टहलू, खिदमतगार ।
सं० भृश-अव्य० अतिशय, बहुत ।
सं० भृष्टि-स्त्री० भूजना ।
प्रा० भेंगा-गु० टेढ़ा देखने वाला, डेरा, ढेरा, स्वर्गपताली ।
प्रा० भेंट } स्त्री० मिलाप, मुलाक़ात,
भेट } २ सौगात, डाली, नज़र ।
प्रा० भेंटना } क्रि० स० मिलना,
भेटना } मिलाप करना, मुलाक़ात करना । [बेंग, दादुर ।
सं० भेक-(भी=डरना) पु० मेंड़क,
प्रा० भेख-(सं० वेष) पु० भेष, लिबास, रूपबदलना, स्वरूपबनाना ।
प्रा० भेखधारी-क० पु० भेष बनाने वाला, अपना और रूपबनानेवाला । [पहुँचाना ।
प्रा० भेजना-क्रि० स० पठाना,
प्रा० भेजा-पु० शिरका गूदा, शिर का मग़ज़ । [भेड़ी ।
सं० भेड-(भी=डरना) स्त्री० गाड़र,
प्रा० भेड़ा-(सं० भेड) पु० मेढ़ा, मेष ।
प्रा० भेड़िया-(सं० भेडहा, भेड= भेड़ी, हन्=मारना) स्त्री० हुंडार, ल्याली, एक फाड़नेवाला जानवर ।
प्रा० भेड़ियाधसान-बोल० सब जानतेहैं कि जिस ओर एक भेड़ी जाती है सब उसी ओर चलती हैं इसलिये जब बहुत आदमी बेसमझे किसी के पीछे चलते हैं तब यह मुहावरा बोलाजाता है ।
प्रा० भेड़ी-(सं० भेड) स्त्री० भेड़, गाड़र, मेढ़ी ।
सं० भेद-(भिद्=तोड़ना) भा० पु० छिपी बात, गुप्त बात, राज़, २ जुदा होना, भिन्नता, अलगाव, ३ अन्तर, फ़रक़, ४ प्रकार, जाति, भांति, ५ विरोध, विच्छेद, अनमेल ।
सं० भेदक-(भेद्+अक) क० पु० तोड़नेवाला, विदारक ।
प्रा० भेदलेना-बोल० छिपीहुईबात को मालूम करना ।
प्रा० भेदकहना-बोल० छिपाने योग्य बात को कहदेना, राज खोलना ।
प्रा० भेदखोलना-बोल० छिपी बात को प्रकट करना ।
सं० भेदन-(भिद्=तोड़ना) भा० पु० तोड़ना, तोड़न, फोड़न ।
सं० भेदि } क० विदारक, छेद
भेदी } करनेवाला, पु० वज्र ।

सं० भेदित—कर्म० पु० फाड़ा हुआ ।

प्रा० भेदिया } (भेद) गु० भेदू,
सं० भेदी } भेदजाननेवाला ।

प्रा० भेदू—(भेद) गु० भेद जानने वाला, भेदी ।

सं० भेद्य—(भिद्=तोड़ना) कर्म० पु० भेदने योग्य, तोड़नेकेलायक ।

सं० भेरी—(भी=डर पैदाकरना, स्त्री० एक प्रकारका बाजा, तुरही, नफीरी, सहनाई ।

प्रा० भेली—स्त्री० गुड़का ढेला ।

प्रा० भेव—(सं० भेद, वा भाव) पु० भेद, भाव, स्वभाव, तरह ।

प्रा० भेष—(सं० वेष) पु० भेष, रूप बदलना, स्वरूप बनाना ।

प्रा० भेषबदलना—बोल० स्वांग भरना, रूपबदलना ।

सं० भेषज—(भेष=रोगका डर, भेष्=डरना, जि=जीतना या भिष् रोग दूर करना) भा० पु० दवा, दारू, औषध ।

सं० भैषज्य--भा० पु० औषध, दवा ।

प्रा० भैंस—(सं० महिषी) स्त्री० एक जानवर का नाम ।

प्रा० भैंसा—(सं० महिष) पु० एक चौपाये का नाम ।

प्रा० भैंसादाद } (सं० महिषदद्रु)
भैंसियादाद } पु० एक प्रकार का दाद ।

प्रा० भैया-(सं० भ्राता) पु० भाई ।

प्रा० भैयापा } (सं० भ्रातृता) पु०
भायप } भाईचारा, बिरादरी ।

सं० भैरव—(भी=डर पैदा करना) पु० शिव, दुर्गा के पास रहनेवाला देवता जो शिवका अवतार है, भैरव आठ हैं (१ असितांग, २ रुरु, ३ चण्ड, ४ क्रोध, ५ उन्मत्त, ६ कुपित, ७ भीषण, ८ संहार) २ भयानक रस, ३ एक रागका नाम, गु० डरावना, भयंकर ।

सं० भैरवी—(भी=डर उपजाना) स्त्री० दुर्गा, काली, देवी, २ एक रागिणीका नाम ।

प्रा० भोंकना } (सं० भष्=भौंकना,
भौंकना } क्रि० अ० भूकना) हौंहौं करना, कुत्तेका शब्दकरना ।

प्रा० भोंडा—गु० कुडौल, कुरूप ।

प्रा० भोंथा } गु० तीखा नहीं, कुं-
भोंथरा } ठित, कुन्द, गोठिल ।

प्रा० भोंदू—गु० गँवार, अनजान, सीधा ।

प्रा० भोंपू—पु० नरसिंगा ।

प्रा० भोई—पु० कहार, पालकी उठाने वाला ।

सं० भोक्तव्य—(भुज्=खाना) कर्म० पु० खाने के लायक ।

सं० भोक्ता—(भुज्=खाना) क० पु० खानेवाला

सं० भोग—(भुज्=खाना), पु० खाना,

प्रसाद, नैवेद्य, २ सुख,हर्ष,विलास, देश, आराम ।

प्रा० भोगना-(भोग) क्रि० स० भुगतना, सहना, पाना, दुःख या सुख उठाना ।

सं० भोगपत्र-पु०वक्फनामा,फर्मा नजागीर,जागीरनामा ।

सं० भोगिवल्लभ-(भोगि=सर्प, वल्लभ=प्यारा) पु० चन्दन ।

सं० भोगी-(भोग) क० पु० भोग विलास करने वाला, सुखी, २ (भुज्=टेढ़ा चलना)पु०सांप,सर्प ।

सं० भोज-(भुज्=पालना) पु० उज्जैन के एक राजा का नाम जो विद्या के फैलाने से बहुत प्रसिद्ध है, २ भोजकट देश जो पटना और भागलपुर के पास है या जिसको अब भोजपुर कहते हैं जो शाहाबाद के ज़िले में है ।

सं० भोगीन्द्र-(भोगी+इन्द्र) पु० शेषनाग, वासुकि नागराज ।

प्रा० भोज-(सं० भोज्य,भुज्=खाना) पु० खाना, आहार ।

सं० भोजक-(भुज्+अक) क० पु० भक्षक, खाने वाला ।

सं० भोजकट-पु० भोजपुर, देश-विशेष ।

सं० भोजन-(भुज्=खाना) भा० पु० खाना, आहार, भोजन करना, खाना खाना, जेवना ।

सं० भोजनीय-(भुज्+अनीय) र्म० पु० भोजन योग्य ।

प्रा० भोजपत्र-(सं० भूर्जपत्र) पु० एक वृक्ष की छाल ।

सं० भोजयिता-(भुज्+इ+तृ) क० पु० भोजन करानेवाला ।

सं० भोज्य-(भुज्=खाना) पु०खाने की चीज़, र्म० खाने योग्य ।

प्रा० भोड़ल-पु० अभ्रक, भूडल ।

सं० भोभो-अव्य० सम्बोधन संभ्रम, आदरार्थ सम्बोधन ।

प्रा० भोर-पु० बिहान, पौह,प्रभात।

प्रा० भोरहोना-बोल०बिहानहोना।

प्रा० भोरा } भोला } गु० सीधा सादा, निष्कपट, कम अक्ल ।

प्रा० भोलानाथ-बोल० महादेव, शिव ।

प्रा० भोलाभाला-बोल० सादा ।

प्रा० भोलीबातें-बोल० सीधीबातें, बे कपट बातें ।

प्रा० भोंह } भौं } भौंह } (सं० भ्रू) पु० आंख पर का बाल, भृकुटी ।

प्रा०भौंचढ़ाना-बोल०गुस्साहोना।

प्रा० भौंटेढ़ाकरना-बोल० त्यौरी चढ़ाना । [चढ़ाना)।

प्रा०भौं हैंतानना-बोल० त्यौरी

प्रा० भौंचाल (सं० भूमिचाल)

पु० भूंईडोल, भूकंप, जलजला जमीनका।

प्रा० भौंरा—(सं० भ्रमर) पु० एक तरहकी बड़ी मक्खी, मधुप, अलि।

प्रा० भौ-(सं० भय) पु० डर, खौफ।

प्रा० भौजाई, भौजी (सं० भ्रातृजाया) स्त्री० भाई की स्त्री।

सं० भौतिक—(भूत) गु० भूत सम्बन्धी पृथिव्यादि वा पिशाचादि सम्बन्धी।

सं० भौम—(भूमि=पृथ्वी) गु० पृथ्वी का, पु० मङ्गल ग्रह, २ नरकासुर राक्षस।

सं० भौमवार—(भौम + बार) पु० मंगलवार।

सं० भौमावती—(भौम) स्त्री० भौमासुर की स्त्री।

सं० भ्रंश, भ्रंस (भ्रश वा भ्रस=गिरना) पु० नीचे गिरना, नाश, ध्वंस, बिगाड़।

सं० भ्रंशित वा भ्रंसित—कर्म० पु० च्युत, गिरा।

सं० भ्रम—(भ्रम्=फिरना) पु० भ्रान्ति, भूल चूक, २ संदेह, संशय, झूठाज्ञान।

सं० भ्रमण—(भ्रम्=फिरना) पु० फिरना, घूमना, विचरना।

सं० भ्रमर—(भ्रम्=फिरना) पु० भौंरा, मधुप, मधुकर, अलि।

सं० भ्रष्ट—(भ्रश=नीचे गिरना) कर्म० पु० गिरा हुआ, पतित, अधर्मी, धर्मसे गिराहुआ, भ्रष्ट करना, क्रि० स० बिगाड़ना, बुरे काम में लगाना, भ्रष्टहोना, क्रि० अ० बिगड़ना, बुरेकाम में लगना।

सं० भ्राजना-(सं० भ्राज्=शोभना) क्रि० अ० शोभना, सोहना।

सं० भ्राजिष्णु-(भ्राज् + इष्णु) कृ० दीप्तिमान् शोभायुक्त।

सं० भ्राता—(भ्राज्=शोभना) पु० भाई, भैया, सहोदर।

सं० भ्रांत—कृ० पु० भूला हुआ।

सं० भ्रान्ति-(भ्रम्=फिरना) भा० स्त्री० भ्रम, भूल चूक, २ घूमना, भ्रमण।

सं० भ्रामक—(भ्रम् + अक) कृ० पु० भ्रमजनक, अशुद्ध, घूमनेवाला।

सं० भ्राम्यमान-कृ० पु० घूमनेवाला।

सं० भ्राश -पु० प्रकाश, चमक।

सं० भ्रू—(भ्रम्=फिरना) पु० आंखों पर का बाल, भौंह, भौं।

सं० भ्रूण—पु० गर्भ, हमल।

सं० भ्रूभङ्ग—(भ्रू=भौं, भञ्ज=तोड़ना) पु० घुरकी, त्यौरी, भौं चढ़ाना, कटाक्ष।

(म)

सं० म—(मा=नापना वा आदर करना) पु० ब्रह्मा, २ शिव, ३ चांद, ४ विष्णु, ५ यम, ६ समय, ७ विष।

प्रा० मंगता—(मांगना) पु० भिखारी, भिखमंगा।

प्रा०मंगनी–(मांगना) स्त्री०सगाई, निस्बत, २ उधार।

प्रा०मंगनीदेना–बोल०उधारदेना।

प्रा० मंगसिर, मगशिर, मगसिर–(सं० मार्गशिर) पु० अगहन।

प्रा० मंजना–(सं० मंजन, मंज्=साफ़ होना) क्रि० अ० उजला होना, चिकना होना, साफ़ होना।

प्रा० मंजीरा, मजीरा–(सं० मंजीर, मंज्=शब्द करना) पु० एक बाजेका नाम, झांझ, करताल।

प्रा० मंडुआ–पु० एक अनाज का नाम।

प्रा० मंढ़ना, मढ़ना–(सं० मड्=संवारना) क्रि० अ० ढकना (जैसे किताब को पूठे से, या ढोल ढफ आदि को चमड़े से) लपेटना।

प्रा० मकड़ा–(सं० मर्कट, मर्क=जाना) पु० एक तरह का कीड़ा।

प्रा० मकड़ाना–क्रि० अ० टेढ़ा चलना, अकड़ के चलना, २ काम करने से जी चुराना।

प्रा० मकड़ी–(सं० मर्कटी) स्त्री० एक तरह का कीड़ा जिसके आठ पैर होते हैं।

सं० मकर–(म=मनुष्य, और कृ=मारना, जो मनुष्यों को मार डालता है यहां मनुष्य शब्द को म हो जाता है) पु० मगरमच्छ, २ दशवीं राशि।

सं०मकरकेतु, मकरध्वज–(मकर=मगर, केतु वा ध्वजा=झंडा) पु० कामदेव, जिसके झंडे पर मकर का चिह्न है।

सं० मकरन्द–पु० फूलों का रस, पुष्परस, पराग।

सं० मकराकृत–(मकर=मगर, आकृति=रूप) गु० जिस चीज का आकार मगर कैसाहो जैसे मकराकृत कुण्डल।

सं० मकरी–(मकर) स्त्री० मछली, एक पानी का जीव, २ जो जाला तानती है।

प्रा० मकरोना–क्रि० स० थोड़ासा गीला करना, करमोना।

सं० मकुट, मुकुट–(मकि=शोभना) पु० किरीट, ताज, राजाओं के शिरका गहना।

सं० मकुर, मुकुर–(मकि=शोभना) पु० दर्पण, कांच, आईना, आरसी, शीसा।

सं० मकुल, मुकुल–(मकि=जाना) स्त्री० फूलकीकली, कोंपल।

प्रा० मकोड़ा–पु० कीड़ा।

सं० मक्षिका, मक्षीका–(मक्ष्=क्रोधकरना) स्त्री०मक्खी, माखी।

प्रा० मक्खन, माखन—(सं० मन्थज, मन्थ=मन्थना, और जन=पैदा होना, जो मथनेसे निकलता है) पु० माखन, नैनू, नवनीत, हयङ्गवीन।

प्रा० मक्खी, माखी—(सं० मक्षिका) स्त्री० एक तरह का उड़ने वाला कीड़ा, माछी।

प्रा० मक्खीउड़ाना-बोल० किसी की खुशामद या गुलामी करना।

प्रा० मक्खीचूस-बोल० कंजूस, सूम, कृपण।

प्रा० मक्खीमारना—बोल० सुस्त बैठा रहना, बेकार बैठा रहना।

सं० मख—(मख्=जाना) पु० यज्ञ।

प्रा० मग—(सं० मार्ग) पु० रस्ता, बाट, पैंड, डगर, मग देखना, बोल० बाट जोहना, राह निहारना।

सं० मगध—पु० सूबे बिहार का दक्खिनभाग।

प्रा० मगन—(सं० मग्न) गु० डूबा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित।

प्रा० मगर—(सं० मकर) पु० मगरमच्छ।

प्रा० मगरा—(अ० मग़रूर) गु० ढीठ, घमंडी, गुस्ताख।

प्रा० मगराई—स्त्री० ढिठाई, गुस्ताखी, घमण्ड, धृष्टता। [घमण्ड।

प्रा० मगरापन—भा० पु० मगराई,

प्रा० मगह—(मगध) पु० सूबे बिहारका दक्खिनभाग जिसमें गया आदि शहर हैं।

प्रा० मगही—(सं० मागधीय) गु० मगहका (जैसे पान आदि)

प्रा० मगहैया-(सं० मागधीय) गु० मगध देश का वासी, २ब्राह्मणों की एक जाति।

सं० मग्न—(मस्जू=डूबना, वा शुद्ध करना) कृ० डूबा हुआ, २ प्रसन्न, आनन्दित, हर्षित, खुश।

सं० मघवा, मघवान्—(मह=पूजना) पु० इन्द्र, देवताओं का राजा, सुरपति।

सं० मघा—(मह=पूजना) स्त्री० दशवां नक्षत्र।

सं० मङ्गल—(मगि=जाना) पु० कुशल, कल्याण, आनन्द, २ तीसरा ग्रह, ३ मंगलवार, भौमवार, गु० शुभ, अच्छा, आनन्द देनेवाला।

सं० मङ्गलवार—(मङ्गल+वार) पु० मङ्गलका दिन, भौमवार।

सं० मङ्गलसमाचार—(मङ्गल+समाचार) पु० अच्छा समाचार, सुसमाचार, शुभसमाचार।

सं० मङ्गलाचरण—(मङ्गल+आचरण) पु० देवताओंको नमस्कार, बन्दना।

सं० मङ्गलाचार-(मङ्गल+आचार) पु० बधावा, ब्याह आदि अच्छे काम में आनन्द के गीत।

सं० मङ्गलामुखी-(मङ्गल+मुख, अर्थात् जिसके मुँहमें मङ्गल है) गु० गवैया, ब्याहआदि अच्छे कामों में गानेवाली।

प्रा० मङ्गली-(मंगल) गु० मंगल करनेवाला, मंगलामुखी, २ जिसके जन्म चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश स्थानमें मंगल ग्रह पड़ाहो।

प्रा० मचना-क्रि० अ० होना, रचना, उठना, किया जाना।

प्रा० मचलना-क्रि० अ० झगड़ाहोना, हठकरना, जिदकरना।

प्रा० मचला-गु० झगरा, ढीठ, हठीला, जिद्दी, हठी। [ठाई, हठ।

प्रा० मचलाई-स्त्री० झगराई, ढि-

प्रा० मचलाना-क्रि० अ० मतलाना, कै किया चाहना, कै करने को जी चाहना, २ बहाना करना।

प्रा० मचान-(सं० मञ्च) पु० मांच, टांड, खेतों में बांसों से बनाई हुई ऊंची बैठक जिसपर एक आदमी खेतकी रखवाली करने के लिये बैठता है।

प्रा० मचाना-क्रि० स० करना, रचाना, उठाना, बनाना।

प्रा० मचिया-(सं० मञ्च) स्त्री० पीढ़ी, चौकी, कुरसी।

प्रा० मच्छ-(सं० मत्स्य) पु० बड़ी मछली, २ विष्णुका पहला अवतार।

प्रा० मच्छर-(सं० मशक) पु० माछर, कुटकी।

प्रा० मछली-(सं० मत्स्यी) स्त्री० पानीके एक जानवर का नाम।

प्रा० मछवा, मछुवा-(मत्स्य) पु० मछली पकड़नेवाला, धीमर, कहार।

प्रा० मजीठ-(सं० मञ्जिष्ठा) पु० एक लाल चीज जो रंगने के काम में आतीहै।

सं० मज्जन-(मस्ज्=न्हाना) पु० न्हाना, स्नान। [वाला।

सं० मज्जक-क० पु० स्नान करने-

सं० मज्जा-(मस्ज्=न्हाना) स्त्री० हड्डी के भीतर का गूदा, चर्बी।

प्रा० मझला-(सं० मध्य) गु० बिचला, मध्यम, वस्तु का।

प्रा० मझार-(सं० मध्य) पु० बीच, मध्य, बीच में।

प्रा० मझारी-गु० स्त्री० भीतरी, बीच की, मध्यकी।

सं० मञ्च-(मचि=ऊंचाकरना) पु० मांच, मचान, खेतों में बांसोंसे बनाई हुई ऊंची बैठक जिस पर एक आदमी खेत की रखवाली करनें के

लिये बैठता है, २ पलंग, खाट, खटिया, मांचा ।

सं० मञ्जन–(मञ्ज=साफ होना) पु० दांत धोनेका चूरण, मिस्सी ।

सं० मञ्जरी–(मञ्ज=साफ होना, वा शुद्धहोना) स्त्री० कली, कोंपल, तुलसी पुष्प, अँखुआ ।

प्रा० मञ्जार–(सं० मार्जार) पु० बिलाव, बिल्ला ।

सं० मञ्जीर–(मञ्ज=शब्दकरना) पु० नूपुर, पांवका गहना, २ मंजीरा, क्षुद्रघण्टिका, छोटीघंटी, घुंघुरू, पायजेब ।

सं० मञ्जु } मञ्जुल } (मञ्ज=शुद्ध अथवा सुन्दरहोना) गु० मनोहर, सुन्दर, मधुर, मनभाना, मनचाहा ।

सं० मञ्जूषा–(मञ्ज=सुन्दर होना) स्त्री० पिटारा, पिटारी, कपड़े रखने की सन्दूक, बक्स ।

प्रा० मटक } मटकन } (मटकना) भा० स्त्री० चोंचला, नखरा, हावभाव, झांवली ।

प्रा० मटकना–क्रि० अ० पलक मारना, झपकना, २ आंखें लड़ाना, आंख मारना, तिरछी चितवन से देखना, अठलाना, इतराना, भाव बताना, झांकना, ताकना ।

प्रा० मटका–(मिट्टी) पु० गगरा, बड़ा घड़ा ।

प्रा० मटकी–(मिट्टी) स्त्री० गगरी, २ मटकी ।

प्रा० मटर–पु० एक अनाजका नाम ।

प्रा० मटियाना–क्रि० अ० टालदेना, २ आंख झपकाना, ३ सहना ।

प्रा० मट्टी } मिट्टी } (सं० मृत्तिका) स्त्री० माटी, रेत, धूल ।

प्रा० मट्टीकरना–बोल० नाशकरना बरबाद करना, सत्यानाश करना ।

प्रा० मट्टीखाना–बोल० मांसखाना ।

प्रा० मट्टीडालना–बोल० दूसरे का दोष छिपाना, ऐबपोशी करना ।

प्रा० मट्टीदेना–बोल० गाड़ना, मुर्दे को दफ़न करना ।

प्रा० मट्टीपरलड़ना–बोल० धरती के लिये झगड़ना ।

प्रा० मट्टीमेंमिलना–बोल० सत्यानाश होजाना, नष्ट होना, खराब होना, बरबादहोना, २ बेइज्जतहोना ।

प्रा० मट्टीहोना–बोल० दुबलाहोना, निर्बल होना, २ सत्यानाश होना ।

प्रा० मट्ठा–(सं० मन्थित, मन्थ्=मथना) पु० छाछ, मही ।

सं० मठ–(मठ्=बसना) धि० पु० गुसाइयों के रहनेका घर, २ विद्यार्थियों के पढ़नेकी जगह, पाठशाला देवागार ।

प्रा० मठरी / मठली } (मिष्ट) स्त्री० एक तरह का मीठा पकवान ।

प्रा० मड़ोड़ / मरोड़ } (मड़ोड़ना) स्त्री० ऐंठ, बल, पेंच ।

प्रा० मड़ोड़ना / मरोड़ना } क्रि० स० ऐंठना पेंचदेना, बलदेना ।

प्रा० मढ़ा--(सं० मण्डप) पु० उस जगह का नाम जिसको ब्याह में फूलों आदि से संवारते हैं और जहां शास्त्र के अनुसार ब्याह का काम होता है ।

प्रा० मढ़ी / मढ़ैया / मंढी } (सं० मठ) स्त्री० झोपड़ी, कुटी ।

सं० मणि--(मण्=आवाज निकलना) स्त्री० हीरा पन्ना आदि रत्न, बहुत मोलका पत्थर ।

प्रा० मणियारा--क० पु० मणि युक्त मणिवाला ।

सं० मण्डन--(मडि=शोभना) भा० पु० गहना, जेवर, अलङ्कार भूषण, शोभा ।

सं० मण्ड--पु० मांड, पीच, पिच्छ, फालूदा, २कलार, कलवार, मदिरा ।

सं० मण्डप--(मण्ड=शोभा, पा=बचाना) पु० एक खुला हुआ मकान जिसको ब्याह अथवा और किसी उत्सव में फूलों से संवारते हैं और जहां ब्याह का काम होता है, २ मन्दिर, देवालय ।

सं० मण्डल--(मडि=शोभना) पु० गोल जगह, चक्र, गोला, ३ चांद वा सूर्यका घेरा, ३ गोलतंबू, ४ देश, जिला, सूबा जो बीस अथवा चालीस योजन तक हर ओर फैलाव में हो,--जैसे व्रजमण्डल, कारोमण्डल आदि ।

सं० मण्डलाकार--(मण्डल+आकार) गु० गोल, गोलाकार चक्राकार ।

सं० मण्डलाधिप--(मण्डल+अधिप) पु० चार सौ योजन का मालिक, कलक्टर, डिप्टी कमिश्नर छोटा राजा ।

सं० मण्डलाना--(मण्डल) क्रि० अ० घिरआना, घूमना, फिरना ।

सं० मण्डली--(मडि=शोभना) स्त्री० सभा, समाज, गिरोह ।

सं० मण्डलीक--क० पु० दशलाख रुपये की आमदनी वाला ।

प्रा० मण्डा--पु० एकपेड़े जैसी मिठाई ।

सं० मण्डित--(मडि=शोभना) कर्म० शोभायमान, शोभित, भूषित ।

प्रा० मण्डी--स्त्री० बाजार जहां अनाज और घी आदि बिके ।

सं० मण्डूक-(मडि=शोभा देना, (वर्षा ऋतु को) पु० मेंढक, बेंग।

सं० मत-(मन्=जानना) पु० सलाह, सम्मति, २ अभिप्राय, चाह, ३ धर्म, मज़हब, प्रतीत, विश्वास, ४ ज्ञान, सीरा, तरीक़ा, र्म्म० पु० जानाहुआ, २ मानाहुआ, ३ पूजा हुआ, पूज्य।

प्रा० मत-(सं० मा) क्रि० अ०न, नहीं, नकरो, निषेधवाचक।

सं० मतंग-(मद=मस्त होना) पु० हाथी, गज, २ मेघ, बादल, ३ एक ऋषि का नाम।

सं० मतमतान्तर-गु० दूसरा धर्म, दूसरा मज़हब, दूसरी राह।

प्रा० मतवाला-(सं० मत्तवत्) गु० मस्त, मदमाता, उन्मत्त।

सं० मतविरुद्ध-गु० मज़हब के खिलाफ़, धर्मविरोधी।

प्रा० मता, मतौ (सं० मत) पु० सलाह, विचार, सम्मति।

सं० मतावलम्बी-(मत=धर्म्म, वा सम्मति, अवलम्बी=रखनेवाला) क० पु० किसी धर्म को मानने वाला, पंथी, किसी के सलाह पर चलने वाला।

सं० मति-(मन्=जानना) स्त्री० बुद्धि, समझ, ज्ञान, २ इच्छा, चाह, ३ स्मृति, यादकरने की शक्ति।

सं० मतिभ्रम-(मति+भ्रम) पु० भूल, चूक, उलटी समझ, विपरीतबुद्धि।

सं० मतिमन्द-गु० मन्दबुद्धि, कमअक़्ल, कुन्दज़ेहन।

सं० मतिधीर-गु० दृढबुद्धि।

सं० मतिमान्-(मति=समझ, मत्, वाला) गु० बुद्धिमान्, समझदार चतुर, प्रवीण।

सं० मतिहीन-(मति+हीन) गु० बेसमझ, मूर्ख, बुद्धिहीन, निर्बुद्धि।

सं० मत्त-(मद्=मस्त होना) गु० मतवाला, मस्त, उन्मत्त, घमंडी।

सं० मत्सर-(मद्=घमंडकरना, वा मस्त होना) पु० डाह, द्वेष, जलन, हसद, ईर्षा, परसन्ताप।

सं० मत्स्य-(मद्=खुशी करना, वा मस्त होना,) पु० मछली, मच्छ २ विष्णु का पहला अवतार, ३ हिंदुस्थान का एक भाग-जिसको अब, दिनाज पुर और रंगपुर कहते हैं, ४ एक पुराण का नाम।

सं० मत्स्यगन्धा-स्त्री० मच्छोदरी, व्यास की माता।

सं० मथन-(मथ्=मथना) पु० महना, मंथना, बिलोवन।

प्रा० मथना-(सं० मंथन) क्रि० स० महना, बिलोना, बिलोड़ना

प्रा० मथनिया, मथनी (सं० मन्थान, वा मन्थी, मथ्=मथना) स्त्री० दूधमथने

की लकड़ी, मथानी, महानी ।

सं० मथित-कर्म० पु० मथागया ।

सं० मथुरा-(मथ्=मारना, या कुचलना जहां बहुत से राक्षस कुचले और मारे गये हैं) स्त्री० एक नगरी का नाम जो श्रीकृष्ण की जन्मभूमि और हिंदुओं के तीर्थ की जगह है ।

प्रा० मथुरिया-(सं० माथुरीय) पु० मथुरा के ब्राह्मणों की एकजाति ।

सं० मद-(मद्=प्रसन्न होना, वा मस्त होना, वा घमंड करना) पु० आनन्द, हर्ष, खुशी, २ हाथी की कनपटियों अथवा गालों से चूता हुआ पानी, ३ मदिरा, दारू, मद्य, शराब, ४ घमंड, गर्व, अहंकार, ५ मतवालापन, नशा, मस्ती, ६ वीर्य, ७ कस्तूरी ।

सं० मदक-क० पु० अफ़ीम के संयोग से बना हुआ नशा, नशा करनेवाली चीज़ ।

सं० मदन-(मद्=प्रसन्न होना वा मस्तहोना) पु० कामदेव ।

सं० मदनबाण-(मदन+बाण) पु० एक फूल का नाम ।

प्रा० मदमाता-(सं० मदमत्त) गु० मतवाला, मस्त ।

प्रा० मदार-(सं० मन्दार) पु० अकवन, अर्क ।

सं० मदिर-पु० लालखदिर ।

सं० मदिरा-(मद्=प्रसन्न होना, अथवा मस्त होना) ग० स्त्री० मद, मद्य, दारू, शराब, आसव, अर्क ।

सं० मदोत्कट-पु० मत्तगज ।

सं० मदोद्धत-गु० मतवाला ।

सं० मदोन्मत्त-(मद्=घमंड, उन्मत्त=मस्त) गु० घमंड से मस्त, मतवाला, मदमाता ।

सं० मद्य-(मद्=प्रसन्नहोना, वा मस्तहोना) ग० पु० दारू, शराब, मदिरा, मद ।

सं० मद्यप-(मद्य+प, पा=पीना) क० पु० सुरापायी, शराबी ।

सं० मधु-(मन्=पूजना, वा मद्=प्रसन्न होना) पु० शहद, फूलों का रस, २ मद, मदिरा, शराब, ३ वसन्तऋतु, ४ चैत का महीना, ५ एक राक्षसका नाम जिसको महामायाकी सहायता से विष्णुने मारा, ६ दूध, ७ पानी ८ मीठा रस, ९ महुआ, १० मिठास गु० मीठा ।

सं० मधुकर-(मधु=शहद, कृ० करना) पु० भँवरा, भौंरा, भ्रमर ।

सं० मधुप-(मधु=फूलों का रस, पा=पीना) पु० भौंरा, भँवरा, मधुकर ।

सं० मधुपर्क-(मधु=शहद, पृच्=मिलाना) पु० दही, घी, और शहद मिली हुई चीज़ अथवा आज्यमेक-

पलंग्राह्यं दधित्रिपलमेवच, मधुना पलमेकन्तु मधुपर्कस्सउच्यते । घी टकाभर, दही तीनटकाभर, शहद टकाभर इसको मधुपर्क कहते हैं ।

सं०मधुपुरी—(मधु=एक राक्षसका नाम, पुरी=नगरी) स्त्री० मथुरा

सं०मधुवन—(मधु=एक राक्षस, वा मधु=मीठा, वन=जंगल)पु० मथुरा के पासका बन, २ सुग्रीव के बाग का नाम ।

प्रा०मधुमक्खी } **मधुमाखी** } (सं०मधुमक्षिका) स्त्री० शहद की मक्खी ।

[चैतका महीना ।

सं०मधुमास—(मधु+मास) पु०

सं०मधुर-(मधु=मिठास, रा=लेना) गु० मीठा, २ मनमाना. मनचहीता, प्यारा,

[मिठास ।

प्रा० मधुरता—(मधु) भा० स्त्री०

प्रा०मधुरी—(मधुर) गु० स्त्री० मीठी, रसीली, सुहानी ।

सं०मधुलिह्—(मधु=शहद, लिह्=चाटना) पु० भ्रमर, भौंरा ।

सं०मधुव्रत—पु० भ्रमर ।

सं०मधुसूदन—(मधु=एक राक्षस का नाम, सूदन मारनेवाला सूद्=मारना) पु० विष्णु, भगवान् ।

सं०मध्य—(मन=जानना, वा मा=शोभा, धा=रखना) पु० बीच, १ नित्य सं० २ बीचमें,में, मांझ, भीतर, अन्दर, दर्मियान ।

सं०मध्यदिवस—पु० दोपहर ।

सं०मध्यदेश—पु०मुल्कमुतवस्सित, स्यएटल् प्राविंश ।

सं०मध्यम—(मध्य) गु० बिचला, बीचका,२अच्छा न बुरा,उदासीन ।

सं०मध्यमलोक } **मध्यलोक** } (मध्य+लोक) पु० बीच का लोक, पृथ्वी, मनुष्यलोक, मर्त्य लोक, यह दुनिया ।

सं०मध्यम—(मध्यम) स्त्री० बीच की अंगुली, २ गु० बीच की ।

सं०मध्यवर्त्ती—मध्य=बीचमें, वर्त्ती=होनेवाला वा रहनेवाला, वृत्=होना) क० पु० बिचवैया, मध्य वर्त्ती, साक्षी ।

सं०मध्यस्थ—(मध्य=बीच में, स्था=ठहरना) क०पु०बिचवैया, मध्य वर्त्ती, साक्षी ।

सं०मध्याह्न—(मध्य=बीच, अहन्=दिन) पु० दोपहर, दिनकाबीच ।

सं०मन(मनस,मन=जानना) पु० चित्त, हृदय, हिरदा, आत्मा,दिल।

प्रा०मनचोर—बोल०मनको लुभाने वाला,जिसमेंमनलगजायदिलगीर ।

प्रा०मनभाना—बोल० मनको अच्छा लगना, सुहाना लगना ।

प्रा०मनभानामुंड़िया हिलाना—बोल० जिस चीज को मन चाहे उसको नहींचाहनेकाबहानाकरना ।

प्रा०मनभावन } **मनभावना** } बोल० मनोहर, सुहावना, दि-

लचरप, दिलगीर ।

प्रा०मनमानता } बोल०सुहावना,
मनमाना } जो मनको अ-
च्छालगे, मनचाहा, दिलख़्वाह ।

प्रा०मनमाररहना-बोल०सन्तोषके साथ दुःखको सहलेना ।[रोकना।

प्रा०मनमारना-बोल०अपनीचाहको

प्रा०मनलाना-बोल० मन लगाना, ध्यान देना, गौर करना ।

प्रा०मन-पु० चालीस सेर ।

प्रा०मनका-(सं०मणि) पु० माला का दाना, २ गरदनकी हड्डी ।

प्रा०मनकाढलकना-बोल० मरने परहोना, मराचाहना, अवतबहोना ।

प्रा०मनकामाना-(सं० मनोकाम ना) स्त्री० मन की इच्छा, मनका मनोरथ, दिलीख़्वाहिश ।

प्रा०मनघटा-पु० कुंए के आसपास का चबूतरा ।

सं०मनन-(मन्=जानना) भा० पु० चिन्तन, सुमिरन, ध्यान, ज्ञान,अ-भ्यास, विचार ।

प्रा०मनमोहन (मन+मोहन) पु० श्रीकृष्ण, गु० मनभावन, मनोहर ।

सं०मननशक्ति-स्त्री० विचारशक्ति, गौरकरने की ताक़त ।

प्रा०मनसा-(सं०मानस) स्त्री० मन, चाह, इच्छा, विचार, मतलब।

सं०मनसिज-(मनसि=मन में, जन् =पैदा होना पु० कामदेव, गु० मनका, मनसे जो पैदा हो ।

सं०मनस्विन्-गु० वीर, मनमौजी यथेच्छाचारी, प्रशस्त ।

प्रा०मनहु } (सं० मन्य) क्रि०
मनहू } वि० मानों जानों
मानहु } जैसे ।

सं०मनाक्-अव्य० ईषत्, स्वल्प, किञ्चित्, सूक्ष्म, बारीक, मन्द ।

प्रा०मनि } (सं०मणि) स्त्री० रतन
मन } जवाहिर, बहुत मोलका पत्थर ।

सं० मनीषा-स्त्री० बुद्धि, अक्ल ।

सं०मनीषिन्-पु० पण्डित, बुद्धिमान्।

प्रा०मनिहार-(सं० मणिकार) पु० चूड़ी बेचनेवाला, बिसाती ।

सं० मनु-(मन्=जानना) पु० ब्रह्मा का बेटा, मनुष्यों का पुरुषा, मनु-स्मृतिका बनानेवाला,—(स्वयम्भू आदि चौदह मनु हैं)

सं०मनुज-(मनु,जन्=पैदाहोना)पु० मनु का वंश, मनुष्य, आदमी ।

सं० मनुजाद-(मनुज=मनुष्य, अद् =खाना) पु० राक्षस, दैत्य ।

सं० मनुष्य-(मनु) पु० मनु के बेटे, पोते, आदमी, मनुज ।

सं०मनुष्यगणना-स्त्री०मर्दुमशुमारी।

सं० मनुष्यता-स्त्री० इन्सानियत, आदमियत ।

प्रा० मनुसाई (सं०मनुष्यता) स्त्री० पुरुषार्थ, मनुष्यपन, जमामर्दी ।

प्रा० मनुहार–(सं०मनोहारि, मनस्=मन, हृ=लेना) गु० सुन्दर, मनोहर, मन हरनेवाली, २ स्त्री० आदरमान, मीठा बोलना ।

सं० मनोज–(मनस्=मन, जन्=पैदा होना) पु० कामदेव गु० मन से जो पैदा हो ।

सं० मनोजव–(मनस्+जव) गु० मनके समान जिसका वेग हो अतिवेगवान्, तेज़रौ ।

सं० मनोज्ञ–(मनस्=मन, ज्ञा=जानना) गु० सुन्दर, मनोहर, सुडौल ।

सं०मनोभव, मनोभू (मनस्=मन, भू=पैदा होना) क०पु०कामदेव; मनोभूत गु०जोमनसे पैदाहो ।

सं० मनोभिलाषित (मनः+अभिलाषित) र्म्म० पु० मनोवांछित, मनचाहा, इस्तदिलख़्वाह ।

सं० मनोरथ (मनस्+रथ, अर्थात् मन का रथ) पु० चाह, इच्छा, अभिलाष, कामना ।

सं० मनोरम (मनस्=मन, रम्=प्रसन्न करना) गु० मनोहर, सुन्दर ।

सं० मनोहत-गु०व्यग्रचित्त, व्याकुल।

सं०मनोहर-(मनस्=मन, हृ=लेना)गु० मनको लेलेनेवाला, सुन्दर, सुहाना ।

सं० मन्तव्य (मन्+तव्य, मन्=विचारना) र्म्म० पु० माननीय, चिन्तनीय, सलाह, राय ।

सं० मन्ता–क० पु० मन्त्री ।

सं० मन्त्र–(मत्रि=एकान्तमें कहना, वा सलाह करना) पु० वेद का एक भाग जिसमें देवताओं की स्तुति है, २ मंत्र यंत्र, जादू टोना-लटका, ३ सलाह, छिपी बात, सम्मति, उपदेश ।

सं०मन्त्रण-भा०पु०सम्मति, विचार ।

सं० मन्त्रणा–भा० स्त्री० परामर्श-विचार, युक्ति, सलाह, सम्मति ।

सं० मन्त्रज्ञ–पु० तांत्रिक, मन्त्र जाननेवाला, नीतिज्ञ, जासूस, दूत ।

सं०मन्त्रवित्–(मन्त्र+विद्=जानना) पु० तांत्रिक, मंत्रज्ञ, नीतिज्ञ ।

सं० मन्त्रित–र्म्म० पु० मन्त्र से शुद्ध कियागया, संस्कार किया गया ।

सं० मन्त्री–(मन्त्र) पु०प्रधान, उपदेशक, सचिव, सलाहकार, वज़ीर ।

सं० मन्थन–(मन्थ्=बिलोना) भा० पु० मथन, बिलोवन, बिलोड़न ।

सं० मन्थनी–स्त्री० मथानी ।

सं० मन्द–(मदि=आलसी होना, वा अचेत होना, वा सोना) गु० सुस्त, आलसी, धीमा, धीरा, मूढ, मूर्ख, ३ निकम्मा, नीच, बुरा, ४ अभागा,

अभागी, ५ नीचा, ६ थोड़ा, कम, ७ पतला, पु० शनैश्चर, क्रि० वि० धीरे धीरे, मन्द मन्द, बोल० धीरे धीरे।

सं० मन्दगति–(मन्द=धीमी, गति=चाल) स्त्री० धीमी चाल, गु० धीरे चलनेवाला।

सं० मन्दबुद्धि } मन्दमति } (मन्द=सुस्त, वा कमबुद्धि वा मति=अक्ल) गु० मूर्ख, अज्ञानी, अनाड़ी, अल्पबुद्धि, बुद्धिहीन।

सं० मन्दभाग्य–(मन्द=सुस्त, वा कम भाग्य=भाग) गु० अभागा, कमबख़्त।

सं० मन्दर–(मदि=सराहना, वा प्रसन्न होना) पु० एक पहाड़ का नाम जिससे देवता और राक्षसों ने समुद्र मथा था, २ स्वर्ग का पेड़ परिजात, ३ स्वर्ग, गु० भारी, मोटा।

प्रा० मन्दा–(सं० मन्द) गु० धीमा, धीरा, कोमल, ठंढा, २ सस्ता।

सं० मन्दाकिनी (मन्द=धीरे, अक्=जाना) स्त्री० स्वर्ग की गंगा।

सं० मन्दादर (मन्द+आदर) गु० निरादर, कमक़दर।

सं० मन्दार–(मदि=सराहना) पु० स्वर्ग का एक पेड़, कल्पवृक्ष।

सं० मन्दिर (मदि=सराहना, वा सोना, जिसमें) पु० घर, २ देवालय, देवस्थान, देहरा।

सं० मन्दोदरी–(मन्द=पतला, उदर=पेट, जिसका पेट पतला हो) स्त्री० मयतनया, रावण की स्त्री।

सं० मन्मथ–(मन्=ज्ञान, मथ्=बिगाड़ना, नाश करना या डुलाना) पु० कामदेव। [पु० महादेव।

सं० मन्मथारि–(मन्मथ+अरि)

सं० मन्यु–पु० शिव, यज्ञ, क्रोध, शोक, दीनता, अहङ्कार,

सं० मन्वन्तर–पु० इकहत्तर चौयुगी का वा (३११४४८०००) वर्षका, चौदहमनु हैं उनमेंसेएकका अधिकार।

सं० मम–(अस्मद्) सर्वना० मेरा।

सं० ममता–(मम) भा० स्त्री० मोह, माया, प्रेम, प्यार, स्नेह, २ अभिमान, घमण्ड, मेरापन, मेरा जानना।

सं० मय–(मय्=जाना) यह शब्द दूसरे के साथ आता है तब इसका अर्थ मिलाहुआ, या बना हुआ, होता है जैसे मणिमय=मणियों से बनाहुआ।

सं० मय–(मय्=जाना) पु० एक राक्षस का नाम, ऊंट, खच्चर।

प्रा० मयंक–(सं० मृगाङ्क) पु० चांद।

सं० मयतनया–(मय=एक राक्षस का नाम, तनया=बेटी) स्त्री० मन्दोदरी, रावण की स्त्री।

प्रा० मयत्री (सं० मैत्री) भा० स्त्री० मित्राई, मिताई, प्रीति, प्यार, दोस्ती।

प्रा० मयन (सं० मदन) पु० काम-

देव, मत्रकिलशहवत ।

सं० मयूख—(मा=नापना, वा मयू=जाना) पु० किरण, तेज, शोभा, शिखा, चोटी ।

सं० मयूर-(मी=मारना,जो सांप आदि जानवरों को मारता है) पु० मोर, एक पखेरू का नाम ।

सं० मरक—(मृ=मरना) पु० मरी, सब में फैलनेवाला रोग ।

सं० मरकत—(मृ=नाश होना, जिस से अँधेरा नष्ट होजाता है) पु० पन्ना, हरीमणि, ज़मुर्रद ।

प्रा० मरखपना—बोल० मर जाना, मर मिटना ।

प्रा० मरघट-(सं० मरघट्ट, मर=मरना, घट्ट=घाट) पु० मसान, वह जगह जहां मुर्दा जलाया जाताहै ।

सं० मरण—(मृ=मरना) भा० पु० मरना, मौत, नाश, विनाश ।

प्रा० मरना-(सं० मरण) क्रि० अ० जी निकलना, प्राण छूटना, २ किसी चीज को बहुत चाहना ।

प्रा० मरपचना- बोल० बहुत दुख सहना, बहुत मिहनत करना ।

सं० मरणप्राय—गु० संनिकटमृत्यु, क़रीबुल्मर्ग ।

प्रा० मरम—(सं० मर्म) पु० भेद, छिपी बात, अभिप्राय, सार बात, २ हृदय आदि अङ्ग ।

सं० मराल-(मृ=मारना) पु० हंस, राजहंस, २ मेघ, गु० साफ़, स्वच्छ ।

प्रा० मरी—(सं० मारी, मृ=मरना वा मारना) पु० महामारी, मारने वाला रोग हैजा व ताऊन ।

सं० मरीचि—(मृ=नाश करना, अंधेरेको या अज्ञान को) पु० सप्त ऋषियों में का एक ऋषि, ब्रह्मा का बेटा, स्त्री० किरण ।

सं०मरीचिमाला-स्त्री०किरणसमूह ।

सं० मरीचिमाली—पु० सूर्य ।

सं० मरु—(मृ=मरना,जहां पानी बिन लोग मरते हैं) पु० निर्जलदेश,मरुस्थल,मारवाड़, २ बिन पानी का जङ्गल ।

सं० मरुत—(मृ=मरना, जिन को इन्द्र ने दिति के गर्भ में मार कर उनचास टुकड़े किये थे उनके नाम यह हैं १ एकज्योति २ द्विज्योति ३ त्रिज्योति ४ ज्योति ५ एक शक्र ६ द्विशक्र ७ त्रिशक्र ८ इन्द्र ९ गतहश्य १० ततः ११ पतिसकृत् १२ पर १३ मित १४ सम्मित १५ सुमति १६ ऋतजित् १७ सत्यजित् १८ सुषेण १९ सेनजित् २० अन्तिमित्र २१ अनमित्र २२ पुरुमित्र २३ अपराजित २४ ऋत २५ ऋतवाह २६ धर्ता २७ धरुण २८ ध्रुव २९ विधारण ३० देवदेव ३१ ईदृत्त ३२ अदृत्त ३३ व्रतिन ३४ असदृत्त ३५ समर ३६ धाता ३७ दुर्ग ३८ धिति ३९ भीम

४० अभियुक्त ४१ अर्थात् ४२ सह ४३ द्युति ४४ वपु ४५ अनाध्य ४६ अथवास ४७ काम ४८ जय ४९ विराट्। इसकी कथा श्रीमद्भागवत में इस तरह से लिखी है कि एक बार दैत्योंकी मा दिति इस विचार से अपने पति कश्यपजी के बतलाने से अगहन का व्रत करने लगी कि मेरे ऐसा बेटाहो कि इन्द्रको मार डाले इन्द्रको इस बात के सुनने से बड़ा डर हुआ। तब इन्द्र ब्राह्मण का रूप बन कर दिति की टहल करने लगा। एक दिन दिति शिर का बाल खुला छोड़ कर जूठे मुँह सो गई। ये दोनों बातें व्रतमें अशुद्ध होनेसे इन्द्र अपना छोटा रूप बना के वज्र लिये दिति के पेट में घुस गया और वहां जाकर गर्भ में जो बालक था उसके सात टुकड़े कर डाले। तब वे सातों रोनेलगे। फिर इन्द्र ने एक एक के सातसात टुकड़े किये। पर परमेश्वर की इच्छा से और दिति के व्रत के प्रताप से कोई नहीं मरा। उन सातों के उनचास बालक होकर रो कर के बोले कि इन्द्र अब हम को मत मारो। हम तुम्हारी सहायता करेंगे यह दशा देख कर इन्द्र उन लड़कों से बोला कि अब तुम मत रोओ। मरुत् नाम होकर मेरे साथ रहो फिर इन्द्र उन उनचासों बालकों समेत गर्भ की राह बाहर निकल आया। इस लिये, मरुत्नाम पड़ा) पु० हवा, पवन, वायुदेवता।

सं० मरुस्थल—(मरु + स्थल) पु० निर्जल देश, मारवाड़, मरुभूमि, रेगिस्तान।

सं० मर्कट-(मर्क्=जाना) पु० बानर, बन्दर।

सं० मर्कटी—स्त्री० बानरी, २ अपामार्ग, लटजीरा।

सं० मर्त }
मर्त्य } (मृ=मरना) म्मं० पु० मनुष्य, आदमी।

सं० मर्त्यलोक- (मर्त्य + लोक) पु० पृथ्वी, मनुष्यलोक, यह संसार।

सं० मर्दक—(मर्द् + अक) क० पु० भेषक, लोढ़ा, शिल का बट्टा।

सं० मर्द्दन—(मृद्=चूर चूर करना) भा० पु० मलना, रगड़ना, चूर करना, नाश करना।

सं० मर्द्दित—म्मं० पु० चूर्णित।

प्रा० मर्दनियां—(सं० मर्द्दनीया) पु० नौकर जो शरीर का मैल उतारने के लिये तेल आदि मलते हैं।

सं० मर्म्म—(मृ=मरना) पु० भेद, छिपी बात, मतलब, २ शरीर के जोड़, शरीरके वे अंग जिनके टूटने

से आदमी जी नहीं सक्ता।

सं० मर्म्मी—क० पु० भेदी, भेद जाननेवाला, राज़दां।

सं०मर्म्मज्ञ—(मर्म्म=भेद,ज्ञ=जानना) पु० भेद जाननेवाला, बुद्धिमान्।

सं०मर्यादा—(मर्या=सीमा,आ+दा=लेना,वा रखना) स्त्री० मान,पत, प्रतिष्ठा,इज़्ज़त, २ सींव, सीमा, हद्द।

सं० मर्श, मर्शन—(मृश्=छूना, ध्यान करना) भा० पु० स्मरण, विचार, सम्मति, निश्चय।

सं० मर्ष, मर्षण—(मृष्=सहना, क्षमाकरना) पु० तितिक्षा, सहना, क्षान्ति, बर्दाश्त।

सं० मल—(मृज्=शुद्ध करना) पु० मैल, तलछट, गाद, २ गूह, ३ पाप गु० मैला।

सं० मलग्राही, मलापकर्षी—क० पु० भंगी, खाकरोब।

प्रा० मलना—(सं० मर्द्दन) क्रि० स० रगड़ना, मसलना, मांजना, घिसना।

प्रा० मलमल—स्त्री० एक तरह का [कपड़ा।

प्रा० मलमास—पु० अधिक महीना, लौंद का महीना।

प्रा० मलमेटकरना—बोल० नष्ट [करना।

सं० मलराशि—स्त्री० पापकीराशि।

सं० मलय, मलयगिरि—(मल्=रखना) पु० एक पहाड़ जो दक्षिण में है और जहां बहुत अच्छा चन्दन होता है।

प्रा०मलयागीरी, मलागीरी—(सं०मलयगिरि) पु०चन्दनकारंग।

प्रा० मलार—(सं० मल्लार) स्त्री० एक रागिणीका नाम जो बरसात में गाई जाती है।

सं० मलिन, प्रा० मलीन—(मल=मैल) गु० मैला, अशुद्ध, अपवित्र, बुरा, २ उदास घबरायाहुआ।

सं० मलिनचित्त—क० पु० कपटी, दग़ाबाज़, बुरे दिलका।

सं० मलिन्द—पु० भ्रमर, भौंरा।

प्रा० मलेछ—(सं०म्लेच्छ) पु०मैली जाति के लोग, जंगली, असभ्य, वे लोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्रको मानते हैं।

सं० मल्ल—(मल्ल्=रखना, वा पकड़ना) पु० बलवान्, पहलवान्, कुश्ती करनेवाला।

सं० मल्लयुद्ध—(मल्ल+युद्ध) पु० कुश्ती, पहलवानों की लड़ाई, भिड़ाभिड़ी, बाहुयुद्ध।

सं० मल्लिका—(मल्ल्=रखना) स्त्री० चमेली।

सं० मशक—(मश्=गूंजना)पु० मच्छर, मच्छड़, मसा, डांस ।

फ़ा० मशक—(मश्क) स्त्री० एक तरह का चमड़ेका थैला जिस में पानी लाया जाता है ।

प्रा० मशहरी (सं० मशक=मच्छर, हरी=दूरकरनेवाली, हृ=दूरकरना) स्त्री० एक कपड़ा जिसको मच्छरों से बचनेके लिये पलंगपर तानते हैं ।

प्रा० मष्ट—स्त्री० चुप, मौन ।

प्रा० मष्टमारना—बोल० चुपरहना, मौन रहना, खामोश रहना ।

प्रा० मसकाना—क्रि० स० चीरना, फाड़ना, दरकाना ।

प्रा० मसलना—(सं० म्रक्षण, म्रक्ष=मलना) क्रि० स० कुचलना, मलना, मींजना ।

प्रा० मसान—(सं० श्मशान) पु० मरघट, श्मशान, मुर्दाघाट ।

सं० मसी—(मस्=बदल जाना वा नापना) स्त्री० स्याही, काली रोशनाई । [दवात ।

सं० मसीपात्र—(मसी + पात्र)पु०

प्रा० मसूड़ा } (मांस)पु०दांतों के
मसोड़ा } ऊपर का मांस ।

सं० मसूर—(मस्=नापना, या बदलना) पु० एक अनाज जिसकी दाल बनती है ।

सं०मसें—स्त्री० ब० व० मोछें निकलने के पहले के बहुत छोटे रवाल ।

प्रा० मसोसना—क्रि० स० मरोड़ना, ऐंठना, २ निचोड़ना, ३ कुढ़ना, कलपना ।

सं० मस्तक— (मस्=बदलना, वा नापना) पु० शिर, माथा, कपाल ।

प्रा० मस्तूल—(पोर्तुगाली भाषाके शब्द Masto या Mastro से) पु० नाव का डंडा जिस पर पाल ताना जाता है ।

प्रा० महंगा—(सं० महार्घ, महा=बड़ा, अर्घ=मोल) गु० बड़े मोल का, बहुत मोल का, बेशक़ीमत ।

प्रा० महंगी—(महंगा) स्त्री० काल अकाल, गरानी, कुसमय, गु० महंगा शब्द का स्त्रीलिंग ।

प्रा० महक—स्त्री० सुगन्ध, सुबास, गन्ध, खुशबू ।

सं०महत्-(मह्=पूजना,या बढ़ना)गु० बड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, माननेयोग्य, पूजने योग्य, स्त्री० बड़ाई, मान, प्रतिष्ठा ।

प्रा० महतारी—(सं०महत्तरा बड़ी) स्त्री० मा, माता ।

प्रा० महतो—(सं० महत्) वह आदमी जो ज़मींदार की तरफ़ से गांव में महसूल उगाहने के लिये नियत कियाजाय, चौधरी, सजावल ।

सं० महत्त्व (महत्) भा०पु० बड़प्पन, बड़ाई

प्रा० महना—(सं०मथन) क्रि० स० मथना, बिलोना ।

सं० महन्त—(महत्) पु० मठधारी, गुसाईं अथवा वैरागियोंका प्रधान ।

प्रा० महर—(सं० महत्तर, बहुत बड़ा) पु० प्रधान । [उठानेवाला ।

प्रा० महरा—पु० कहार, भोई, पालकी

प्रा० महरि } (सं० महिला, मह=
महरी } पूजना) स्त्री० भार्या, स्त्री, पत्नी, लुगाई ।

सं० महर्षि—(महा + ऋषि) पु० परमऋषि, वेदव्यासआदिबड़ेऋषि ।

सं० महा—(महत्, मह्=पूजना वा बढ़ना) गु० बड़ा, उत्तम, श्रेष्ठ बहुत ।

सं० महाकाय—(महा=बड़ा, काया =शरीर) पु० शिव का द्वारपाल, नन्दि, २ हाथी, गु० बड़ामोटा शरीरवाला ।

सं० महाकाल—(महा=बड़ा, काल =काला, वा समय, वा मौत अर्थात् सब को नाश करनेवाला) पु० प्रलयके समय में महादेव का रूप ।

सं०महाकाली—(महाकाल) स्त्री० दुर्गा, देवी । [बड़ा कोढ़ ।

प्रा० महाकोढ़—(सं०महाकुष्ठ) पु०

सं० महाघोर-(महा=बहुत, या बड़ा, घोर=डरावना) गु० बड़ा भयानक, बहुत डरानेवाला, पु० एक नरकका नाम ।

सं० महाजन—(महा + जन) पु० बड़ाआदमी, कोठीवाल, साहूकार ।

प्रा० महाजनी — (महाजन) स्त्री० महाजन का काम, कोठीवाली ।

प्रा० महाजान—(सं० महाज्ञानी) गु० बहुत बुद्धिमान् ।

प्रा० महातम — (सं० माहात्म्य) पु० बड़ाई, प्रतिष्ठा ।

सं० महात्मा- (महा=बड़ा, आत्मा =जीव) गु० महाशय, सज्जन, उत्तम, बुज़ुर्ग, श्रेष्ठ ।

सं० महादेव-(महा=बड़ा, देव=देवता) पु० शिव, महेश ।

सं० महान्—(महत्) पु० महत्तत्त्व, गु० बड़ा, श्रेष्ठ ।

सं० महानस—पु० पाकस्थान, चूल्हा गु० २ अतिप्रसन्न, हर्षद ।

सं० महानुभाव—गु० प्रतापी, २ तजरुबाकार ।

सं० महापातक- (महा + पातक) पु० बड़ापाप जैसे ब्रह्महत्याआदि ।

सं० महापाप-(महा + पाप) पु० बड़ा पाप, महापातक ।

सं० महापुरुष-(महा + पुरुष) पु० बड़ाआदमी, महात्मा, साधु, सज्जन ।

सं० महाप्रभु—(महा + प्रभु) पु० परमेश्वर, २ शिव, ३ महाराजा, ४ पवित्र मनुष्य ।

सं० महाप्रलय—(महा + प्रलय) पु० सृष्टि का नाश जो हर एक

४३२००००००० बरसों पीछे होता है, २ सारी सृष्टि का नाश जो ब्रह्मा के १०० बरसके पीछे होता है, जिस वर्षका हर एक दिन ऊपर लिखेहुए बरसों के बराबर होता है और ब्रह्मा की राति भी इतनेही बरसों की होती है। और इस महाप्रलयमेंऋषि मुनि देवता और ब्रह्मा समेत सातों लोक नष्ट होजाते हैं।

सं० महाप्रसाद—(महा=बड़ा, प्रसाद=भोग या नैवेद्य) पु० देवताका भोग या नैवेद्य, जगन्नाथकाप्रसाद।

सं० महाबली—(महा+बली) गु० बड़ा बलवान्, बड़ा पराक्रमी।

सं० महाभटमानी—क० पु० बड़ा योद्धा माननेवाला।

सं० महाभारत—(महा+भारत) पु० एक बहुत बड़ा इतिहास जो पद्यमें लिखाहुआ है, २ भरतवंशी राजाकौरवों और पांडवों की बड़ी लड़ाई जो कुरुक्षेत्रके मैदानमेंहुईथी।

सं० महाभूत—पु० पंचतत्त्व, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश।

सं० महामाया-(महा+माया) स्त्री० दुर्गा, देवी, शक्ति।

सं० महारथी (महा+रथी) क० जो अकेला ११ सहस्र धनुषधारियों से युद्धकरे, अस्त्रशस्त्र विद्यामें प्रवीणहो।

सं० महाराज—(महा+राजा) पु० बड़ा राजा, राजाधिराज।

सं० महाराजाधिराज—(महाराज+अधिराज) पु० सबसे बड़ाराजा।

प्रा० महारानी—(सं० महाराज्ञी, महा=बड़ी, राज्ञी=रानी) स्त्री० राजा की बड़ी रानी, पाटरानी।

सं० महार्घ—(महा+अर्घ) गु० बड़े मोलका, बहुमूल्य।

सं० महालक्ष्मी—(महा+लक्ष्मी) स्त्री० संपदा, संपत्ति, ऐश्वर्य, २ अठारह भुजा की देवी, लक्ष्मी।

प्रा० महावट—(माघ) स्त्री० माह महीने का मेह।

प्रा० महावत—पु० हाथीवान।

प्रा० महावर—पु० लाखीरंग।

सं० महावीर—(महा+वीर) पु० बड़ा शूरवीर, हनुमान्।

सं० महाशय—(महा+आशय) गु० सज्जन, महात्मा, उदार, बड़ा और भला आदमी।

सं० महाश्वेता—स्त्री० सरस्वती।

सं० महि, मही (मह्=पूजना, वा बड़ा होना) स्त्री० धरती धरणी, ज़मीन, पृथ्वी।

सं० महिदेव-(महि+देव) पु० भूमिदेव, ब्राह्मण।

सं० महिपाल, महीपाल (महि=धरती, पाल्=बचाना) पु० राजा, महाराजा। [कीर्ति।

सं० महिमन्-पु० महत्त्व, बड़ाई,

सं० महिमा—(मह्=पूजना, वा बड़ा होना) स्त्री० बड़ाई, सराह।

सं० महिला–स्त्री० नारी, स्त्री, २ माल कँकुनी।

सं० महिष–(मह्=पूजना, जो यज्ञमें वा बलिदान के समय पूजाजाता है) पु० भैंसा।

सं० महिषासुर–(महिष+असुर) पु० एक राक्षस का नाम जिसको दुर्गाने मारा।

सं० महिषी–(मह्=पूजना या मानना) स्त्री० भैंस, २ रानी। [राजा।

सं० महिषेश पु० महिषासुर, २ यम-

प्रा० मही } मह्यो } (सं० मथित, मथ्=मथना) पु० छाछ, मट्ठा।

सं० महीधर–(मही=धरती, धृ=रखना) पु० पहाड़, पर्वत, डूंगर।

प्रा० महीना–(सं० मास्) पु० तीस दिन, २तनख़्वाह, मासिक, तीस दिन की मज़दूरी। [पु० राजा।

सं० महीप–(मही=धरती, पा=पालना)

सं० महीपति–(मही=धरती, पति =मालिक) पु० राजा, भूपति।

सं० महीरुह–पु० वृक्ष, वनस्पति।

सं० महीसुर–(मही+सुर) पु० ब्राह्मण

प्रा० महुआ–(सं० मधूक, मधु=मीठा) पु० एक पेड़ जिसका फल मीठा होता है और उससे मदिरा बनाई जाती है। [दोघड़ी।

प्रा० महूरत–(सं० मुहूर्त) पु०

सं० महेंद्र–(महा+इन्द्र) पु० इन्द्र, २ महाराजाधिराज, ३ एक पहाड़ का नाम।

सं० महेश } महेश्वर } (महा=बड़ा, ईश वा ईश्वर=मालिक) पु० महादेव, शिव।

सं० महेष्वास–(महा+इषु+आस)=बड़े धनुषवाले।

सं० महोक्ष–पु० बड़ाबैल, नन्दिकेश्वर।

सं० महोत्सव–(महा+उत्सव) पु० बड़ातिहवार, बड़ापर्व, बड़ादिन।

सं० महोदय–पु० कान्यकुब्ज देश कन्नौज गु० २ प्रतापी, नामवर।

सं० मा–(मा=शोभना या आदर करना) स्त्री० शोभा, लक्ष्मी, २ माता, क्रि० वि० मत, नहीं।

प्रा० मा } माई } (सं० माता) स्त्री० मैया, महतारी।

प्रा० मांग–स्त्री० लुगाइयों के शिर में एक लकीर सी होती है जहां से बाल जुदे किये जाते हैं, २ वह कुँवारी लड़की जिसकी सगाईहुईहो।

प्रा० मांगना–(सं० मार्गण, मृग्=खोजना) क्रि० स० चाहना, याचना २ सगाई करना, निश्चत करना, सम्बन्ध करना।

प्रा० मांजना–(सं० मार्जन, मृज्=शुद्ध करना, वा मज्जन, मज्ज्=साफ़ करना) क्रि० स० मलना, उजला करना, उजालना, साफ़ करना।

प्रा० मांजा } मांझा } पु० एकरोग जो मछलियों के बहुत होताहै

२ वर्षा के नवीन जल का फेना ।

प्रा० मांझ-(सं० मध्य) पु० बीच, मध्य.-मांझधार=नदी के बीचमें ।

प्रा० मांझा-पु० पतंगकी डोर जिस में कांच पीस कर और लेई या गोंद से मिलाकर लगाया जाता है जिससे दूसरे की पतंगकी डोर को काटते हैं ।

प्रा० मांझी-(मध्य) पु० नाविक, नाव का मालिक ।

प्रा० मांड़-(सं० मण्ड, मन्=रखना) पु० भातका पानी ।

प्रा० मांड़ना-(सं० मर्दन) क्रि० स० मलना, मींजना, मसलना, २ करना, रचना, बनाना ।

प्रा० मांद-स्त्री० जंगली जानवर की गुफा, गु० हलका, २ फीका, सीठा ।

सं० मांस-(मन्=रखना वा पूजना, जो शक्ति की पूजा और यज्ञ आदि में पूजाजाता है)पु०गोश्त, सालन।

सं० मांसल-गु० स्थूल, मोटा ।

सं० मांसाद-(मांस+अद) क० पु० मांसखानेवाला, गोश्तख़्वार।

सं० मांसाहारी-(मांस+आहारी= खानेवाला) क० पु० मांस खाने वाला, मांसभक्षी ।

सं० मांसभक्षक } (मांस भक्ष=
मांसभक्षी } खाना) क० पु० मांस खानेवाला, मांस आहारी ।

प्रा० मांह } (सं० मध्य) में, भीतर,
मांहि } बीच ।

प्रा० माखना-क्रि० अ० क्रोधकरना, कोपना, खिसियाना ।

प्रा० माखित (माखना) गु० क्रोधित, खिसियाना हुआ, २ ईर्षा या द्वेष या डाह करता हुआ ।

सं० मागध-(मगध) गु० मगधदेश का, पु० भाट या कड़खैत जिनका काम राजाओं की और बड़े आदमियों की बड़ाई करने का है ।

सं० माघ-(मघा एक नक्षत्रका नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूनौं के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० बरस का ग्यारहवां महीना।

प्रा० माछी-(सं० मक्षिका) स्त्री० मक्खी, माखी ।

प्रा० माजूफल } पु० एक फल जो
मांजूफल } दवाई में काम आता है । [मिट्टी, मट्टी ।

प्रा० माटी-(सं० मृत्तिका) स्त्री०

प्रा० माठा-गु० नटखट, ढीठ, मगरा, सुस्त, २ (सं०मन्थित,मन्थ्=मथना) पु० मट्ठा, छाछ ।

प्रा० माणिक-(सं० माणिक्य, मणि) पु० लाल, एक लाल रंगका बहुत मोल का पत्थर ।

प्रा० मात-(सं० मात्रा) स्त्री० मा-

त्रा, लगमात, स्वरों का व्यञ्जनों के साथ मिलान, २ (सं० माता) मा, माता । [तना, शहमात ।

फा० मात–स्त्री० बाजी हराना, जी-

प्रा० मातकरना–बाजी जीतना ।

सं० मातङ्ग–(मद्=मस्त होना) पु० हाथी, हस्ती, गज ।

सं० मातलि–(मत+सलाह, ला=लाना अर्थात् सलाह बतलाना) पु० इन्द्रका रथवान्, इन्द्रकासारथी ।

प्रा० माता–(सं० मत्त) गु० मस्त, मतवाला, उन्मत्त ।

सं० माता–(मान्=पूजना, या मन्=आदर मान करना) स्त्री० मा, मैया, माई २ शीतला ।

सं० मातामह–(माता) पु० माका बाप, नाना । [भाई, मामा ।

सं० मातुल–(मातृ=मा) पु० माका

सं० मातुलानी } स्त्री० मामी,
मातुली } माई ।

सं० मातृष्वसा–स्त्री० मौसी, खाला, माकी बहिन ।

सं० मातृष्वस्रेय–पु० मौसीका बेटा, खालाजाद ।

सं० मात्र–(मा=नापना) क्रि० वि० केवल, अल्प, थोड़ा, कुछ, उतनाही, वहीभर ।

सं० मात्रा–(मा=नापना) स्त्री० नाप, परिमाण, २ ह्रस्व दीर्घप्लुतस्वर ३ दवाका नाप, औषधकापरिमाण ।

प्रा० माथा–(सं० मस्तक) पु० शिर, कपाल, मस्तक, २ नाव का अगला भाग ।

प्रा० माथाठनकना–बोल० किसी कामके बिगड़ने का हाल पहले से मालूम होजाना ।

प्रा० माथारगड़ना–बोल० बहुत गरीबी से प्रार्थना करना, या देवता, मुनि, अथवा राजासेगरीबीके साथ मांगना, २ बहुत मिहनत करना ।

प्रा० माथेपरचढ़ना–बोल० अन्याय करना, जुल्म करना, प्रजाको बहुत दुःख देना, सताना ।

सं० माथुर–(मथुरा) पु० मथुरा का रहने वाला, २ कायथोंकी एक जात, ३ मथुराकेब्राह्मणोंकीएकजात ।

सं० मादक–(मद्=मस्तहोना) क० पु० मस्त करने वाला, नशेकीचीज ।

सं० मादन–क० पु० दर्पहारक, फा० खानसे निकलीचीजें (खानि)

सं० माधव–(मा=लक्ष्मी, धव=पति) पु० लक्ष्मीपति, विष्णु ।

सं० माधव–(मधु) पु० श्री कृष्ण, २ बसंत ऋतु, ३ वैशाखका महीना, ४ महुआ, गु० शहदका ।

सं० माधुर्य्य–(मधुर) भा० पु० मिठास, मधुरता ।

सं० माध्वी–(मधु) स्त्री० महुवेकी मदिरा, २ एक तरहकी मछली ।

सं० मान-(मा=नापना) पु० नाप, माप, अंदाज, परिमाण, २ (मत्त= घमंड करना वा बड़ा जानना) आदर, सन्मान, प्रतिष्ठा, नाम, पत, ३ घमंड, अभिमान, ४ चोंचला तावभाव, नाज़ नखरा, गु० बराबर ।

सं० मानन-(मान्+अन) भा० पु० पूजा करना, आदर करना ।

सं० मानव-(मनु) पु० मनुके बेटे पोते, मनुष्य, आदमी, २ बालक ।

सं० मानस-(मनस्=मन) गु० मनका, मानसिक, पु० मन, मनसा, २ हिमालय पहाड़के पास मानसरोवर नामझील ।

सं० मानसिक-(मनस्=मन) गु० मनका, मनसे पैदाहुआ, दिली ।

सं० मानहानि-स्त्री० अपमान, निरादर, बेकदरी, बेइज्जती ।

सं० मानिनी-(मान=घमंड) स्त्री० गु० घमंडकरनेवाली स्त्री, मानवती स्त्री।

सं० मानी-(मान) गु० घमण्डी, अभिमानी । [आदमी ।

सं० मानुप-(मनु) पु० मनुष्य,

प्रा० मान्ना-(सं० मान्=विचारना) क्रि० स० सन्मान करना, आदर करना, चाहना, जानना, २ पतियाना, भरोसा करना, ३ स्वीकार करना, कबूल करना, इकरार करना, ४ ठहरालेना, अनुमान करना, कल्पना करना ।

सं० मान्य-(मान्=पूजना) र्म्म० पु० पूजने योग्य, मानने योग्य, माननीय । [परिमाण ।

सं० माप-(मा=नापना) पु० नाप,

सं० मापक-(मा=नापना) कृ० पु० नापने वाला, २ नाप विद्या में दो बराबर खेतों में कोई आध काट से कटे हुए खेत और बाकी दो बराबर खेतों के मिलने से मापक बनताहै, ३ पैमाना, ४ अमीन ।

प्रा० मापा-र्म्म० पु० व्यापा, असरकिया, लगा ।

प्रा० मामा-(सं० मामक, मम=मेरा) पु० मा का भाई, मामू ।

सं० माया-(मा=नापना, या बनाना) स्त्री० ईश्वरकी शक्ति, कुदरत, २ इन्द्रजाल, कुहक, ३ कृपा, दया, ४ मोह, प्यार, नेह, मुहब्बत, ५ छल, दम्भ, कपट, ६ धन, संपदा, दौलत,-मायापात्र, गु० धनवान् ।

सं० मायापति-(माया+पति) पु० विष्णु, ईश्वर ।

सं० मायावी-(माया=छल) पु० एक राक्षस का नाम जो मय का बेटा था जिसको बालिने मारा, गु० छली, फ़रेबी ।

सं० मार-(मृ=मरना या मारना) पु० मरना, २ कामदेव ।

प्रा०मार—(मारना) स्त्री० मारना, पीटना, २ लड़ाई, युद्ध, ३ चोट।

सं०मारक—कृ० पु० कामदेव, २ नाशक, हिंसक।

प्रा०मारकुटाई—बोल० मारना, और कुचलना, मारपीट।

सं०मारकेश—जन्म पत्र में लग्न से दूसरे व सातवें घर का स्वामी।

प्रा०मारखाना } बोल० पिटना,
मारखानी } मार पड़ना।

प्रा०मारगिराना—बोल० पछाड़ना, पटक देना।

प्रा०मारपड़ना—बोल० पिटना, मारखाना। (ना, पीटना।

प्रा०मारपीट—बोल०मारकुटाई मार-

प्रा०मारमरना—बोल० आपघात करना, आत्महत्याकरना, २ लड़ाई में बैरी को मारके मरना।

प्रा०मारलाना—बो० लूटलाना।

प्रा०मारलेना—बोल० मारना, जीत लेना।

प्रा०मारहटाना—बोल० जीतलेना, मारना और निकाल देना।

प्रा०मारग—(सं०मार्ग) पु० रस्ता, राह, पन्थ, बाट, डगर, पैंड़ा।

प्रा०मारना—(सं० मारण, मृ=मरना या मारना) क्रि० स० जी लेना, मार डालना, प्राण निकालना, २ पीटना, ठोंकना, टकराना, ३ दण्ड देना, सजा देना, ४ नाश करना, बिगाड़ना।

प्रा०मारापड़ना—बोल०माराजाना।

प्रा०मारामाराफिरना—बोल० भटकता फिरना, डाँवाँ डोल फिरना, इधर उधर फिरना।

प्रा०मरामारी—बोल० आपस में मार पीट, धौल धप्पा, लातमुकी।

सं० मारात्मक—(मार=मारना आत्मा=जीव) गु० मारनेवाला, हिंसक, घातक, शत्रु।

सं०मारी—(मृ=मरना, वा मारना) स्त्री०मरी, मौत, महामारी।

सं०मारीच—(मृ=मरना, वा मारना) पु० एक राक्षसका नाम जो ताड़का राक्षसी का बेटा और सुबाहुका भाई और रावणका नौकर था जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।

सं०मारुत—(मृ=मारना) पु० हवा, बाव, बयार, पवन, वायु देवता (मरुत् शब्द को देखो)।

सं०मारुतसुत—(मारुत+सुत)पु० हनुमान्,पवनका पूत।

सं०मारुतात्मज—(मारुत+आत्मज) वायुपुत्र, हनूमान्।

सं०मारू—(मृ=मारना) पु० लड़ाई का बाजा, २ एक रागिणी का नाम जो लड़ाई में गाई जाती है।

सं०मार्कण्डेय—पु० एक मुनि का नाम, मृकण्ड मुनिका पुत्र।

सं०मार्ग—(मृज्=साफ़ करना वा मृग् वा मार्ग=खोजना) पु० रस्ता मार्ग, बाट, पंथ।

सं०मार्गित—स्त्री० पु० तलाशकिया गया, ढूंढ़ा गया।

सं०मार्ग्य—स्त्री०पु० ढूंढ़ने योग्य।

सं०मार्गण—(मार्ग+अन, मार्ग =ढूंढ़ना) पु० बाण, अन्वेषण, याञ्चा, भिक्षा, तलाश।

सं०मार्गव—पु० व्याध, अहेरी।

सं०मार्गशिर
मार्गशीर्ष } (मृगशिरा एक नक्षत्र का नाम इस महीने में पूरा चांद इस नक्षत्र के पास रहता है और इस महीने की पूर्णमासी के दिन यह नक्षत्र होता है) पु० अगहन, मँगसर, मंगसिर।

सं०मार्जन—(मृज्=शुद्ध करना) पु० शुद्ध करना, पवित्र करना, साफ़ करना, २ सन्ध्यापूजा आदि करने के पहले पवित्रता के लिये शरीरआदिमें पानीकीछींटडालना।

सं०मार्जनी—ण०स्त्री०झाड़ू,बढ़नी।

सं०मार्जनीय—स्त्री० पु० साफ़ करने योग्य।

सं०मार्जार—मृज्=शुद्धकरना वा मलना) पु० बिलाव।

सं०मार्त्तण्ड—(मृतण्डसूर्यका बाप) पु० सूर्य, सूरज।

सं०मालका
मालिका } (माला) स्त्री० माला, हार, २ पांत, पांति, श्रेणी, पंक्ति।

सं०मालती—(माल= विष्णु, अत्= जाना, अर्थात् विष्णु को चढ़ना वा मा=शोभा ला=लेना) स्त्री० एक फूल का नाम, चमेली।

प्रा०मालपूवा—पु० मीठा पुवा।

सं०मालव—पु० मालवा देश।

सं०माला—(मा=शोभा ला=लेना) स्त्री० फूलोंका हार, सोने या मोती आदि का हार, २ सुमरना, जपमाला ३ पांत, पंक्ति, श्रेणी, कतार।

सं०मालाकार—(माला=हार,कार= करने वाला, कृ=करना) पु० माली, बागवान। [भेद।

सं०मालादीपक—क०पु०अर्थालङ्कार

सं०माली—(माला) पु० बागवान, मालाकार।

सं०माल्य—(माला) स्त्री० माला के योग्य, पु० फूल, २ माला, हार।

प्रा०मावस—(सं०अमावस्या) स्त्री० अंधेरे पाख की पन्द्रहवीं तिथि, अमावस।

प्रा०माष—पु०क्रोध,कोप, २ उरद।

प्रा०माषा—(सं०माष, मष्=अन्दाज करना) पु० आठरत्ती की तौल।

सं०मास—(मा=नापना) पु० महीना २ चांद।

(१) मृते अण्डेभवः मार्त्तण्डः शकन्ध्वादिरिति।

प्रा० मासकबार-(पोर्तुगाल की भाषा का शब्द (mes महीना, acabar पूरा होना) से बिगड़ा हुआ) पु० महीने के अन्त का दिन, २ माहवारी नक़शा और यह शब्द, मास एकबार से भी बना मालूम होताहै क्योंकि माहवारी नक़शे आदि महीने में एक बार भेजेजाते हैं।

सं० मासान्त-(मास+अन्त) पु० पूर्णमासी, संक्रांति।

सं० मासिक-(मास) गु० महीने का जो महीने में मिले, पु० तनख्वाह, वेतन, २ हर एक महीने में अमावस के दिनका श्राद्ध।

प्रा० मासी-(सं० मातृस्वसृ मातृ=मा, स्वसृ=बहिन) स्त्री० माकी बहिन, मौसी।

सं० माहेश्वरी-(महेश) स्त्री० दुर्गा, देवी, पार्वती, शिवरानी।

प्रा० माहुर-पु० जहर, विष।

प्रा० मिचना-क्रि० अ० बन्द होना मुंदना।

प्रा० मिटना-(सं० मृष्ट, मृज्=साफ़ करना) क्रि० अ० बिगड़ना, साफ होना, दूर होना, चलाजाना, सिलपट होना।

प्रा० मिटिया-(मिट्टी) गु० एक तरह का रंग, खाकी रंग, स्त्री० मिट्टीका बरतन।

प्रा० मिठाई-(सं० मिष्टान्न, मिष्ट=मीठा, अन्न=अनाज) भा० स्त्री० शीरीनी, मीठी चीज, मीठा पकवान, २ मिठास, मधुरता।

प्रा० मिठास-(सं० मिष्टांश, मिष्ट+अंश) भा० पु० मिठाई, मीठापन।

सं० मित-(मा=नापना) कर्म० पु० नापा हुआ, मापा हुआ, परमित।

सं० मितम्पच-पु० कंजूस, किफ़ायती।

सं० मितप्रद-क० पु० थोड़ादेनेवाला।

सं० मिति-स्त्री० परिमाण, तादाद, अन्त, मर्य्याद।

प्रा० मिती-(सं० मिति, मा=नापना) स्त्री० तिथि, २ ब्याज, सूद।

सं० मित्र-(मिदू=प्यार करना) पु० जो मनुष्य कारकी इच्छासे उपकार करे व स्नेहकरे वह मित्रहै। दोस्त, सनेही, प्यारा, हितू, बन्धु, सखा, सुहृद्, २ सूर्य।

सं० मित्रता-(मित्र) भा० स्त्री० मिताई, मित्राई, दोस्ती, प्यार, हेत।

सं० मित्रद्रोही-क० पु० मित्रकावैरी।

सं० मित्रवर्ग-पु० सुहृद्गण।

प्रा० मित्राई, मिताई (सं० मित्रता) भा० स्त्री० दोस्ती, प्यार।

सं० मिथस्-(मिथ्=मिलना, वा समझना) क्रि० वि० आपस में, एक दूसरेको, परस्पर, बाहम।

सं० मिथिला-(मिथ्=नाश करना

वैरियों को, स्त्री० तिरहुत, जनक राजा की नगरी, जनकपुर।

सं० मिथिलेश-(मिथिला+ईश) पु० जनक राजा।

सं० मिथिलेशकुमारी-(मिथिलेश +कुमारी) स्त्री० जानकी, सीता वैदेही।

सं० मिथिलेशि-(मिथिलेश) स्त्री० जनकराजाकी राणी।

सं० मिथुन-(मिथ्=मिलना वा समझना) पु० जोड़ा, स्त्री० पुरुष २ ज्योतिषमें एकराशिका नाम।

सं० मिथ्या-(मिथ्=मारना वा हानि पहुंचाना) क्रि० वि० अथवा गु० दरोग, झूठ, असत्य अनर्थ।

प्रा० मिरगी-स्त्री० एकरोगकानाम।

प्रा० मिर्च-(सं० मरिच,मृ=मरना) स्त्री० एक मसालेका नाम,—गोल मिर्च=काली मिर्च।

सं० मिलक-क० पु० संधिकारी, मेल करनेवाला।

सं० मिलन-(मिल्=मिलना) भा० पु० मिलना, मेल,मिलाप, संयोग।

प्रा० मिलनसार-(मिलन) गु० मेली, मिलापी।

प्रा० मिलना-(सं०मिलन) क्रि० अ० मिलाप होना, भेंटना, मिला रहना, २ पचमेल होना, गड़बड़ होजाना, ३ पाना, ४ एक होना, बराबर होना।

प्रा० मिलनाजुलना-बोल० सदा मिलारहना, सचाई से मिलना।

प्रा० मिलनाहिलना-बोल०इकट्ठा रहना, शामिलरहना।

प्रा० मिलेजुलेरहना-बोल० मेल से रहना, मिलाप से रहना।

प्रा० मिलाप-(मिलना) पु० मेल, बनाव, भेंट, योग, संयोग।

सं० मिलित-(मिल्=मिलना) कर्म० पु० मिलाहुआ, लगाहुआ।

सं० मिश्रक-(मिश्र+अक) क०पु० मेलक, मिलाने वाला, देवोद्यान, देववन।

सं० मिश्र-(मिश्र=मिलना) गु० मिलाहुआ, पु० ब्राह्मणों की पदवी २ प्रतिष्ठित मनुष्य, ३ हिन्दू वैद्य।

सं० मिश्रकेशी-स्त्री० स्वर्गवेश्या।

सं० मिश्रित-(मिश्र=मिलना) कर्म० पु० मिलाहुआ,जुड़ाहुआ,यौगिक।

सं० मिष-(मिष्=हिस्का वा बराबरी करना) पु० छल, कपट, बहाना, हीला, बनावट, २ हिस्का।

सं० मिष्ट-(मिष्=सींचना) गु० मीठा मधुर।

सं० मिष्टान्न-(मिष्ट+अन्न) पु० मिठाई, शीरीनी, पकवान।

प्रा० मिस्सी-स्त्री० काले रंग का चूरण जिसको स्त्रियां दांतों में लगाती हैं।

प्रा० मिहदी } मेंहदी } (सं० मेन्धी मा=शोभा, इन्ध=चमक

ना) स्त्री० एक पौधा जिस के पत्तों से स्त्रियां अपने हाथ रचाती हैं।

प्रा० मिहना—...० बोली ठोली, ताना।

प्रा० मिहरारू, मिहरिया, मिहरी—(सं० महिला, मह=पूजना) स्त्री० लुगाई, नारी, स्त्री।

सं० मिहिका—स्त्री० नीहार, कुहिरा। हिम, बर्फ।

सं० मिहिर—पु० सूर्य्य, आफताब।

प्रा० मींजना—(सं० मृज्=साफकरना) क्रि० स० मसलना, मलना, रगड़ना। [कुंजा।

प्रा० मीचं—(सं० मृत्यु) स्त्री० मौत,

प्रा० मीचना—क्रि स० आंख बन्द करना, मूंदना।

प्रा० मीठा—(सं० मिष्ट) गु० मधुर, मिष्ट, २ धीमा, पु० चुम्बा, बोसा।

प्रा० मीणा, मीना—पु० जंगली आदमियों की एक जात जो चोर और डाकू होते हैं।

प्रा० मीत—(सं० मित्र) पु० मित्र, दोस्त, सुजन, सुहृद्, सखा।

सं० मीन—(मी=मारना) स्त्री० वा पु० मछली, २ एक राशिका नाम।

सं० मीनकेतन—(मीन=मछली, केतन=पताका) पु० कामदेव।

सं० मीमांसक—(मीमांसा) हि० पु० मीमांसाशास्त्र का जाननेवाला, २ विचार करनेवाला।

सं० मीमांसा—(मान्=विचारना) स्त्री० छः शास्त्रों में का एक शास्त्र, २ सिद्धान्त विचार।

सं० मीमांसित—र्म्म० पु० विचारित, विचारागया।

प्रा० मिमियाना, मीमियाना—क्रि० अ० मैं मैं करना, बकरी के बच्चे का बोलना।

सं० मीलन—(मील्=पलक मारना) पु० टिमकाना, टमटमाना।

सं० मीलित—र्म्म० पु० संकुचित, बंधित।

प्रा० मुंह, मूंह—(सं० मुख) पु० मुखड़ा, मुख, बदन, चेहरा, २ बल, शक्ति, जोर, योग्यता।

प्रा० मुंहअंधेरा—बोल० सन्ध्या, सांझ शाम, कुछ कुछ अँधेरा।

प्रा० मुंहअपनासा लेके फिरजाना—बोल० निराश होकर चलाजाना।

प्रा० मुंहआना—बोल० मुंहफलना, मुंह में छाले होजाना।

प्रा० मुंहामुंह—बोल० खूब पूराभरा हुआ, लबालब। [होजाना।

प्रा० मुंहउतरजाना—बोल० उदास

प्रा० मुंहकरना—बोल० साम्हने होना, मिलाना, बराबरीदेना, २ गाली देना, ३ फोड़े को छेदकरना, फोड़े या घावका फूटना, ४ सबसे पहले हमला करना (जैसे शिकारी कुत्ता या और जानवर दूसरे कुत्ते या जानवर पर करते हैं)

१ चिन्तनीय द्वय वस्तुहैं सदा जगत के बीच। ईश्वरके पदपद्मयुग और आपनी मीच॥
२ निन्दहिं आप सराहहिं मीना। धिग जीवन रघुबीर बिहीना॥

४ किसी चीज या जगहकी ओर देखना या उसतरफ़ पांव उठाना।

प्रा० मुंहकाफूहड़-बोल० बुरीबात बोलनेवाला, बदज़बान, निन्दक।

प्रा० मुंहकाला-बोल० कलङ्क, अपमान, अनादर, बुरा।

प्रा० मुंहकालाकरना-बोल० कलङ्क लगाना, दागलगाना, आबरू उतारना, २ सज़ा देना।

प्रा० मुंहकेकौवेउड़जाने-बोल० उदास दिखाई देना, व्याकुल दिखाई देना।

प्रा० मुंहखोलना-बोल० गाली देना, निन्दाकरना।

प्रा० मुंहचढ़ाना-बोल० हिलमिल जाना, मुंह लगाना, २ साम्हना करना, सन्मुख होना।

प्रा० मुंहचलाना-बोल० काटना, काटा चाहना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुंहचोर-बोल० शरमीला, लजीला, डरपोकना।

प्रा० मुंहचोरी-बोल० लाज, शरम।

प्रा० मुंहछिपाना-बोल० लाज से मुंह ढकना।

प्रा० मुंहठठाना-बोल० किसी के मुंह पर तमाचा मारना, थप्पड़ मारना।

प्रा० मुंहडालना-बोल० मांगना, याचना, चाहना, २ काटना (जैसे घोड़ा)।

प्रा० मुंहतकना-बोल० चकित रह जाना, भैचक रहना, घबराना, व्याकुल होना।

प्रा० मुंहतोड़ना-गु० खिझाना, मुंहमें मारना, तकलीफ़ देना।

प्रा० मुंहतौदेखो-बोल० यह मुहावरा उस जगह बोला जाता है जब कोई आदमी अपनी ताक़त या योग्यता से अधिक कोई काम करने का बहाना करता हो।

प्रा० मुंहथुथाना-बोल० मुंहबनाना।

प्रा० मुंहदिखाई-स्त्री० जब कि नई दुलहिन आती है तब उसको उसकी सास ननँद आदि सुसराल की लुगाइयां मुंह देख कर रुपया अथवा गहना आदि देती हैं उसको मुंहदिखाई कहते हैं।

प्रा० मुंह देखकर बात करना-बोल० खुशामद करना, ऐसी बात कहना जो सुननेवाले के मनभाये।

प्रा० मुंहदेखना-बोल० मददचाहना, सहायता मांगना, २ किसी का बहुत आदर सन्मान करना, ३ घबराना, या बेबश होना।

प्रा० मुंहदेखरहना-बोल० अचंभे में किसी का मुंह ताकना।

प्रा० मुंहदेखेकीप्रीति-बोल० किसी के साम्हने प्यार की बातें करना

और उसके पीठ पीछे उसका कुछ ध्यान नहीं करना, दिखाऊ मित्राई अथवा प्यार ।

प्रा० मुंहपरगर्महोना-बोल० बड़े आदमी के अथवा अपने अफ़सर के साम्हने बे अदबी अथवा ढिठाई से बोलना ।

प्रा० मुंहपरलाना-बोल० कहना, जताना ।

प्रा० मुंहपरहवाई उड़ना-बोल० मुंह का रङ्ग बदलजाना ।

प्रा० मुंहपसारना-बोल० अचंभे में होके मुंह फाड़ना, जमुहाना ।

प्रा० मुंहफेरना-बोल० किसी काम के करने से रुक जाना ।

प्रा० मुंहफैलाना-बोल० घमंडकरना २ बहुत चाहना, ३ जमुहाना, जमुहाई लेना ।

प्रा० मुंहबन्दकरना-बोल० किसी को चुप करना, जीभ पकड़ना ।

प्रा० मुंहबनाना—बोल० मुंह थुथाना, भौं टेढ़ी करना, त्यौरी चढ़ाना ।

प्रा० मुंहबना—बोल० मुंह खोलना, मुंह फाड़ना, जमुहाना, जमुहाई लेना ।

प्रा० मुंहबिगड़ना-बोल० अप्रसन्न होना, नाराज़ होना, बुरा मानना, रिसाना, २ कोई कड़वी या बुरी चीज़ के खाने से मुंह का स्वाद बिगड़ जाना ।

प्रा०मुंहबिगाड़ना—बोल० भौं टेढ़ी करना, त्यौरी चढ़ाना, मुंह बनाना।

प्रा०मुंहबोला—बोल० मानाहुआ, कियाहुआ, धर्म का,—जैसे मुंह बोला भाई=धर्मका भाई, वह आदमी जिसको अपना भाई कर माने ।

प्रा०मुंहभरी—बोल० रिशवत, घूस, अकोर ।

प्रा०मुंहमांगा—बोल० जैसा चाहा वैसाही, जैसा मुंहसे मांगा वैसाही।

प्रा०मुंहमारना—बो० चुप करना, जीभ पकड़ना, मुंह बन्दकरना, २ काटना ।

प्रा०मुंहमेंपानीआना—या भर आना—बो० किसी चीज़ को बहुत चाहना, किसी चीज़के लिये मन बहुत ललचाना ।

प्रा०मुंहमोड़ना—बो० फिर जाना, चला जाना, किसी कामके करने से रुकजाना ।

प्रा०मुंहलगना—बोल० मरिचआदि चरपरी चीज से मुंहजलना या चरपराना, २ हिल मिल जाना, मुसाहिबहोना, पक्कादोस्त होना ।

प्रा०मुंहलगाना—बो० छोटे आदमीसे मेल करना, हिलाना, मुसाहिब बनाना ।

प्रा०मुंहलेके रहजाना–बोल० शर्म से चुप होजाना ।

प्रा०मुंहसुकड़ना–बो० मुंहका रङ्ग बदलना ।

प्रा०मुहँसेफूलभड़ना–बो० गाली देना, धिक्कारना, झिड़कना ।

प्रा०मुकरना–क्रि० स० न करना, इनकार करना, नटना ।

प्रा०मुकरी–(मुकरना) स्त्री० एक तरह का छोटाछन्द जो ब्रजभाषा में बहुत आता है और उसमें चार पद होते हैं उसमें से पहले तीन पदों से ऐसा जानाजाता है कि बोलनेवाली स्त्री अपने पीतम की बात करती है पर चौथे पद में वह स्त्री अपनी सखी से पूछती है कि क्यों सखी ‘ सज्जन, हुआ उसपर वह सखी मुकरती है और किसी दूसरी चीज को बताती है जैसे “ वा बिन चित्त चहूँदिशि डोलै । चातक ज्यों पुनि पिय पिय बोलै ॥ मलय होय आवै नाहिं गेह । क्यों सखि सज्जन ना सखि मेह ॥

सं०मुकु–पु० मोक्ष, उत्सर्ग छोड़ना।

सं०मुकुट–(मक्+उट, मकि= भूषणे) पु० शिरोभूषण, ताज, कलँगी ।

सं०मुकुन्द–(मुकु=मुक्ति को (मुकु में धातु मुच्=छुड़ाना दा=देना) पु० मुक्तिदाता विष्णु भगवान् ।

सं० मुकुम्-अव्य० निर्वाण, मोक्ष ।

सं० मुकुर-(मुक्+उर, मकि=भूषणे) पु० दर्पण, बकुलवृक्ष, मौलश्री, कुम्हारका डंडा, मल्लिकावृक्ष ।

सं० मुकुल-पु० थोड़ीखिली कली ।

सं० मुकुलित–ग्म० पु० कलियाना, कलिकायुक्त, पुष्पित ।

प्रा० मुक्का–(सं० मुष्टिका) पु० घूंसा, धौल, चपेट ।

सं० मुक्त–(मुच्=छोड़ना, या छूटना) र्म्म० छोड़ा हुआ, छूटा हुआ, २ जिस की मुक्ति हुई हो, ३ प्रसन्न, आनंदित, रिहा, बरी, फ़राग़त पाया हुआ ।

प्रा० मुक्तमाल–(सं० मुक्तामाला) पु० मोती की माला ।

सं० मुक्तहस्त–गु० बड़ादानी, फ़य्याज़ ।

सं० मुक्ता–(मुच्=छूटना या छोड़ना, जो सीपी से छूटता है) पु० मोती ।

प्रा० मुक्ता–गु० बहुत व घना ।

सं० मुक्ताफल–(मुक्ता+फल)पु० मोती ।

सं० मुक्तावली–(मुक्ता+अवली) स्त्री० मोती की माला, मोती का हार, नाम एक पुस्तक का ।

प्रा० मुक्काहल } (सं० मुक्काफल) पु० मोती ।
मुकुताहल }

सं० मुक्ति-(मुच्=छूट जाना) स्त्री० छुटकारा, संसार के दुःख अथवा पाप से छूट जाना, मोक्ष, गति, उद्धार, त्राण ।

सं० मुख-(खन्=खोदना जो ब्रह्मा का खोदाहुआहै) पु० मुंह,मुखड़ा, बदन, चिहरा, गु० पहला,प्रधान ।

प्रा० मुखड़ा-(सं० मुख) पु० मुंह, बदन ।

सं० मुखभूषण-(मुख=मुँह, भूषण =शोभा) पु० पान, बीड़ा ।

सं० मुखर-(मुख=मुँह की बात, रा=लेना अर्थात् मुँह में बुरी बात, वाचाल, बहुत बोलनेवाला) गु० कड़ुवी बात बोलने वाला, दुर्वचन बोलने वाला, पु० प्रधान, मुखिया, २ शब्द, ३ काक, ४ शंख ।

सं० मुखलांगल-(मुख=मुँह, लांगल=हर) पु० शूकर, सूअर ।

सं० मुखवल्लभ-पु० दाडिम, अनार ।

प्रा० मुखागर-(सं० मुखाग्र, मुख= मुँह,अग्र=अनी वा अगला भाग)पु० जबानी, मुँह से कहना, २ लगाम ।

प्रा० मुखिया-(सं० मुख्य) गु० प्रधान, मुख्य, पहला ।

सं० मुख्य-(मुख) गु० प्रधान, मुखिया, पहला, श्रेष्ठ ।

सं० मुग्ध-(मुह्=अचेत होना) गु० मूर्ख, अज्ञानी, २ सुन्दर, मनोहर, कमसिन ।

सं०मुग्धा-(मुग्ध) स्त्री० जवान और सुन्दर स्त्री, एक प्रकारकीनायिका ।

सं० मुचकुन्द-पु० सूर्यवंशी राजा, मान्धाता का बेटा, जिसको श्री कृष्णने मुक्तिदी ।

प्रा० मुजरा-पु० सलाम, राम राम, प्रणाम, नमस्कार,--राजपूताने में 'सलाम' या 'आदाब' की जगह छोटा बड़े को और बराबरीवाला बराबरी वाले को 'मुजरा' करते हैं, २ मिनहा करना, काटना, ३ बेश्याकागान ।

सं० मुञ्ज-(मुजि=शब्द करना) स्त्री० मूंज, कांसके छिलके जिसकी रस्सी बनती है ।

प्रा० मुटाई भा० स्त्री० } (मोटा) मोटापन, स्थूलता ।
मुटापा भा० पु० }

प्रा० मुट्ठी-(सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की । बुक्का,बुकटा, मुक्का । [मिलजाना ।

प्रा० मुठभेड़-बोल० साम्हना होना,

प्रा० मुठिया-(सं० मुष्टिका) स्त्री० मुट्ठीभर, हाथभर ।

प्रा० मुड़ना-क्रि० अ० पीछे हट जाना, २ झुकजाना, बलखाना, टेढ़ा होना ।

(१) विषयाशामहापाशाद्योविमुक्तःसुदुस्त्यजात् । सएवकल्पतेमुक्त्यै नान्यःषट्शास्त्रवेद्यपि ॥ १ ॥

प्रा० मुंढ़-(सं० मुण्ड) पु० प्रधान, मुखिया, मुख्य ।

सं० मुण्ड-(मुडि=मुंडाना) पु० शिर, माथा, मस्तक, मूंड़, कपाल, २ एकराक्षस का नाम जिसको दुर्गा जीने मारा, स्मं० मुड़ायाहुआ ।

प्रा० मुण्डखई-स्त्री० बकवाद करना, शिरखाना, बेफ़ायदा बकना ।

सं० मुण्डन-(मुडि=मुंडाना) पु० मुड़ाना, बाल बनाना, २ हिंदुओं में एक रीति है कि पहलेही पहल किसी देवता के साम्हने लड़के के बाल कतराते हैं उसको मुण्डन या मुण्डना कहते हैं ।

सं० मुण्डक-(मुड्+अक) क० पु० नापित, नाई, हज्जाम ।

सं० मुण्डमाला-(मुण्ड+माला) स्त्री० आदमियों के शिरोंकी माला ।

सं० मुण्डित-(मुडि=मुण्डाना) स्मं० पु० मुड़ा हुआ, भद्र ।

सं० मुण्डी-क० पु० नापित, नाई, हज्जाम, २ संन्यासी ।

प्रा० मुण्डिया-(सं० मुण्ड) पु० शिर, माथा, मस्तक ।

सं० मुद्, मुदा } (मुद्=प्रसन्न होना) भा० स्त्री० प्रसन्नता, ख़ुशी, हर्ष, आनन्द, सुख ।

सं० मुदित-(मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित, ख़ुश ।

सं० मुदिर (मुद्+इर) क० पु० कामुक, कामी, २ मेघ । [प्रीति, हर्ष ।

सं० मुदी-स्त्री० चन्द्रिका, ज्योत्स्ना

सं० मुद्र-पु० मूंगअन्न, क़नात, तम्बू, झूल, परदा, गिलाफ़ ।

सं० मुद्गर, मुगदर } (मुद्=ख़ुशी को गॄ=निकालना) पु० एकबहुत भारी पत्थर जिसके बीच में पकड़ने को कटा हुआ क़बजा होताहै जिसको मल्ल और पहलवान हाथ से पकड़ के ऊंचा उठाते हैं, २ बेले का वृक्ष ।

सं० मुद्रा-(मुद्=प्रसन्न होना) स्त्री० रुपया अशर्फ़ी आदि, २ छाप मोहर, ३ अंगूठी छल्ला, ४ योगियों के कानों के कुण्डल, ५ संध्या पूजामें अंगुलियों को आपस में मिलाना जैसे धेनुमुद्रा, योनिमुद्रा आदि, ६ टकसाल ।

सं० मुद्रिका-(मुद्रा) स्त्री० ऐसी अंगूठी जिसपर अपनानाम खुदाहो ।

सं० मुद्रित-(मुद्रा) स्मं० पु० छापाहुआ, छापा गया, २ मोहर लगा हुआ, ३ मुँदा हुआ, ४ अनखिला, नहीं खिला हुआ ।

सं० मुधा-(मुह=अज्ञानी होना, वा अचेत होना) क्रि० वि० भूठ, बे फ़ायदह, वृथा, व्यर्थ, निरर्थक ।

सं० मुनि-(मन्=जानना) पु०

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषुविगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थिरधीर्मुनिरुच्यते (अर्थ) दुखसुखमें एकसा रहै राग भय और क्रोधरहित स्थिर बुद्धि मुनि कहाताहै ऋषि, तपस्वी, तपी, ज्ञानी, सातकी संख्या।

प्रा० मुनिघरनी—(सं० मुनिगृहिणी) स्त्री० मुनि की स्त्री।

प्रा० मुनिन्द—(सं० मुनीन्द्र) पु० बड़ा ऋषि, श्रेष्ठ मुनि, मुनीश, ऋषिराज।

सं० मुनिपट—पु० वल्कल, भोजपत्र।

सं० मुनिपुंगव—(मुनि=ऋषि, पुंगव=श्रेष्ठ) पु० मुनियों में श्रेष्ठ, मुनिवर, मुनिनायक।

सं० मुनिराज }
प्रा० मुनिराय } (मुनि+राजा) पु० प्रधान ऋषि, मुनीश।

प्रा० मुनिन्दा }
सं० मुनीन्द्र }
मुनीश } (मुनि, ऋषि, इन्द्र वा ईश, स्वामी) पु० मुनिवर, ऋषिराज, मुनिन्द, बड़ा ऋषि।

प्रा० मुन्दना—(सं० मुद्रण) क्रि० अ० बंद होना, मिचना, ढकना।

सं० मुन्यन्न—(मुनि+अन्न) पु० नीवार, तिन्नी का चांवर।

सं० मुमुक्षु—क० पु० मुक्ति इच्छुक, मुक्ति चाहनेवाला।

सं० मुमूर्षु—क० पु० मृतप्राय, आसन्नमृत्यु, मरणाशंकी, करीबुलमर्ग।

सं० मुर—(मुर्=घेरना) पु० एक राक्षस का नाम जिसके पांचशिर थे उसको श्रीकृष्ण ने मारा।

प्रा० मुरई—(सं० मूल) स्त्री० मूली।

प्रा० मुरकी—स्त्री० कान का एक गहना। [बाजा।

प्रा० मुरचंग—स्त्री० एक तरह का

प्रा० मुरझाना—(सं० मूर्च्छन मूर्च्छ=मुरझाना) क्रि० अ० सूख जाना, कुम्हिलाना।

सं० मुरली—(मुर्=घेरना, और ला=लेना) स्त्री० वंशी, बांसुरी।

सं० मुरलीधर—(मुरली=वंशी, धर =रखनेवाला, धृ=रखना) क० पु० श्रीकृष्ण, वंशीधर।

सं० मुरारि—(मुर+अरि) पु० विष्णु, श्रीकृष्ण।

प्रा० मुर्रा—पु० छछूंदर, पटाखा।

प्रा० मुलतानी—स्त्री० एकरागिणी का नाम, गु० मुलतान की, (जैसे मुलतानी मट्टी)।

प्रा० मुलहट्टी—(मूल) स्त्री० जेठी मधु। [अँकाव, कूत, निरख।

प्रा० मुलाई—(मुलाना) स्त्री०

प्रा० मुलाना—(सं० मूल्य) क्रि० स० मोल करना, भावठहराना, आंकना।

प्रा०मुश्कें बांधना } बोल० हाथ पीठ
मुश्कें चढ़ाना } पीछे बांधना, जकड़ना ।

सं० मुष्क—पु० वृषण, अण्डकोश, फ़ोता, २ चोर, ३ समूह, ४ कस्तूरी, ५ स्थूल, मोटा ।

सं० मुष्ट—कर्म० पु० हृत, चौरित, चोरी, चौरकर्म ।

सं० मुष्टि—(मुष्=लेना, या मारना जिससे) स्त्री० मुट्ठी, मुक्की, मुठी ।

प्रा० मुसकान—(मुसकाना) स्त्री० मुसकुराहट, मुसकुराई, धीरे धीरे हँसना । [धीरेधीरे हँसना ।

प्रा०मुसकाना—क्रि०अ०मुसकुराना,

सं० मुसल } (मुस्=टुकड़े२करना)
मूसल } पु० चांवल आदिनाज कूटने का सोंटा ।

अ० मुसलमान—(अ० मुसलमान) पु० मुहम्मद का मत माननेवाला ।

सं० मुसली—क० पु० बलभद्र ।

फ़ा० मुस्ताजिरी—पु० ठेका ।

अ० मुहल्ला—नगरशाखा, शहरका हिस्सा ।

प्रा०मुहाना—(मुँह) पु० नदीका मुँह।

सं० मुहिर—(मुह्×इर,) मुह्=मोहना) पु० कामदेव, मूर्ख, खल्वाट, बड़मुड़ा, गंजा ।

सं० मुहुर्मुहुः—अव्य० पुनः २ बारंबार ।

सं० मुहूर्त्त—(मुहुर्=बारबार) पु० दोघड़ी, दिनरातका तीसवांभाग ४८ मिनटका समय ।

प्रा० मूंग—(सं० मुद्ग, मुद्=प्रसन्न होना) पु० एक तरहका अनाज जिसकी दाल बनती है ।

प्रा० मूंगा—पु० एक चीज जो समुद्रमें मिलती है और जिसकी माला बनती है और उसको नौरत्नों में एक रत्न गिनते हैं जिसको संस्कृत में विद्रुम और प्रवाल कहते हैं ।

प्रा० मूंगिया—(मूंगा) पु० मूंगा के ऐसा रंग । [मोछ ।

प्रा० मूंछ—स्त्री० होठ पर के बाल,

प्रा० मूंज—(सं० मुञ्ज) स्त्री० एक तरहकी घासके छिलके जिनकी रस्सी बनती है ।

प्रा० मूंड } (सं० मुण्ड) पु० माथा,
मूड़ } शिर, मस्तक, कपाल ।

प्रा० मूंड़फिकारना—बो० शिर नंगा करना ।

प्रा० मूंड़ना—(सं० मुण्डन) क्रि० स० बाल काटना या कतरना, हजामत करना, २ चेला करना, शिष्य बनाना, ३ फुसलाना, ठगना,—उलटे उस्तरे से मूंड़ना, बोल० किसी को ठगना, छलना, धोखा देना ।

प्रा० मूंडी—(सं०मुण्ड) स्त्री०शिर।

प्रा० मूंदना—(मुँदना) क्रि० स० बंद करना, मीचना, ढकना ।

प्रा० मूंदरी-(सं० मुद्री, वा मुद्रिका) स्त्री० अंगूठी, छल्ला, मुंदरी।

सं० मूक-(मू=बंध होना) गु० गूंगा जो नहीं बोल सक्ता हो, अवाक्, मौन, पु० मत्स्य, दैत्य, दीन, प्रेत।

प्रा० मूकना-(सं० मुच्=छोड़ना, वा मू=बंधकरना) क्रि०स०छोड़ना, त्यागना, जैसे रामायण में 'जीवन आश दशानन मूकी'। [मुट्ठी।

प्रा० मूकी-(सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की,

प्रा० मूछ-स्त्री० मूंछ, मोंछ, होठ पर के बाल।

प्रा० मूठ-(सं०मुष्टि) स्त्री०बेंट, कबजा, दस्ता, २ मुक्की, मुट्ठी, मुट्ठीभर।

प्रा० मूठा-(सं०मुष्टि) पु० भरमूठ, हाथभर, मुक्का, २ कबजा।

प्रा० मूठी-(सं० मुष्टि) स्त्री० मुक्की, मुट्ठी, घूंसा, मूका, मुक्की।

सं० मूढ़-(मुह्=अचेत होना, वा अज्ञानी होना) क० पु० मूर्ख, थनपढ़, अज्ञानी।

प्रा० मूत-(सं० मूत्र, मूत्र्=मूतना) पु० पिशाब, लघुशंका।

सं० मूत्रकृच्छ्र-पु०अश्मरीरोग, पथरी रोग, मूत का बन्द होना।

प्रा० मूर } (सं० मूल) पु० जड़।
मूरि }

प्रा० मूरख-(सं० मूर्ख) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मूढ़, बेवकूफ़।

प्रा० मूरत-(सं० मूर्ति) स्त्री० पत्थर अथवा लकड़ी की बनी हुई सूरत, प्रतिमा, पूतली, २ आदमी, जैसे साधु या बैरागियों में बोला जाता है कि 'कितनी मूरत हैं' अर्थात् कितने आदमी हैं।

सं० मूर्ख-(मुह्=अज्ञानी होना) गु० अज्ञानी, अनाड़ी, मू ,बेवकूफ़।

सं० मूर्च्छा-(मूर्च्छ्=अचेत होना) भा० स्त्री० झंव, गश, बेहोशी, मोह, अचेत होना।

सं० मूर्च्छित-(मूर्च्छा) गु० अचेत, बेसुध, बेहोश, मोहित।

सं० मूर्त्ति-(मूर्च्छ्=मोहित होना जिसको देखने से) स्त्री० मूरत, सूरत, पुतली, प्रतिमा।

सं० मूर्द्धन्य-(मूर्द्धन्=शिर) गु० शिरका, शिरसम्बन्धी, (वे अक्षर) जो तालू से ऊपर जीभ लगाने से बोले जायँ, जैसे ऋ ॠ ट ठ ड ढ ण र ष।

सं० मूर्द्धा-(मुर्व्=बांधना, या मुह्=अचेत होना अर्थात् जिसमें चोट लगने से आदमी अचेत होजाता है) पु० शिर, मस्तक, माथा, शीश, कपाल।

सं० मूल-(मूल्=ठहराना, या जमाना, रोपना या मू=बांधना) पु० जड़,

असल, २ वंश, कुल, सन्तान, ३ असल धन, पूंजी, ४ मूलग्रन्थ. किसी पुस्तकका सूत्र अथवा श्लोक (पर टीका नहीं) ५ उन्नीसवां नक्षत्र ।

सं० मूलक–(मूल्=जमाना,रोपना) पु० मूली, मुरई ।

सं० मूलकारिका–स्त्री० महानस, रसोई, चूल्हा, चूल्ही । [पूंजी।

सं० मूलधन–पु० मूलद्रव्य, असल

सं० मूलभूत–पु० जड़,असलियत ।

सं० मूल्य–(मूल) पु० मोल,क़ीमत, भाव, निरख, दर, दाम ।

सं० मूष, मूषक, मूषिक – (मूष्=चुराना) कृ० पु० मूसा, चूहा, २ चोर ।

सं० मूषिका–कृ० स्त्री० मुसरिया ।

प्रा० मूसना–(सं० मुष्=चुराना) क्रि०स० चुराना, खोसना,लूटना ।

प्रा० मूसला–(सं० मुस=टुकड़े २ करना) पु० असल जड़ ।

प्रा० मूसलाधारबरसना–बोल० बहुत जोर से मेह बरसना ।

प्रा० मूसा–(सं० मूषक) पु० चूहा ।

सं० मृग-(मृग्=खोजना)पु०पशुमात्र, सब चौपाये जानवर, २ हरिण,कुरंग, ३ हाथी, ४ पांचवां नक्षत्र, ५ खोजना ।

प्रा० मृगछाला-(मृग=हरिण,छाला =चमड़ा) स्त्री० हरिणका चमड़ा, हरिणकी खाल ।

सं० मृगणा–भा० स्त्री० अपहृत द्रव्यका अन्वेषण, जातीरही द्रव्य का खोजना, पतालगाना ।

सं० मृगतृषा, मृगतृष्णा, मृगतृष्णिका – (मृग=पशु, तृषा =तृष्णा और तृष्णिका=प्यास) स्त्री० एक तरहकी भाफ जो रेतके मैदानों में बालू रेतके कणों पर पड़ती है तब दूर से पानीके ऐसी जानी जाती है । अथवा रेतले देशों में बालू के कणों पर सूर्य की किरण के पड़ने से दूर से पानी ऐसी दिखाई देती है तब प्यासे हरिण उस ओर पानी के लिये जाते हैं पर पानी न पाकर उलटे फिर आते हैं इस लिये ऐसा नाम पड़ा, आबसुराब ।

सं० मृगनयनी–(मृग=हरिण,नयन =आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिस की आंखें हरिणीकी ऐसीहों, सुन्दर स्त्री, रूपवती ।

सं० मृगनाभि–(मृग=हरिण,नाभि नाभ में पैदा हुई चीज) स्त्री० कस्तूरी, मृगमद ।

सं० मृगपति–(मृग+पति) पु० पशुओं का राजा, सिंह, शेर ।

सं० मृगमद–(मृग=हरिण, मद=घमंड, अर्थात् जिससे हरिण को घमंड रहताहै) पु० कस्तूरी ।

सं० मृगया–(मृग=खोजने को, या =जाना) स्त्री० शिकार, अहेर ।

सं०मृगयु–क०पु० व्याध, शिकारी ।

सं० मृगराज–(मृग+राजा) पु० पशुओंका राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृगलोचनी–(मृग=हरिण, लोचन=आंख) गु० स्त्री० वह स्त्री जिसकी आंखें हरिण की ऐसी हों, मृगनयनी ।

सं० मृगशिरा–(मृग=हरिण,शिरस्=शिर अर्थात् जिसका आकार हरिण के शिर ऐसा है) पु० एक नक्षत्र का नाम ।

सं० मृगाङ्क–(मृग=हरिण, अङ्क=चिह्न, अर्थात् जिस में हरिण के ऐसा चिह्न हो) पु० चांद,चन्द्रमा ।

सं० मृगित–(मृग+इत, मृग=खोजना) र्म्म०पु०अन्वेषित, दर्शित ।

सं० मृगी–(मृग) स्त्री० हरिणी ।

सं० मृगेन्द्र–(मृग+इन्द)पु० पशुओं का राजा, सिंह, मृगपति ।

सं० मृग्य–र्म्म० पु० अन्वेषणीय, दर्शनीय या ढूंढने लायक ।

सं० मृजा–(मृज्=शुद्धकरना, मांजना) भा० स्त्री० मार्जन, मांजना ।

सं० मृड़–(मृड़=प्रसन्न करना) पु० शिव, स्त्री० मृड़ानी, पार्वती ।

सं० मृण–(मृण=मारना)पु० क्लेश, शोक, २ मट्टी, गु० क्लेशद ।

सं०मृणाल–(मृण्=नाशकरना)पु० कमलनाल,कमलकी जड़व भसीड़ा।

सं० मृत–(मृ=मरना) र्म्म० पु० मरा हुआ, मुआ, मरा, मुर्दार, पु० मरण, मरना, मौत ।

सं०मृतक–(मृ=मरना)क०पु०मुर्दा, मरा, लोथ, मरा हुआ शरीर ।

सं०मृतसंजीवनी–स्त्री० विद्याभेद, औषधभेद ।

सं० मृत्तिका–(मृद्=चूर २ करना वा मलना) स्त्री० मिट्टी, मट्टी ।

सं० मृत्यु–(मृ=मरना) स्त्री० मौत, मरण, काल, २ यम, जम, कज़ा ।

सं० मृत्युञ्जय–(मृत्यु=मौत को जय=जीतनेवाला,जि=जीतना) पु० शिव, महादेव ।

सं० मृत्युनाशक–क० पु० अमृत, पाराधातु का रस ।

सं० मृत्युपुष्प–पु० इक्षु, ऊंख,गन्ना फूलने से ख़राब जाता है ।

सं० मृत्सा, मृत्स्ना } स्त्री० प्रशस्तमृत्तिका,श्रेष्ठ मट्टी,२ तुम्बी, लौकी।

सं० मृदंग–(मृदु=पीटना) पु० स्त्री० ढोलक, तबलक, एक तरह

का बाजा, पटह ।

सं० मृदु–(मृदु=मलना)गु०कोमल, नर्म, नम्र, मुलायम ।

सं० मृदुता–(मृदु)भा० स्त्री० कोमलता, नरमाई, मुलायमियत ।

सं० मृदुल–(मृदु=मलना) गु० कोमल, नर्म, नम्र ।

सं० मृषा–(मृष्=सहना) क्रि०वि० झूठ, मिथ्या, वृथा, झूठमूठ, बेफायदह ।

सं० मृष्ट–शोधित, निर्मल, साफ़ ।

प्रा०मेंड–स्त्री०बांध,आड़,घेरा,पुश्ता।

प्रा० मेंडक–(सं० मण्डूक) पु० दादुर, बेंग ।

प्रा० मेंडुकीको जुकामहोना— बोल० यह बोलचाल छोटे और नीचे आदमी का घमण्ड जतलाने के लिये बोला जाता है ।

प्रा० मेंढ़ा / मेढ़ा (सं०मेण्ढ वा मेढ्र,मिह्=सींचना)पु० भेड़ा,मेष।

प्रा० मेंह / मेह (सं० मेघ) पु० बरषा, पानी,झड़ी,वृष्टि,बरसात।

सं० मेकलकन्यका / मेकलसुता (मेकल एक पहाड़, कन्यका वा सुता=बेटी)स्त्री०नर्मदा नदी ।

सं० मेखला–(मि=फेंकना) स्त्री० क्षुद्रघंटिका, करधनी, २ जनेऊ, ३ तलवार का परतला, ४ पहाड़ का उतार या ढाल, ५ नर्मदा नदी ।

सं० मेघ–(मिह्=सींचना) पु० बादल, घन, २ एक राक्षस का नाम, ३ एक राग का नाम ।

सं०मेघध्वनि–(मेघ+ध्वनि)स्त्री० बादलों का शब्द, गर्ज, गाज, बादलों का ऐसा शब्द ।

सं० मेघनाद–(मेघ+नाद,अर्थात् जिस का शब्द बादल कैसा हो) पु० रावण का बेटा, इन्द्रजित्, २ बादलोंका शब्द, ३ पलाशका पेड़, ४ वरुणदेवता ।

प्रा० मेघपति–(मेघ+पति) पु० बादलों का राजा, २ इन्द्र ।

प्रा० मेघबरण–(सं० मेघवर्ण, मेघ=बादल, वर्ण=रंग) गु० जिसका रंग बादलों के ऐसा हो ।

सं० मेघमाला–(मेघ+माला) स्त्री० बादलों का समूह ।

सं० मेचक–(मेच्=पाखण्ड करना) गु० काला, श्याम, पु० श्यामवर्ण, कालारंग, २ मेघ, ३ सुरमा, अञ्जन, ४ धुआं, ५ अन्धेरा, अन्धकार ।

प्रा० मेचकताई–(सं० मेचकता) भा० स्त्री० कालापन, कलास, श्यामता ।

सं० मेट–पु० गर्व, उन्मत्तता ।

अं०मेट–पु० कुलियोंका सर्दार ।

प्रा० मेटना—(मिटना) क्रि० स० मिटा डालना, धो डालना, छील डालना, उड़ा देना, मलमेट करना, नष्ट करना, सत्यानाश करना, लोप करना, काट डालना ।

अं०मेट्रीक्युलेशन—पु०इन्ट्रन्सका इम्तिहान ।

सं० मेढ़ (मिह्=सींचना) पु० मेघ, २ बकरा, भेड़ा, ३ लिंग ।

सं० मेथी—(मेथ्=काटना)स्त्री० एक सागका नाम ।

प्रा० मेद—(सं०मेदस्,मेद=मारना) स्त्री० गूदा, मज्जा, वसा, चर्बी, २ एक बीमारी जिसमें गले का अथवा और किसी जगह का मांस बहुत मोटा होकर लटक जाता है या एक गांठ सी होजाती है ।

सं० मेदिनी—(मेदस्=मेद, अर्थात् जो मधु कैटभ के मेद से बनी हुई है इसी से इसका नाम मेदिनी हुआ) स्त्री० धरती, पृथ्वी, भूमि, जमीन ।

सं० मेदुर—(मिद्+उर) गु० बहुत स्निग्ध, २ सांद्र, सघन, निविड़, घना, आच्छन्न, ढपाहुआ, ३ शीतल ।

सं० मेध—(मेध्=मारना) पु० यज्ञ, बलिदान ।

सं० मेधा—(मेध्=समझना) स्त्री० धारणवती बुद्धि, समझ, बूझ ।

सं० मेधाविन्, मेधावी (मेधा) गु० बुद्धिमान्, पण्डित, निपुण ।

सं० मेध्य—गु० पवित्र, पूत, पु० २ बकरा, ३ खैर, ४ जौ, ५ हल्दी, ६ गोरोचन ।

प्रा० मेमना—पु० बकरी का बच्चा ।

अं० मेमोरियल—गु० याददाश्त, अर्ज़दास्त, स्मारक ।

सं० मेरु—(मि=फेंकना, अर्थात् प्रकाश को फैलाना) पु० सुमेरु पहाड़ जो हिंदुओं के मत के अनुसार धरती के बीच में है ।

सं० मेल—(मिल्=मिलना) पु० मिलाप, एका, मिलना, संयोग, सम्बन्ध ।

सं० मेलक—क० पु० मेलकर्त्ता ।

सं० मेला—(मिल्=मिलना) पु० किसी जगहपर बहुत से आदमियों का इकट्ठा होना ।

प्रा० मेलाठेला—बो० बहुतसे आदमियों का इकट्ठा होना, भीड़ भाड़, रौला ।

सं० मेली—(मेल) क० पु० मिलापी, साथी, साझी, २ अलदी, पहराई ।

प्रा० मेवाती—पु० मेवात का रहने वाला ।

सं० मेष—(मिष्=सींचना) पु० मेढ़ा, २ पहला राशि ।

फ़ा० मेहतर—पु० भंगी, झाड़ूकश, गु० बुज़ुर्ग ।

फ़ा॰ मेहतरानी—स्त्री॰ भंगन, २ मठियारी।

सं॰ मेहन—(मिह्+अन, मिह=सींचना) भा॰ पु॰ लिङ्ग, शिश्न, मुतेन्द्रिय, २ वीर्यपात, मनीका गिर जाना, पेशाबकरना।

प्रा॰ मेहना—पु॰ ठठोली, ताना।

प्रा॰मेहनामारना—बो॰ ताना देना, बोलबोलना।

प्रा॰ मेहरिया—मनहरिया।

प्रा॰ मैका—(मायका) पु॰ मा का घर, नहिहर, पीहर।

सं॰ मैत्र—पु॰ मित्रता, २ अनुराधा नक्षत्र, ३ शौचक्रिया, गु॰ सफ़ाई।

सं॰ मैत्री—(मित्र) स्त्री॰ मित्राई, दोस्ती, प्यार, स्नेह।

सं॰ मैथिली—(मिथिला) स्त्री॰ तिरहुत के राजा जनक की बेटी, सीता, जानकी।

सं॰ मैथुन—(मिथुन=जोड़ा) पु॰ स्त्री पुरुष का मिलाप, रति, संगम, स्त्रीसंग, हमागोशी।

प्रा॰ मैना—स्त्री॰ एक पखेरूका नाम, शारिका, २ पार्वती की माता।

सं॰ मैनाक—(मेनका=हिमालय पहाड़ की स्त्री) पु॰ हिमालय पहाड़ का बेटा, एक पहाड़ का नाम जो इन्द्र के डर से समुद्र में जा रहा था (इसकी कथा रामायण में है)।

प्रा॰ मैया—(सं॰माता) स्त्री॰ मा, माई, महतारी, माता।

प्रा॰मैल—(सं॰मल) पु॰ मल, झाग, गाज, २ मुर्चा।

प्रा॰ मैला—(सं॰मलिन) गु॰ गँदला, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र, खराब।

प्रा॰ मो—सर्वना॰ मुझको, मुझे।

सं॰मोक्ष—(मोक्ष्=छूटजाना या मुक्ति पाना) स्त्री॰ मुक्ति, छुटकारा, संसार के दुःख से अथवा पापसे छूटजाना।

प्रा॰ मोखा—(मुख=मुँह) पु॰ एक छोटा छेद जिसकी राह से धुआं निकलता है और रोशनी और हवा आती है।

प्रा॰ मोगरा—(सं॰ मुद्गर मुद्=खुशी, गृ=निकालना) पु॰ एकतरह का फूल, नीलोफ़र, कुमोदनी।

प्रा॰ मोगरी—(सं॰मुद्गर) स्त्री॰ एक लकड़ी की बनी हुई भारी चीज़ जिसको कसरत करनेवाला उठाताहै, २ छत या कपड़ा कूटने की लकड़ी।

सं॰ मोघ—(मुह्=अचेत होना) गु॰ वृथा, बेफ़ायदा, निष्फल, झूठ।

प्रा॰ मोच—स्त्री॰ लचक, कचक, पचक।

सं॰मोचन—(मुच्=छोड़ना) भा॰ पु॰ छुटकारा, छुड़ाना, उद्धार, मुक्ति, क॰ पु॰ छुड़ानेवाला।

प्रा॰ मोचना—(सं॰मोचन) क्रि॰ स॰ छोड़ना, त्यागना, २ आंसू

डालना । [चमार ।

प्रा० मोची—पु० जूता बनानेवाला,

प्रा० मोट } स्त्री० गठरी, बस्ता, मो-
मोठ } टरी, पुलिंदा, गट्ठा, बोझा, २ जोड़, कुलजमा, ३ पानी निकालने का चमड़े का डोल ।

प्रा० मोटा—गु० स्थूल, पुष्ट, जिसके शरीर में बहुत मांस हो, भारी, बड़ा, २ गाढ़ा । [कुली ।

प्रा० मोटिया—पु० बोझाढोनेवाला,

प्रा० मोठ-पु० एकतरहकाअनाज जिस की दाल बनती है, घोड़ोंकादाना ।

प्रा० मोतिया—पु० एकफूलकानाम ।

प्रा० मोतियाबिन्द—(सं० मुक्ता-बिन्दु) पु० आंख की एक बीमारी जिसके होनेसे दिखाई नहीं देता ।

प्रा० मोती-(सं० मौक्तिक) पु० एकरत्न जो समुद्रमें सीपीके मुँहमें पैदाहोताहै ।

प्रा० मोतीकीसीआबउतरना—बोल० बेइज्जत होना, किसी का अपमान होना, अनादर होना ।

प्रा० मोतीकूटकरभरने-बोल० खूब चमकीला होना, (यह मुहावरा आंखके लिये बोला जाताहै) ।

प्रा० मोतीपिरोने—बोल० माला गूंथना, २ मिठासके साथ बोलना, ३ रोना । [मिठाई ।

प्रा० मोतीचूर—पु० एक तरह की

सं० मोद—(मुद्=प्रसन्न होना)पु० आनन्द, हर्ष, खुशी ।

सं० मोदक-(मुद्=प्रसन्न होना) क० पु० आनन्द करनेवाला, २ एक प्रकार का लड्डू ।

सं० मोदी—क० पु० बनियां, दूकानदार, बैपारी, महाजन, आनन्द करने वाला । [पखेरूका नाम ।

प्रा० मोर—(सं० मयूर) पु० एक

प्रा० मोरपंखी—स्त्री० एक तरह की नाव, बजरा ।

प्रा० मोरमुकुट—पु० मोरके ऐसा मुकुट, मोरपंख का मुकुट ।

प्रा० मोर } सर्वना० मेरा ।
मोरा }

प्रा० मोरचंग स्त्री० एकबाजेका नाम ।

प्रा० मोरछल—पु० एक तरह का चँवर जो मोरके पंखोंका बनता है ।

प्रा० मोरी—स्त्री० नाली, पनाली ।

प्रा० मोल—(सं० मूल्य) पु० भाव, क़ीमत, दाम,—मोल ठहराना, बोल० क़ीमत लगाना, निरख ठहराना, दाम ठहराना,—मोल तोल, बोल० भाव, निरख, क़ीमत—मोल बढ़ाना, बोल० क़ीमत चढ़ाना, भावबढ़ाना—मोल लेना बोल० बिसाहना, खरीदना—बिन मोल की चेरी, बोल० बेमोल लीहुई दासी, (यह बोल० बहुतही

अधीनी जतलाने के लिये बोला जाता है ।

सं० मोह–(मुह्=अचेत या अज्ञानी होना) पु० मूर्च्छा, बेहोशी, ग़शी । २ अज्ञानता, अविद्या, बेवक़ूफ़ी, ३ प्यार, माया, दया, दुलार, लाड़, स्नेह, छोह ।

प्रा० मोहमेंआना–बोल० अपने मित्र अथवा अपनी प्यारी के अचानक मिलने से अचेत होजाना ।

प्रा० मोहलेना–बोल० रिझाना, किसीका मन अपनीओर खींचलेना, लुभाना, वश करना, मंत्र फूंकना ।

सं० मोहन–(मुह्=मोहना) गु० मोहनेवाला, जिस के देखने से शरीर की सुधि न रहे, मनमाना, प्यारा, पु० श्रीकृष्ण का नाम २ मोहना, वश करना ।

सं० मोहनभोग-(मोहन=मनमाना, भोग=खाना) पु० शीरा, उत्तमभोजन।

सं० मोहनमाला–(मोहन+माला) स्त्री० एक तरह की माला जो सोनेके दाने और मूंगेकी बनती है।

प्रा० मोहना–(सं० मोहन) क्रि० स० वश करना, मनहरना, लुभाना, मन्त्र फूंकना, पसन्न करना ।

सं० मोहनी–(मोहन) क० स्त्री० मन हरनेवाली स्त्री, मोहनेवाली, रूपवती, मनोहर, सुन्दर ।

सं० मोहमय-गु० मिथ्या व झूठा ।

प्रा० मोहि–सर्वना० मुझको, मुझे ।

सं०मोही–क० पु० मुग्ध, अवाच्य ।

प्रा० मौ-(सं० मधु) पु० शहद, मधु ।

सं० मौक्तिक–(मुक्ता) पु० मोती ।

सं० मौञ्जी-स्त्री० मूंजकी करधनी, मेखला ।

प्रा० मौड़-(सं० मौलि) पु०सिहरा, मुकुट, मौर जो दुलहा के शिरपर बांधा जाताहै ।

सं० मौन-(मुनि) पु० चुप, चुप्पी, अवाक्, नहीं बोलना,––स्मृति में लिखाहै कि (१ पाखाने जाते, २ पिशाब करते, ३ स्त्रीप्रसंग करते, ४ दँतवन करते, ५ स्नान करते, ६खाना खाते) इन छः जगह मौन रहना चाहिये ।

सं०मौनी-(मौन) पु० एकतरहके मुनि जो सदा चुप रहते हैं, ऋषि, योगी ।

प्रा० मौर-पु० आम की मंजरी ।

प्रा० मौराना-क्रि० अ० आम के मौर का खिलना ।

सं० मौर्वी-स्त्री० ज्या, रोदा, धनुष की डोरी, चिल्ला ।

प्रा० मौलसरी-स्त्री० एक तरह के खुशबूदार फूलके पेड़ का नाम ।

सं० मौलि-(मूल) पु० किरीट, मुकुट, २ शिखा, चोटी, ३ शिर, ४ स्त्री० धरती, पृथ्वी।

प्रा० मौसी-स्त्री० मा की बहिन, (मौसी शब्द को देखो)।

सं० म्लान-कृ० पु० ग्लानियुक्त, उदासीन, लज्जित, मलीन, शुष्क, मुरझाया।

सं० म्लानि-(म्लै=उदास होना, वा मुरझाना) स्त्री० थकावट, थकान, २ मलिनता, मैलापन, ३ कुम्हलाना, मुरझाना, उदास होना।

सं० म्लिष्ट-गु० मलीन, ग्लानियुक्त, पु० अव्यक्तवचन, गद्गदवाक्।

सं० म्लेच्छ(म्लेच्छ्=अशुद्ध वा, बुरा बोलना या गँवारू बोली बोलना) पु० नीचजाति, वेलोग जिनकी बोली संस्कृत नहीं है और न वे हिन्दुओं के शास्त्रको मानते हैं, यह शब्द जङ्गलियों और दूसरी विलायत के लोगों के लिये बोलाजाता है, २ पापी।

(य)

सं० य-(य=जाना) पु० हवा, २ यश, कीर्ति, ३ मेल, योग, ४ सवारी, ५ गति गु० जानेवाला।

सं० यकृत्-पु० उदररोग, तापतिल्ली, प्लीहा, पिलही रोग।

सं० यक्ष-(यक्ष्=पूजना,) पु० गुह्यक देवता, कुबेरके नौकर।

सं० यक्ष्मन्, यक्ष्मा } क्षयीरोग, राजरोग, तपेदिक़।

सं० यजन-(यज्=पूजना) भा० पु० यज्ञ, पूजा।

सं० यजमान-(यज्=पूजना, या यज्ञ करना) कृ० पु० यज्ञकरने वाला, यजमान।

सं० यजुः-(यज्=पूजना) ण० पु० यजुर्वेद, दूसरा वेद।

सं० यज्ञ-(यज्=पूजना) पु० बलिदान, पूजा, होम, हवन, याग, २ विष्णुभगवान्।

सं० यज्ञसूत्र-(यज्ञ+सूत्र) पु० [जनेऊ।

सं० यज्ञोपवीत-(यज्ञ+उपवीत) पु० जनेऊ।

सं० यत्-अव्य० जो, जितना।

सं० यज्वा-(यज्=पूजना) कृ० पु० यज्ञ करनेवाला।

सं० यतः-अव्य० क्योंकि, यस्मात्।

प्रा० यतन-(सं० यत्न) पु० यतन, उपाय, तदबीर, हिक्मत।

सं० यति, यती } (यत्=यत्न करना मुक्ति के लिये) पु० संन्यासी, वैरागी, जैनियों का भिखारी।

सं० यन्ता, यन्तार } कृ० पु० सारथी, सूत, रथहाकनेवाला।

सं० यत्न-(यत्=यतन करना) पु०

यतन, उपाय, उद्योग, कोशिश, मिहनत, सावधानी ।

सं० यन्त्रित—कर्म० पु० बद्ध, कैद ।

सं० यत्र—(यद्=जो) क्रि० वि० जहां, जिस जगह ।

सं० यथा—(यद्=जो) क्रि० वि० जैसे, जिस प्रकार से, ज्यों, जिस रीति से, २ बराबर, तुल्य ।

सं० यथाकाम—क्रि० वि० यथेच्छम् २ अभिलाषा से अधिक ।

सं० यथायोग्य—(यथा=जैसा, योग्य=ठीक) क्रि० वि० जैसा चाहिये, जैसा ठीक है, जैसा उचित, यथोचित ।

सं० यथार्थ—(यथा=जैसा, अर्थ, अभिप्राय, मतलब) गु० ठीक, सत्य, सच, क्रि० वि० ठीक ठीक, हकीकतन्, जैसा चाहिये ।

सं० यथाशक्ति—(यथा=जैसी, या अनुसार, शक्ति=बल) क्रि० वि० जैसी सामर्थ्य हो, अपने बलके अनुसार, जितना हो सके, हत्तुल् इम्कान ।

सं० यथासाध्य—क्रि० वि० इच्छा पूर्वक, हत्तुल् इम्कान ।

सं० यथेच्छा } यथेच्छ } क्रि० वि० इच्छानुसार, दिलख़्वाह ।

सं० यथेच्छाचारिता—स्त्री० इच्छानुसार, मर्जीके माफ़िक ।

सं० यथेप्सित—क्रि० वि० यथेच्छ, इच्छानुसार, मनचाहा, हस्बदिलख़्वाह ।

सं० यथोचित—(यथा+उचित) क्रि० वि० जैसा चाहिये, यथायोग्य ।

प्रा० यदपि—(सं० यद्यपि) समुच्च० जोभी, जो ।

सं० यदा—(यद्=जो) क्रि० वि० जब, जिससमय ।

सं० यदि—(यद्=जो) क्रि० वि० जो ।

सं० यदु—पु० एक राजा का नाम जो राजा ययाति का बड़ा बेटा और श्रीकृष्ण का पुरुषा और चन्द्रवंशी राजाओं में पांचवां राजा था ।

सं० यदुकुल—(यदु+कुल) पु० यदु राजा का घराना, यदुवंश ।

सं० यदुनाथ } यदुपति } (यदु=यदुवंशियोंका, नाथ या पति मालिक) पु० श्रीकृष्ण ।

सं० यदुवंश—(यदु+वंश) पु० यदुकुल, यदु राजा का घराना ।

सं० यदुवंशी—(यदुवंश) पु० यदु के वंशके लोग, यादव ।

सं० यदृच्छा—(यत्+ऋच्छ+आ) स्त्री० स्वातंत्र्य, खुदराय ।

सं० यद्यपि—(यदि जो, अपि=भी) समुच्च० जोभी, यदपि । [ज्यों ।

सं० यद्वा—अव्य० पक्षान्तर बोधक,

सं० यन्त्र—(यन्त्रि, या यम्=रोकना)

कल, हर एक तरह का औ-जार या हथियार, २ बाजा, ३ तंत्रशास्त्र में अपने इष्ट देवता का चक्र, ४ टोटका, यंत्र, मंत्र, ५ ताला, कुफ़ल।

सं० यन्त्रणा-(यत्रि=रोकना या यम्=दंडदेना) स्त्री० दुःख, पीड़ा, क्लेश।

सं० यन्त्रस्थ-पु० जेरतबअ जो छप रहाहो, मुद्रित हो रहा।

सं० यन्त्रिका-(यत्रि=रोकना, बन्द करना) पु० ताला, कुफ़ल।

सं० यन्त्रित-(यत्रि=रोकना) कर्म० पु० रोका हुआ, बंध किया हुआ, मुक़ैय्यद।

सं० यम-(यम्=रोकना, दंडदेना, वश करना या दबाना) पु० यमराज, धर्मराज, दक्षिणदिशा का दिक्-पाल, काल, २ इन्द्रियों को रोक-ना, गु० जोड़ा।

सं० यमक-(यम्=मिलना) पु० जोड़ा २ एक शब्दालंकार जहां एकही पद दो तीन बार आते हैं पर वहां उस पद का अर्थ हर एक जगह जुदा २ होता है।

प्रा० यमगुफा-(सं० यमगुहा) स्त्री० मौत का घर, काल की गुफा।

सं० यमज-(यम=जोड़ा, ज=पैदा) पु० जो दो लड़के एक साथ जन्मे हों, तौअम।

सं० यमदग्नि-पु० परशुराम जी का बाप।

प्रा० यमदिया-(सं० यमदीपक) पु० वह दीपक जो कार्तिकबदी १३ के दिन यम के नाम से जला या जाता है। [केदूत।

सं० यमदूत-(यम+दूत) पु० यम

सं० यमधार-(यम+धार) स्त्री० कटार, छुरा, तेग़ा, तलवार।

सं० यमल-(यम=जोड़ा, ला=लेना) पु० जोड़ा।

सं० यमलार्जुन-(यमल=जोड़ा, अर्जुन एक प्रकार का पेड़) पु० एक तरह के दो पेड़ जो वृन्दावन में थे कुवेर के दो लड़के जो वारुणी मदिरा को पीकर गंगा में वेश्या ओं के साथ नग्नस्नान करते थे नारद के शाप से वृक्ष होगयेथे कृष्ण जी महाराज ने उन को वृक्षत्व से मुक्त किया।

सं० यमुना-(यम) स्त्री० यमुना नदी जो यमराजकी बहिन और सूर्य की बेटी है।

सं० ययाति-(य=हवा, या=जाना जो हवा के तरह सब जगह जासक्ता हो) पु० नहुष राजा का बेटा।

सं० यव-(यु=मिलना) पु० जौ, एक तरह का अनाज, २ वेग, तेज़ी।

सं० यवन–(यु=मिलना, वा जु=उतावला होना) पु० पहले समय में यूनान या (आयोनिया) के रहने वालों को यवन कहते थे पर अब मुसलमान और फरंगी आदि सब विदेशियों को यवन कहते हैं, म्लेच्छ, मलेच्छ।

सं० यवीयान् यविष्ठ } गु० अतियुवा, अति शीघ्रगामी, तेजरौ।

सं० यश–(यशस्, अश्=फैलना) पु० कीर्त्ति, नामवरी, नाम, ख्याति, शुहरत।

सं० यशस्वी–(यशस्) गु० नामी, नामवर, प्रतिष्ठित, मुअज्जिज।

सं० यशोदा–(यशस्=यश, दा=देना) स्त्री० जसोदा शब्द को देखो।

प्रा० यहां–(सं० इह) क्रि० वि० इस जगह, इस ठौर, इधर।

प्रा० यहांकायहीं–बोल० ठीक इसी जगह।

प्रा० या–सर्वना० यह, २ इसका।

सं० याग–(यज्=पूजना) भा० पु० यज्ञ, होम, हवन, पूजा, बलिदान।

सं० याचक–(याच्=मांगना) क० पु० मांगनेवाला, मंगता, याचक, भिखारी।

सं० याचना–(याच्=मांगना) भा० स्त्री० भीख मांगना, चाहना, अभ्यर्थना, दरख़्वास्त करना।

सं० याञ्चा–भा० स्त्री० याचना, मांगना, दरख़्वास्त।

सं० याचित–(याच्=मांगना) र्म्म० पु० मांगा हुआ, चाहता हुआ।

सं० याजक–(यज्=यज्ञ करना, वा पूजना) पु० यज्ञ कराने वाला, पुजारी, पुरोहित। [पूजा कराना।

सं० याजन–भा० पु० यज्ञकराना,

सं० यात-र्म्म० पु० गत, गया।

सं० यातना–(यत्=दंडदेना, दुःख देना) स्त्री० नरक का दुःख, पीड़ा, क्लेश, बड़ा भारी दुःख।

सं० याता-क० पु० जाने व चलनेवाला।

सं० यातु–(या=चलना) पु० राक्षस, गु० चलने वाला।

सं० यातुधान–(यातु=ऐसा, धा=रखना, अर्थात् कहलाना) पु० राक्षस, निशाचर, दैत्य, असुर।

सं० यात्रा–(या=जाना) स्त्री० यात्रा तीर्थ को जाना, २ सफ़र जाना, जियारत, कूच, प्रस्थान, बिदा, ३ कोई पर्व अथवा उत्सव जिसमें देवताकी मूर्त्तिकोरथ आदिमें बैठाकर बाहर लेजातेहैं जैसेरथयात्रा आदि।

सं० यात्रिक यात्री } (यात्रा) क० पु० यात्रा करनेवाला, यात्री, जियारती, तीर्थ करनेवाला।

सं० यादव–(यदु) पु० यदुवंश के लोग, यदुवंशी, २ श्रीकृष्ण।

सं० यादवपति–(यादव+पति) पु०

श्रीकृष्ण, यदुनाथ, यदुपति ।

सं०यादृश—क्रि०वि० जैसा, जैसी, जिसके समान ।

सं०यान—(या=जाना) गु० पु० वाहन, सवारी, असवारी जैसे हाथी घोड़ा रथ, पालकी आदि ।

सं०याम—(यम्=थींतना, रोकना) पु० पहर, रात्रि दिनका अष्टमांश ।

सं०यामिक—क०पु० पहरू, चौकीदार।

सं०यामिनी—(याम) स्त्री० रात, रात्री, रजनी, शब, निहार ।

सं०यामिनीपति—(यामिनी + पति) पु० चांद, चन्द्रमा, चन्द्र ।

सं०यावज्जीवन—(यावत् + जीवन) क्रि० वि० जीने तक, जीने के अन्तक तक ।

सं०यावत्—(यत्=जो) क्रि० वि० जबतक, जबलग, २ जितना ।

सं०यावनीभाषा—(यावनी=यवनों की, भाषा=बोली) स्त्री० यवनों की बोली ।

प्रा०याहि / याही—सर्वना० इसको, इसे ।

सं०युक्त—(युज्=मिलना) क० पु० मिलाहुआ, जुड़ाहुआ, लगाहुआ, २ योग्य, उचित, ठीक ।

सं०युक्ति—(युज्=मिलना) भा० स्त्री० मिलना, मेल, २ योग्यता, ३ चतुराई, गुण, रीति, हथौटी, लोक व्यवहार ।

सं०युग-(युज्=मिलना, वा मिलाना) पु० जोड़ा, २ समय, युग,—हिन्दू चारयुग मानते हैं, (१ सत्ययुग १७२८००० बरसों का, २ त्रेता युग १२९६००० बरसों का, ३ द्वापर ८६४००० बरसों का, और ४ कलियुग ४३२००० बरसोंका)

सं०युगल—(युग्=जोड़ा, ला=लेना) पु० जोड़ा, दो ।

सं०युगान्त—(युग + अन्त) पु० युगका अन्त जिसमें सृष्टि का नाश होजाता है ।

सं०युगपत्—गु० दो, दोनों या एकदा, एकसमय, एकसाथ ।

सं०युग्म—(युज्=मिलना वा मिलाना) पु० जोड़ा, युगल, दो ।

सं०युत्—(यु=मिलना वा मिलाना) गु० मिलाहुआ, युक्त, संयुक्त, शामिल, विशिष्ट,—जैसे श्रीयुत, धर्मयुत ।

सं०युद्ध / युध्—(युध्=लड़ना) पु० लड़ाई, संग्राम, विवाद, जंग, कारज़ार ।

सं०युद्धनिदेश—पु० पैगाम जंग, लड़ाई का संदेसा ।

सं०युद्धशय्या—स्त्री० जंगकी तैयारी, लड़ने को उद्यतहोना ।

सं०युधान—क०पु० संग्रामकारी, जंगी।

सं०युधिष्ठर—(युधि=लड़ाई में, स्थिर=ठहरनेवाला) पु० पांच

पांडवों मेंका बड़ा, कुन्ती और पांडु का बड़ा बेटा ।

अं० युनाइटेडस्टेट्स } स्त्री० स-
युनाइटेडकिङ्गडम } म्मिलित राज्य, सल्तनत मुश्तरिका ।

सं० युवक } पु० तरुण, जवान न-
युवाक } वीन अवस्थावाला ।

सं० युवती–(युवन्, यु=मिलना) स्त्री० जवान स्त्री, यौवनवती, तरुणी, सोलह बरस से तीसबरस तक की स्त्री ।

सं०युवराज–(युवन्=जवान,राजा) पु० राजाका बड़ा बेटा जो उसके पीछे राजा होता है, राजकुमार, राजाका वारिस, वली अहद ।

सं०युवा–(युवन्,यु=मिलना) पु० जवान, तरुण, सोलह बरस से अधिक उमरका ।

सं०युस्मद्–सर्वना० त्वत्, तुम ।

प्रा०यूं } क्रि०वि० इसतरह से, ऐसे,
यों } योंहीं, बोल० इसीतरहसे, ऐसेही, संयोग से, २ वृथा, बे फ़ायदह, बिन कारण, सहज में, आसानी से ।

सं०यूथ–(यु=मिलना) पु० झुण्ड, समूह, जत्था ।

सं०यूथप–यूथ=समूह, पा=पालना) पु०सेनापति, सेनाका मालिक ।

प्रा०यूहा–(सं०यूथ)पु० समूह, झुण्ड।

सं०यूप–पु० स्तम्भ,खम्भा ।

सं०योग–(युज्=मिलना) भा०पु० मेल, मिलाप, मिलाव, सम्बन्ध, लगन, संयोग, जोड़, २अच्छासमय, शुभ घड़ी, ३ समाधि, ध्यान,परमेश्वर में मनलगाना, तप, तपस्या ।

सं० योगनिद्रा–(योग=ध्यान, निद्रा=नींद) स्त्री० विष्णुकी नींद, महामाया, दुर्गा ।

सं०योगमाया–(योग, ध्यान, माया =ईश्वर की शक्ति) स्त्री० विष्णुकी माया, महामाया, कुदरत खुदाई ।

सं०योगरूढ़ } पु० जो शब्द दो
योगरूढ़ि } शब्दों से बनाहो और सामान्य अर्थ को छोड़ विशेष अर्थ को बतावे जैसे पङ्कज,त्रिशूलपाणि ।

सं०योगिनी–(युज्=मिलना, वा मिलाना) स्त्री०शक्ति, नारायणी, योगी, शाकम्भरी, भीमा,चामुण्डापार्वती,भद्रकाली, रुद्राणी,दुर्गाआदि ६४ योगिनी प्रसिद्धहैं,२ज्योतिष में अच्छे बुरे को जतलानेवाली।

सं०योगी–(योग)क० पु० ध्यानी, तपस्वी, संन्यासी ।

सं०योगेश्वर–(योग=ध्यान वा तप ईश्वर=स्वामी अर्थात् जिसके लिये योगीतपस्या करतेहैं) पु० परमेश्वर, ईश्वर,२बड़ा ऋषि, सिद्ध, योगीश, तपस्वी ।

सं० योग्य—(युज्=मिलना, वा मिलाना) गु० ठीक, उचित, चाहिये, उपयुक्त, संभव, २ निपुण, प्रवीण, लाइक, लायक, चतुर, गुणी, ३ समर्थ ।

सं० योग्यता—(योग्य) भा० स्त्री० लियाक़त, प्रवीणता, निपुणता, सामर्थ्य ।

सं० योजक—(युज्+अक) क०पु० मिलानेवाला ।

सं० योजन—(युज्=मिलना, वा मिलाना) पु० चार कोस ।

सं० योजना—(युज्=मिलना)भा० स्त्री० मिलाना, जोड़ना, मेल ।

सं० योधन—भा० पु० अस्त्र ।

सं० योद्धा—(युध्=लड़ना) क०पु० लड़ाका, शूरमा, सावंत, भट, वीर, बहादुर, लड़नेवाला ।

प्रा० योधा—(सं०योध,युध्=लड़ना) पु० लड़ाका, वीर ।

सं० योनि—(यु=मिलना)स्त्री० भग, पैदा होने की जगह, उत्पत्तिस्थान, जायतवल्लुद ।

सं० योषा, योषित, योषिता—(युष=सेवना, जो पुरुषों से पोषणकी जाती है) स्त्री० नारी, लुगाई, स्त्री, अबला, अंगना ।

सं० यौगिक—(योग)गु० दो शब्दों से बना हुआ शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योगसे बनाहुआ शब्द ।

सं० यौतक, यौतुक—(युतक,यु=मिलना) पु० दहेज, दैजा, ब्याह में बेटी का बाप अपनी बेटी को जो धन और कपड़ा आदि देता है ।

सं० यौवनदशा—स्त्री० यौवनावस्था, जवानी की हालत ।

सं० यौवन—(युवन्=जवान) भा० पु० जवानी, तरुणाई ।

सं० यौवनवती—(यौवन=जवानी, वती=वाली) स्त्री० जवानस्त्री ।

—०—

(र)

सं० र—(रा=देना, या=लेना) पु० आग, २ कामदेव की आग, कामाग्नि, ३ तीक्ष्ण, तेज़, तीखा, ४ वेग, ५ क्रोध ।

प्रा० रई—स्त्री० दही मथनेकी लकड़ी मथनी, बिलोनी ।

प्रा० रँहट, रहट—पु० पानी निकालने की चर्खी ।

सं० रक्त—(रञ्ज=रंगना) पु० लोहू, रुधिर, शोणित, कुंकुम, केसर, तांबा, गु० लाल ।

सं० रक्तकन्द—पु० पलाण्ड, प्याज, २ गाजर, ३ प्रवाल, मूंगा ।

प्रा० रक्तकोढ़—(सं०रक्तकुष्ठ) पु०

एक तरह का कोढ़ जिससे शरीर लाल हो जाता है ।

सं० रक्तघ्न—पु० लोहितक वृक्ष, लोध औषध, २ दूब ।

सं० रक्तचन्दन—(रक्त+चन्दन) पु० लाल चन्दन । [सिन्दूर ।

सं० रक्तचूर्ण—(रक्त+चूर्ण) पु०

सं० रक्तप—(पा=पीना) क० पु० राक्षस, खटमल, मच्छड़ ।

सं० रक्तपा—(रक्त=लोहू, पा=पीना) स्त्री० जोंक, जलौका ।

सं० रक्तपात—(रक्त=लोहू, पत्= गिरना) पु० लोहू का गिरना, हत्या, खून ।

सं० रक्तबीज—(रक्त=लोहू, बीज =पैदा होना) पु० एक राक्षस का नाम जो शुम्भ निशुम्भका सेनापति था जिसको दुर्गाने मारा, २ (रक्त= लाल, बीज=दाना) दाड़िम, अनार।

सं० रक्षक—(रक्ष्=बचाना) क०पु० रक्षा करनेवाला, पालनेवाला, पालक, पोषक, स्वामी, मालिक, मुहाफिज ।

सं० रक्षण—(रक्ष्=बचाना) भा० पु० रक्षा, पालन, पोषण, बचाव ।

सं० रक्षस्—(रक्ष्=बचाना, जिससे होम की सामग्री को बचाना, या जिससे अपनेको बचाना)पु० राक्षस निशाचर, भूत ।

सं० रक्षा—(रक्ष्=बचाना) स्त्री०ब- चाव, पालन, उद्धार, २ राख, ३ राखी ।

सं० रक्षापेक्षक—(रक्षा+अपेक्षक) क०पु०द्वारपाल,डेवढीदार,सिपाही।

सं० रक्षित—(रक्ष्=बचाना) र्म० पु० रक्षा कियाहुआ, बचाया हुआ, रक्खा हुआ ।

प्रा० रखना—(सं० रक्षण) क्रि० स० धरना, लगाना, खड़ा करना, टिकाना, बिठलाना, २ पकड़ना, अधिकारी होना, मालिक होना, ३ बचाना, रक्षाकरना, ४ विचारना, सोचना ।

प्रा० रखवाला—(रखना) क० पु० रखवाली करनेवाला, बचाने वा- ला, गड़रिया, चरवाहा ।

प्रा० रखवाली—(रखना) भा०स्त्री० बचाव, रक्षा, खबरदारी ।

प्रा० रखैया—(रखना) क० पु० रखनेवाला ।

प्रा०रगड़—(रगड़ना)भा०स्त्री० घि- साव, संघर्ष, मलाव । [घिसना ।

प्रा० रगड़ना—क्रि० स० मलना,

प्रा० रगड़ा—पु०झगड़ा,२ घिसाव।

प्रा०रगड़ाझगड़ा—बोल० लड़ाई, दंगा, बखेड़ा, फसाद ।

प्रा० रगेदना—क्रि० स० खदेड़ना, पीछा करना, भगादेना ।

सं० रघु—(रघि वा लघि=जाना, जो धरती के अन्त तक अपनी जीत को फैलाता है) पु० एक सूर्यवंशी राजा का नाम जो दिलीप राजा का बेटा, और श्रीरामचन्द्रका परदादा था, २ रघु का वंश ।

सं० रघुनन्दन—(रघु=रघुवंशियोंको नन्दन=आनन्द देनेवाला) कृ० पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुनाथ—(रघु+नाथ) पु० श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुपति—(रघु+पति) पु० श्रीरामचन्द्र । [श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुराज—(रघु+राजा) पु०

सं० रघुवंश—(रघु+वंश) पु० रघु राजा का कुल, २ कालीदास कवि का बनाया हुआ एक प्रसिद्ध काव्य जिस में राजा दिलीप से लेकर राजा अग्निवर्ण तक का वर्णन किया है ।

सं० रघुवंशतिलक } (रघुवंश, रघु रघुकुलतिलक } राजा के कुल में तिलक=श्रेष्ठ) पु० राजा दशरथ २ श्रीरामचन्द्र ।

सं० रघुवर—(रघु=रघुवंशियों में, वर =श्रेष्ठ) पु० श्रीरामचन्द्र, रघुनाथ ।

सं० रङ्क—(रक्=स्वाद लेना, या पाना) गु० गरीब, कंगाल, दरिद्री, २ कृपण, लालची, लोभी ।

सं० रङ्ग—(रञ्ज्=रंगना) पु० वर्ण, २ डौल, रीत, ढंग, ढब, ३ खेल, खुशी, आनन्द, ४ (रगि=जाना, वा पाना) रांगा धातु ।

प्रा० रंगउड़जाना—बोल० रङ्ग बदल जाना, डरना ।

प्रा० रंगउतरजाना—बोल० पीला, होजाना, फीका होना, २ शोच में होना, कुढ़ना, कलपना ।

प्रा० रंगकरना—बोल० खुशीकरना, विलसना, समय को आनन्द में बिताना ।

प्रा० रंगचढ़ना—बोल० शराब के नशे में मगन होना ।

प्रा० रंगदेखना—बोल० किसीचीज़ की हालत को, या उसके फल अथवा अन्त या परिणाम को जानना ।

प्रा० रंगबरंग(सं० रङ्ग विरङ्ग)बोल० रंग रंग का, कई रंग का, चित्र विचित्र, तरह २ का, भांति भांतिका ।

प्रा० रंगबिगड़ना—बोल० किसी चीज़ की हालत बदलना ।

प्रा० रंगभंग—बोल० आनन्द में बिगाड़ होना, खेल का बिगाड़, खुशी में शोच होजाना ।

प्रा० रंगमहल—पु० भोगविलासकरने का महल । [खेल जीतना ।

प्रा० रंगमारना—बोल० चौपड़ का

प्रा० रंगरलियां—स्त्री० ब० व० आ-

नन्द, हर्ष, खुशी, रंगरस, हँसी खुशी, हुलास, भोगबिलास।

प्रा० रंगरस–(सं० रङ्ग+रस) बोल० आनन्द, हर्ष, सुख, खुशी।

प्रा० रंगरातना–बोल० खूब गहरा प्यार होना।

प्रा० रंगराता–बोल० रंग में रंगा हुआ, प्रसन्न, आनन्दित।

प्रा० रंगरूप–(सं० रंग+रूप) बोल० चमक दमक, छबि, हुस्न, जमाल।

प्रा० रंगलगाना–बोल० रंगना, रंग चढ़ाना, २ झगड़ा उठाना, बखेड़ा मचाना। [शोभा, हुस्न।

प्रा० रंगत–(रङ्ग) स्त्री० रंग, वर्ण,

प्रा० रंगना–(सं० रञ्जन) क्रि० स० रंग चढ़ाना, रंग देना।

सं० रंगभूमि–(रंग+भूमि) स्त्री० नाच घर, अखाड़ा, नाट्यशाला, रंगशाला, मनुषयज्ञ की भूमि।

प्रा० रंगवाई } रंगाई } (रंगाना) स्त्री० रंगनेकी मजूरी।

प्रा० रंगीला–(रंग) गु० चटकीला, भड़कीला, रसीला, रसिया, रसिक, छैला।

प्रा० रचना–(सं० रचन, रच्=बनाना) क्रि० स० बनाना, नई बात निकालना, सिरजना, पैदा करना, तैयार करना, २ क्रि० अ० बनना, पैदा होना, तैयार होना।

सं० रचक–(रच्+अक) क० पु० बनानेवाला, मुसन्निफ़, उत्पादक।

सं० रचना–(रच्=बनाना) स्त्री० तसनीफ़, बनावट, सजावट, तैयारी, २ पैदाकीहुई चीज़, ३ ग्रन्थ।

सं० रचयिता–क० पु० निर्म्माणक, रचनेवाला, मुसन्निफ़।

प्रा० रचाना–(सं० रच्=बनाना, या रञ्ज=रंगना) क्रि० स० करना, बनाना, २ मेंहदी से अथवा अलता आदि और किसी चीज़ से हाथ पैर रंगना, ३ ब्याह आदि शुभ काम को शुरूअ करना।

सं० रचित–(रच्=बनाना) कर्म० पु० बनाया हुआ, सिरजा हुआ, पैदा कियाहुआ, निर्मित।

सं० रज } रजस् } (रञ्ज्=रंगना) स्त्री० रेत, धूलि, २ पराग, फूलों की सुगंधित धूलि, ३ स्त्रीका कँवल या फूल, ४ रजोगुण। [पु० धोबी।

सं० रजक–(रञ्ज=रंगना) क०

सं० रजकी–(रजक) स्त्री० धोबिन।

सं० रजकण–पु० धूलिकण।

सं० रजत–(रञ्ज=रंगना, वा चमकना, या राज्=शोभना) पु० चांदी, रूपा, २ हाथी दांत, ३ हार, ४ सोना, गु० धौला, शुक्ल वर्ण, श्वेत, सफ़ेद।

संं० रजतद्युति–पु० महावीर गु० गौरवर्ण, श्वेतवर्ण ।

सं० रजन–भा० पु० रागोत्पादन, रंगना, रँगसाजी ।

सं० रजनि }
रजनी } (रञ्ज्=प्यारकरना) स्त्री० रात, रात्रि ।

सं० रजनिकर }
रजनीकर } (रजनी=रात, कृ=करना) पु० चांद, चन्द्रमा ।

सं० रजनिचर }
रजनीचर } (रजनी=रात, चर्=चलना) पु० राक्षस, असुर, निशाचर, २ भूत, प्रेत, ३ चोर, ४ रातको फिरनेवाला ।

सं० रजनीजल–पु० तुषार, ओस, नीहार, कुहरा ।

सं० रजनीमुख–(रजनी=राति, मुख=मुंह) पु० सांझ, संध्या, प्रदोष, राति का प्रारम्भ, सफ़क़ ।

प्रा० रजवाड़ा–(राजा) पु० राज, राजपूताना ।

सं० रजस्वला–(रजस्) स्त्री० वह स्त्री जो कपड़ों से हो, ऋतुमती ।

प्रा० रजाई }
रजायसु } (सं० राजादेश, राज=राजा, आदेश=आज्ञा) स्त्री० राजा की आज्ञा, राजा का हुकम ।

सं० रजोगुण–(रजस्+गुण) पु० दूसरा गुण जिससे मोह, क्रोध प्यार, अहंकार आदि पैदा होते हैं ।

सं० रजोग्राहि–क० पु० वायु, वात, हवा ।

सं० रज्जु–(सृज्=पैदा होना, या बनाया जाना) स्त्री० रस्सी, रास डोरी, जेवरी ।

सं० रञ्जक–(रञ्ज्=प्यार करना, वा रंगना) क० पु० प्यारकरनेवाला, प्रीति करनेवाला खुशकरनेवाला, प्रसन्नकरनेवाला, २ रंगनेवाला, चित्रकार, ३ पु० रंग ।

सं० रञ्ज–पु० रंजन, रंगना, रंगसाज़ी, रंग, राग ।

सं० रञ्जन–(रञ्ज्=प्यार करना, वा रंगना) भा० पु० प्रसन्नता, प्यार, अनुराग, २ रंगना, रँगावट, चित्रकारी, ३ लालचन्दन, गु० प्रीति करनेवाला, प्रसन्नकरनेवाला, खुश करनेवाला, हर्षदेनेवाला ।

सं० रञ्जित–(रञ्ज्=प्यारकरना वा रंगना) र्म० पु० प्रसन्न, प्यार किया हुआ, २ रंगा हुआ ।

सं० रटन–भा० पु० घोषणा, रटना यादकरना ।

प्रा० रटना–(सं० रटन, रट्=बोलना) क्रि० स० बोलना, कहना, बराबर बोलना, दोहराना, तिहराना ।

सं० रटित–र्म० पु० घोषित, याद किया हुआ ।

सं० रण–(रण्=शब्द करना) पु०

लड़ाई, युद्ध, जंग, संग्राम, ध्वनि, शब्द, पर्यटन, भ्रमण ।

सं० रणभूमि--(रण+भूमि) स्त्री० रणक्षेत्र, लड़ाईका खेत, लड़ाई का मैदान ।

सं० रणित--(रण्=शब्द करना) कर्म० बजता हुआ, बजती हुई ।

प्रा० रंडापा--(रांड) भा० पु० बेवापन, विधवापन ।

सं० रत--(रम्=खेलना) पु० मैथुन, स्त्री प्रसंग, कामकेलि, कर्म० लगा हुआ, तत्पर, आसक्त ।

सं० रततालिन्--पु० अध्यापक, उस्ताद, २ कामुक, भडुआ, परस्त्रीगामी।

सं० रतताली--स्त्री० कुटनी, पुंश्चली ।

प्रा० रतन--पु० रत्नशब्दको देखो ।

प्रा० रतनार--(सं० रक्त) पु० लाल रंग, गु० लाल ।

सं० रतहिण्डक--पु० वेश्यापति, लंपट, कामुक ।

प्रा० रतालू--(सं० रक्तालु, रक्त=आलू) पु० एक तरकारी का नाम ।

सं० रति -(रम्=खेलना) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ प्यार प्रेम, अनुराग, ३ मैथुन, सम्भोग, स्त्री संग, क्रीड़ा । [कामदेव ।

सं० रतिपति--(रति+पति) पु०

प्रा० रती -(सं० रति) स्त्री० कामदेव की स्त्री, २ भाग्य, भाग, क़िस्मत, नसीब ।

प्रा० रतीचमकना--बोल० बढ़ना, फलना फूलना, भाग्यवान् होना ।

प्रा० रतीवन्त--गु० भाग्यवान्, भलच्छी, अच्छी क़िस्मतवाला ।

प्रा० रतौंधा--(रत=रात, औंधा= अन्धा) पु० एकबीमारी जिस में रातको नहीं दीखताहै ।

प्रा० रत्ती--(सं० रक्तिका, रक्त) स्त्री० आठ जौ का तौल, २ लाल घुंगची ।

सं० रत्न--(रम्=खेलना जिस से वा प्रसन्न होना, जिसको देखकर) पु० रतन, जवाहिर, मणि, बहुत मोल का पत्थर--रत्न नौ हैं--(१ हीरा, २ पन्ना, ३ नीलम, ४ माणिक, ५ लहसुनिया, ६ पुखराज, ७ गोमेद, ८ मोती, ९ मूंगा) २ आंख की पुतली ।

सं० रत्नकन्दल--पु० प्रवाल, मूंगा।

सं० रत्नगर्भ--पु० समुद्र, कुबेर, परमेश्वर, स्त्री० पृथिवी ।

सं० रत्नजटित--(रत्न+जटित) कर्म० पु० रत्नों से जड़ा हुआ ।

सं० रत्नसानु--पु० सुमेरु पर्वत ।

सं० रत्नसिंहासन--(रत्न+सिंहासन पु० रत्नों से जड़ा हुआ तख़्त ।

सं० रत्नसू--(सू=उत्पन्न करना) स्त्री० मेदिनी, पृथिवी, जमीन ।

सं० रत्नाकर—(रत्न=जवाहिर, अथवा मोती, आकर=खानि) पु० समुद्र, २ रत्नों की खानि।

सं० रत्नावली—(रत्न+आवली) स्त्री० रत्नों की माला, रत्नमाला, २ एक नाटक।

सं० रथ—(रम्=खेलना, प्रसन्न होना) पु० एक तरह की चार पहियों की गाड़ी।

सं० रथकार—क० पु० रथ बनाने वाला, बढ़ई, सूत्रधार, वर्णसंकर, क्षत्री से वैश्य कन्या में उत्पन्न उस को माहिष्य कहते हैं वैश्य से शूद्र कन्या में जन्मा उसे करण कहते हैं माहिष्य से करण संज्ञावती कन्या में उत्पन्न पुत्र उसे रथकार कहते हैं।

सं० रथगर्भक—क० पु० कांधे की सवारी, शिविका, पालकी, डोली।

सं० रथगुप्ति—स्त्री० रथ का परदा, रथ का ओहार, पोशिश, परदा।

सं० रथवान्—पु० सारथी।

सं० रथवाहक—क० पु० सारथी, यंतार।

सं० रथाङ्ग—(रथ+अंग) पु० पहिया चक्र, चाका, २ चक्र वा पक्षी, चक्रवाक।

सं० रथिक } रथी } (रथ) क० पु० रथ का स्वामी, रथ पर चढ़ने वाला, रथपर चढ़कर लड़नेवाला जनाज़ा, ताबूत मुर्दा, की टिकटी।

सं० रद } रदन } (रद्=टुकड़े करना) पु० दांत, दन्त, दशन, ३२ संख्या।

सं० रदनी—क० पु० हाथी।

सं० रदच्छद } रदनच्छद } (रद वा रदन=दांत छद्=ढकना) पु० होंठ, ओष्ठ, लब।

सं० रदपट—(रद=दांत, पट=आड़) पु० होंठ, लब।

प्रा० रद्दी—(अ० रद) स्त्री० निकम्मे और पुराने कागज़।

प्रा० रनवास } रनिवास } (रानीवास) पु० रानियों के रहने के महल।

सं० रन्ति—स्त्री० क्रीड़ा, प्रसन्नता, रमण, प्रीति। [२ कुक्कुर, कुत्ता।

सं० रन्तिदेव—पु० चन्द्रवंशी राजा,

प्रा० रन्धना—(सं० रन्धन, रध्= पकना) क्रि० अ० पकना।

सं० रन्ध्र—(रध्=नाशहोना, या पूरा होना) पु० छेद, छिद्र, सूराख, २ दोष, दूषण, ऐब।

प्रा० रपटना—क्रि० अ० फिसलना, खिसलना।

प्रा० रबड़ी—स्त्री० गाढ़ा दूध, खोवा।

सं० रभस—पु० हर्ष, वेग, तेज़ी, उत्सुकता।

सं० रमक—(रम्+अक, रम्=क्रीड़ा करना) कृ० पु० कामुकपति, परस्त्रीगामी, जार, गु० थोड़ा, कम।

प्रा० रमचेरा, रामचेरा—पु० दास, गुलाम।

सं० रमण—(रम्=खेलना) भा० पु० खेल, क्रीड़ा, २मैथुन, भोगबिलास, रति, ३ रमनेवाला, पति, प्रियतम, प्यारा, ४ कामदेव, जार, ५ मनोहर, ६ गर्द्दभ, पटोल की जड़।

सं० रमणी—(रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर और मनोहर स्त्री।

प्रा० रमणीक—(सं० रमणीय) गु० मनभावन, सुन्दर, सुहावना, दिलचस्प।

सं० रमणीय—(रम्=खेलना) कर्म० पु० सुन्दर, मनोहर, रम्य, दिलरुबा।

सं० रमति—कृ० पु० नायक, पति घूमनेवाला, घूमता है।

प्रा० रमना—(सं० रमण) क्रि० अ० खेलना, क्रीड़ा करना, भोगकरना, आनन्द करना, २ फिरना, घूमना, ३ पु० शिकार करने की जगह।

सं० रमल—(अ० रमल) पु० एक तरह का ज्योतिष शास्त्र।

सं० रमा—(रम्=खेलना) स्त्री० लक्ष्मी, विष्णुपत्नी, स्त्री, लुगाई।

सं० रमापति—(रमा+पति) पु० विष्णु, नारायण, भगवान्।

सं० रम्भा—(रभि=शब्द करना) स्त्री० एक अप्सराका नाम, वेश्या, २ केला, कदली, ३ पार्वती, ४ विलचा, खंता।

सं० रम्य—(रम्=खेलना) कृ० पु० सुन्दर, मनोहर, रमणीय।

सं० रम्या—स्त्री० रात्रि, सुन्दरी, पद्मिनी। [णोदय, शोभा।

सं० रम्र—पु० प्रारम्भ, पूर्वभाग, अरु-

सं० रय—(रय्=जाना) पु० वेग, प्रवाह, जल्दी, साहस। [करना।

प्रा० ररना—भा० पु० बोलना, शब्द

प्रा० रलना—क्रि० अ० मिलना, २ पिसना, बुकनी होना।

सं० रल्लक—कम्बल, पश्मकम्बल।

सं० रव—(रु=शब्दकरना) पु० शब्द, ध्वनि, आवाज़, आहट।

प्रा० रवा—पु० सोने या चांदी का छोटा छोटा दाना, २ बालू, और मिसरी आदिका दाना, ३ गेहूंकी मैदा से छानाहुआ दाना।

सं० रवि—(रु=शब्द करना, अर्थात् स्तुति करना) पु० सूर्य।

सं० रवितनया—(रवि+तनया) स्त्री० यमुना नदी।

सं० रविनन्दिनी—(रवि+नन्दिनी) स्त्री० यमुना नदी।

सं० रविपुत्र—पु० कर्ण, सुग्रीव।

सं० रविमणि—स्त्री० सूर्यकान्तिमणि, सूर्य की मणि।

सं०रविमण्डल–(रवि + मण्डल) पु० सूर्यमण्डल, सूर्यलोक।

सं०रविवार–(रवि=सूर्य,वार=दिन) पु० एतवार इतवार, आदित्यवार, सूर्य का दिन।

सं०रशना–(रश्=शब्द करना) स्त्री० जीभ, २ स्त्रियों के पहनने की करधनी।

सं०रश्मि–(अश्=फैलाना,वा रश्=शब्दकरना) स्त्री० किरण, तेज, कान्ति,२रास घोड़े की बागडोर।

सं०रस–(रस्=स्वाद लेना, प्यार करना) पु० अर्क, किसी पौधेका दूध, सार, २ स्वाद, सवाद, मज़ा, चाट, रुचि,—(रस छः प्रकार के हैं) १ मीठा, २ खट्टा, ३ खारा ४ कडुवा, ५ तीता वा चरपरा ६ कषैला, ३ साहित्य वा इल्म अदब में नौ रस हैं (१ शृङ्गार, २ हास्य, ३ करुणा, ४ रौद्र, ५ वीर, ६ भयानक, ७ बीभत्स ८ अद्भुत, ९ शान्त वा वात्सल्य) ४पारा, ५ मेल, मिलाप, आपस की प्रसन्नता, प्यार, ६ द्रव पदार्थ, बहने वाली चीज़।

प्रा०रसरस–क्रि० वि० धीरे धीरे।

सं०रसज्ञ–(रस=स्वाद,ज्ञा=जानना) क०पु०रसिक, रसका जाननेवाला, भाव जाननेवाला, सारजाननेवाला, पु०कवि २ पंडित, ३ रसायनी।

सं०रसज्ञा–(रस=स्वाद, ज्ञा=जानना) स्त्री० जीभ।

सं०रसन–भा० पु० स्वाद, लज्जत।

सं०रसना–(रस्=स्वाद लेना) स्त्री० जीभ, जिह्वा, रसज्ञा।

सं०रसराज–पु० पाराधातु।

सं०रसा–(रस) स्त्री० पृथ्वी, धरती, ज़मीन, २ जीभ।

सं०रसातल–(रसा=धरती, तल =नीचे) पु० पाताल, नीचे का सातवां लोक जहां नाग,असुर दैत्य और राक्षस रहते हैं, और शेषजी, और राजाबलि आदि राजकरतेहैं।

सं०रसायन–(रस=अर्क या पारा अयन=राह, वा जाना) पु० दो तीन चीज़ों को मिलाकर एकचीज़ बनाने की अथवा दो तीन चीज़ोंको जुदा २ करने की विद्या,कीमिया।

सं०रसायनविद्या—स्त्री० इल्म कीमिया, किमिस्ट्री।

सं०रसाल–(रस=स्वाद, आ=चारों ओर से, ला=लेना) पु० आम, २ पनस, ३ ऊख।

सं०रसिक–(रस) क०पु०रस जानने वाला, रसीला, रसिया, रसज्ञ २ लम्पट, लुच्चा, ऐयाश।

प्रा०रसिया–(सं० रसिक) गु० लुच्चा,लम्पट,विषयी,भोगी,ऐयाश।

प्रा०रसीला—(रस) गु० रसभरा । सुस्वादु, मजेदार, २ विषयी, व्यसनी, भोगी, लम्पट ।

सं०रसेन्द्र—(रस + इन्द्र) पु० पारा धातु रसराज ।

सं०रसोत्पल—(रस + उत्पल) पु० मुक्ताफल, मोती, २ पारसमणि, पारसपत्थर ।

प्रा०रसोइया—(रसोई) पु० रसोई बनानेवाला, खाना पकानेवाला ।

प्रा०रसोई—(सं० रसवती) वि० स्त्री० खाना बनाने की जगह, २ खाना, भोजन । (जेवरी ।

प्रा०रस्सी—(सं० रश्मि) स्त्री० डोरी,

प्रा०रहकला—पु० एक तरह की तोप, २ तांगा एकतरहकी गाड़ी ।

प्रा०रहटू—पु० छोटीगाड़ी ।

प्रा०रहन } (सं० रहण, रह्=जाना)
रहनि } स्त्री० चाल, चलन, रीति ।

सं०रंहस्—पु० बेग, तेजी ।

सं०रहस—पु० एकान्त, गोप्य, गुह्य, तत्त्व, अव्य० निर्जन, जनरहित, एकान्त, तनहाई, खिलवत ।

प्रा०रहस } (सं० रहस्य) क्रि०
रहसि } वि० एकान्तमें, तनहाई ।

सं०रहस्य—(रह=छोड़ना) पु० एकान्त, निर्जन, गुप्तवस्तु, गोपनीय, तत्पर ।

सं०रहित—(रह्=छोड़ना) र्म्म० पु० बिना छोड़ा हुआ, खाली, हीन, शून्य, वर्जित, त्यक्त, पृथक्, भिन्न ।

प्रा०राई—(सं० राजिका, राज् =चमकना) स्त्री० सरसोंकेऐसीचीज ।

प्रा०राई }
राऊ } (सं० राजा) पु० राजा, स्वामी, प्रधान, जैसे रघुराई, या रघुराऊ, और
राय } नन्दराय ।

प्रा०राउत—(सं० राजपुत्र) पु० सरदार, मालिक ।

प्रा०रांग } (सं० रंग) पु० एक
रांगा } धातु का नाम ।

प्रा०रांझन } (सं० रंजन) पु०
रांझा } प्रियतम, सज्जन, २ एक मनुष्य का नाम जो हीरका आशिक अर्थात् प्रियतमथा जिस का राजपूताने में होली के दिनोंमें स्वांग बनता है ।

प्रा०रांड—(सं० रण्डा) स्त्री० विधवा, जिस स्त्री का पति मरगया हो ।

प्रा०रांडकासांड—बोल० बिधवा लुगाई का बेटा, बिगड़ा हुआ लड़का ।

प्रा०रांधना—(सं० रन्धन, रन्ध =पकाना) क्रि० स० पकाना, रींधना ।

प्रा०रांपी—स्त्री० खुर्पी, करणी ।

प्रा०रांभना—(सं० रम्भन, रभि=

शब्दकरना) क्रि० अ०गायका शब्द करना, डँकारना, बिंबियाना ।

सं० राका-(रा=देना, सुख अथवा आनन्द को) स्त्री० पूनों,पूर्णमासी, २ नदी, ३ खजुली ४ प्रथम रजोवती स्त्री ।

सं० राकापति-(राका + पति) पु० पूर्णमासी का चांद ।

सं० राकेश-(राका+ईश) पु० पूर्णमासी का चन्द्रमा ।

सं० राक्षस-(रक्ष=बचाना जिससे होम की सामग्री को, अथवा अपने को) पु०असुर,निशिचर,रजनीचर ।

प्रा० राख-(सं० रक्षा,रक्ष=बचाना) स्त्री० भस्म, भभूत, खाक ।

प्रा० राखना-(सं० रक्षण) क्रि० स० रखना, धरना, बचाना ।

प्रा० राखी—(सं० रक्षिका, रक्ष=बचाना) स्त्री० रँगेहुये सूतका तार जिस को हिन्दू पूजा आदि उत्सव में अपने हाथमें बाँधते हैं २ सावन सुदी १५ का तिहवार जिस में ब्राह्मण और जातिके लोगों के हाथमें रँगेहुये सूत का तार या रेशम का डोरा बांधते हैं ।

सं० राग—(रञ्ज्=रंगना, वा प्यार करना) पु० क्रोध, २ प्यार, ३ रंग, ४ गान, सुर—गानविद्या में राग छः हैं (१ भैरव, २ मल्लार, वा मेघ, श्री राग वा ३ सारंग, ४ हिंडोल, ५ वसन्त, ६ दीपक) ।

प्रा० रागछाना—बोल० राग रंगहोना, गाना बजाना होना, तान मिलना ।

प्रा० रागरंग—बोल० गाना बजाना ।

प्रा० रागना-(राग) क्रि० स० गाना शुरुअ करना ।

सं० रागिणी-(राग) स्त्री० गान भेद, तान, सुर, (छःराग और ३६ रागिणी हैं) १ राग, भैरव—उत्पत्ति शिव के मुख से निकला है शिव का ध्यान, शरद् ऋतु में पिछली राति को गाना । उस की रागिणी (१ भैरवी २ बंगाली ३ बरारी ४ मधुमाधवी ५ सिन्धवी ६ गुर्जरी) २ मल्लार वा मेघ—वर्षाऋतु में सब समय में विशेष करके शृंगार रस में गाना इस के गानमें मेघवृष्टि अनायास हो रागिणी (१ बेलावली २ वर्षा ३ कानड़ा ४ माधवी ५ कीडा ६ पटमंजरी) ३ श्रीराग वा सारंग—हेमन्तऋतु में सिंहासनारूढ सुन्दर पुरुष का ध्यान करके गाना । रागिणी (१ गान्धारी २ सुभगी ३ गौरी ४ कौमारिका ५ वैरागी ६ काफी) ४ हिंडोल—ब्रह्मा के शरीर से उत्पत्ति, वसन्तऋतु में दिन के प्रथम भाग में हिंडोलारूढ पुरुष

का ध्यान करके गाना इसके गानमें हिंडोला आपसे आप चलने लगता है। रागिणी (१ मायूरी २ दीपक ३ देशवारी ४ पाहिडा ५ बराड़ी ६ मोरहारी) ५ बसन्त—बसन्त पंचमी से राम नौमी तक आठों पहर गाना बीररस में रागिणी (१ टोड़ी २ पंचमी ३ ललिता ४ पटमंजरी ५ गुर्जरी ६ बियासा) ६ दीपक—सूर्य के नेत्र से उत्पत्ति, गजारूढ़ पुरुष का ध्यान करके ग्रीष्मऋतु में मध्याह्न समय गाना। रागिणी (१ देशी २ कामोदा ३ केदारा ४ कान्हड़ा ५ कर्णाटकी ६ गुर्जरी) इसके गाने पर बुझा दीपक जल उठता है।

सं० राघव—(रघु) पु० रघुनाथ, रघुराज, रघुनन्दन, श्रीरामचन्द्र।

प्रा० राचना—(सं० रचन, रच् =बनाना) क्रि० स० प्यार के वश होना, मिलना, मन लगना, लीन होना।

प्रा० राछ—पु० बढ़ई अथवा राज अथवा और कारीगरों के औज़ार।

प्रा० राज—(सं० राज्य) पु० बादशाहत, हकूमत, बादशाही, अमल, राजा का अधिकार, राज्य।

प्रा० राज—पु० कारीगर, मैमार, संगतराश।

सं० राजकन्या—(राजन्=राजा, कन्या=बेटी) स्त्री० राजा की बेटी, राजकुँवारी, राजकुमारी।

सं० राजकर—पु० राजस्व, लगान, चुंगी, महसूल, सरकारीमालगुजारी।

सं० राजकीय—गु० सरकारी बादशाही।

सं० राजकीयमहासभा—स्त्री० शाही दरबार, पारलीमेण्ट।

सं० राजकुटुम्ब—पु० शाही खानदान, राजवंश, राजाका घराना।

सं० राजकुमार—(राजन्+कुमार) पु० राजा का बेटा, राजपुत्र।

सं० राजकृत्य—पु० कारसल्तनत, राजकाज। [ना, रायलट्रेज़री।

सं० राजकोश—पु० बादशाही खज़ा-

प्रा० राजगादी—(राजा+गादी) स्त्री० राजगद्दी, राजा का आसन, पायह तख्त। [दण्ड।

सं० राजदण्ड—पु० राजसम्बन्धी

सं० राजदत्त—कर्म० पु० राजा का दिया हुआ, राजा से मिला।

सं० राजद्रोही—क० पु० राजा का वैरी, राजविमुख, बाग़ी।

सं० राजद्वार—(राजन्+द्वार) पु० राजा की डेवढ़ी।

सं० राजधानी—(राजन्=राजा, धा= रखना वा रहना) स्त्री० राजस्थान,

राजपुर, वह नगर जहां राजा रहे और राज का काम काजहो, दारुलसल्तनत ।

प्रा० राजना--(सं० राजन्, राज्=शोभना, चमकना) क्रि०अ०शोभना, चमकना, विराजना ।

सं० राजनीति--(राजन् + नीति) स्त्री० राज करनेकी रीति, राजप्रबंध, २ एक ग्रन्थ का नाम ।

सं० राजन्य--पु० क्षत्रिय, राजपुत्र ।

सं० राजपत्नी--(राजन् + पत्नी) स्त्री० रानी ।

सं० राजपुत्र--(राजन् + पुत्र) पु० राजा का बेटा, राजकुमार, २ राजपूत, क्षत्री ।

प्रा० राजपूत--(सं० राजपुत्र) पु०

सं० राजभवन--(राजन् + भवन) पु० राजा का महल ।

सं० राजमन्दिर (राजन् + मंदिर) पु० राजा का महल ।

सं० राजमार्ग--(राजन् + मार्ग) पु० बादशाही रस्ता ।

सं० राजरोग--(राजन् + रोग) पु० रोगों का राजा अर्थात् बड़ा रोग, जैसे क्षयरोग आदि ।

सं० राजशासन--(राजन् + शासन) पु० राजा का दण्ड ।

सं० राजस--(रजस्) गु० रजोगुण से पैदाहुआ, पु० रजोगुण, अहंकार, क्रोध, मोह आदि ।

सं० राजसभा--(राजन् + सभा) स्त्री० राजा का दरबार ।

सं० राजसूय--(राजन्=राजा, सू=सींचना, या किया जाना) पु० एक यज्ञ जिसको केवल चक्रवर्ती राजा ही करता है और इस यज्ञ का सारा काम काज केवल उसके अधीन और राजा करते हैं ।

सं० राजहंस--(राजन् + हंस, अर्थात् हंसों का राजा) पु० एक तरह का हंस जिसके पैर और चोंच लाल होती है ।

सं० राजा--(राजन्, राज्=शोभना, चमकना) पु० नरपति, भूपति ।

सं० राजाधिराज--(राजा + अधिराज) पु० बड़ाराजा, महाराजा, राजेश्वर, चक्रवर्ती, शाहन्शाह ।

सं० राजिका } राजी } (राज्=शोभना, वा चमकना) स्त्री० पंक्ति, पांति, श्रेणी, कतार, पांती, राई, नाली, नहर, केदार, क्यारी, वन, ऊसर भूमि ।

सं० राजित--(राज्=शोभना, चमकना) क० पु० शोभित, शोभायमान ।

सं० राजीव--(राज्=चमकना) पु० कमल, कँवल, पद्म ।

सं॰ राजेन्द्र–(राजन्+इन्द्र) पु॰ महाराजा, राजाधिराज।

सं॰ राजेश्वर–(राजन्+ईश्वर) पु॰ राजाओं का राजा, महाराजा, राजाधिराज, शाहनशाह।

सं॰ राज्य–(राज्=शोभना, चमकना) पु॰ राज शब्द को देखो।

सं॰ राज्याङ्ग–(राज्य+अंग) पु॰ राजा, मंत्री, मित्र, कोष, देश, दुर्ग, सेना।[1]

प्रा॰ राणा–(सं॰राजन्)पु॰राजा (उदयपुरके राजाको राणा कहते हैं)

प्रा॰ राणी, रानी (सं॰ राज्ञी, राज्=शोभना, चमकना) स्त्री॰ राजा की स्त्री, राजपत्नी।

प्रा॰ रात, राती (सं॰ रात्रि) स्त्री॰रजनी, रैन, निशा, निशि।

प्रा॰ रातथोड़ी और सागबहुत–यह कहावत उस जगह बोली जाती है जहां काम तो बहुत हो और समय थोड़ाहो, या थोड़ी आमदनी हो और बहुत खर्च हो।

प्रा॰ रातोंरात–बोल॰ रातही में।

प्रा॰रातना–(राता)क्रि॰स॰रँगना, रंग देना, क्रि॰ अ॰ किसी से बहुत प्यार होना, किसी पर जी लगना।

प्रा॰ राता–(सं॰रक्त) गु॰ लाल, २ रंगा हुआ, ३ लगा हुआ।

प्रा॰ राते–गु॰ रक्त, लाल।

सं॰ रात्रि, रात्री (रा=देना सुख को) स्त्री॰ रात, रजनी।

सं॰ रात्रिचर–(रात्रि+चर) पु॰ राक्षस, २ भूत, ३ चोर, ४ रात को फिरनेवाला, चौकीदार।

सं॰ रात्रिमणि–पु॰ चन्द्र, चांद।

प्रा॰ राद, राध स्त्री॰ पीब, मवाद।

सं॰ राद्ध–(राध्=सिद्ध करना)कृ॰ पु॰ सिद्ध, कामयाब।

सं॰ राधन–भा॰ पु॰ साधन।

सं॰ राधा–(राध्=सिद्ध करना, पूरा करना) स्त्री॰ एक गोपी जो श्री कृष्ण को बहुत प्यारी थी, २ एक नक्षत्र, विशाखानाम नक्षत्र।

सं॰ राधाकान्त–(राधा+कान्त) पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र।

सं॰राधाकुण्ड–(राधा+कुण्ड)पु॰ गोबर्द्धन पहाड़के पास एककुण्ड जिस को श्रीकृष्णने खुदवायाथा और उसमें सब तीर्थ आकर पानी डालगये थे।

सं॰ राधावल्लभ–(राधा+वल्लभ) पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र।

सं॰ राधिका–(राध्=सिद्ध करना)

(१) स्वाम्यमात्यश्चराष्ट्रंदुर्गंकोशोबलंसुहृत। परस्परोपकारीदंसप्ताङ्गंराज्यमुच्यते इतिकामन्दकीये॥

स्त्री० राधा गोपी ।

प्रा० राब—स्त्री० ऊख आदिका रस ।

प्रा० राब } स्त्री० जुवार या बाजरे
राबड़ी } को छाछ में मिलाकर पकाया हुआ खाना ।

सं० राव—(रु=शब्द) पु० शब्द ध्वनि ।

सं० राम (रम्=खेलना, जिसमें योगी रमते हैं, अर्थात् जिसके ध्यान में लगे रहते हैं) पु० परशुराम (यह विष्णु का अवतार जमदग्निऋषि के घर त्रेतायुग के शुरूअ में अन्यायी क्षत्रियों को दण्ड देने के लिये हुआ था) २ रामचन्द्र, दशरथ राजा का बेटा (यह विष्णु का अवतार अयोध्याके राजा दशरथ के घर त्रेतायुग के अन्त में लंका के राजा रावण को मारने के लिये हुआ) ३ बलराम, श्रीकृष्ण का बड़ा भाई जो द्वापर युग के अन्त में रोहिणी के पैदा हुआ, ४ गु० सुन्दर, मनोहर, शुभ, ५ सुखदायी, ६ सर्वव्यापक ।

प्रा० रामकहानी—बोल० बड़ी लंबी बात, लंबी कथा, २ स्त्री० रामायण ।

प्रा० रामराम—बोल० सलाम, प्रणाम, नमस्कार (गँवार लोग सलाम की जगह राम राम करते हैं) ।

प्रा० रामकली } स्त्री० एक रागिणी
रामकेली } का नाम ।

सं० रामगिरि—(राम+गिरि) पु० चित्रकूट पहाड़ जो बुन्देलखण्ड में है जहां वनवास के समय रामचन्द्र पहले पहल रहे थे ।

प्रा० रामजनी—(सं० रामाजनी, रामा=मनभावन, जनी=स्त्री) स्त्री० कश्वनी, पतुरिया, नौची, वेश्या ।

सं० रामचन्द्र—(राम+चन्द्र, अर्थात् चांदके ऐसे सुखदायी राम) पु० विष्णु का सातवां अवतार, श्रीरघुनाथ, राजा दशरथ के बड़े बेटे ।

प्रा० रामतुरई—स्त्री० एक तरकारी का नाम ।

सं० रामदूत—(राम+दूत) पु० रामचन्द्र का दूत, हनुमान् ।

प्रा० रामदोहाई—स्त्री० राम की सौगन्द, परमेश्वर की शपथ ।

प्रा० रामानन्दी—(सं० रामानन्दीय) पु० रामानन्द के मतको माननेवाला, वैष्णव ।

सं० रामा—(रम्=खेलना) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर नारी, सुघर लुगाई, गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन ।

सं० रामायण—(राम=रामचन्द्र, अयन=जगह या रस्ता, अथवा चरित्र) स्त्री० रामचरित्र, रामकथा ।

प्रा० रामावत—पु० एक तरह के वैष्णव साधु, साध ।

प्रा० राय } (सं० राजा) पु० राजा,
राव } २ राय, हिंदुओं में और

विशेष करके कायथों में एक पदवी होती है।

प्रा० रायता–पु० एक तरह की तरकारी जो दही में कद्दू आदि मिलाने से बनती है।

प्रा० रायमुनि–पु० एक प्रकार का लाल पखेरू।

अं० रायलकमीशन=राजा की ओर से कुछ मनुष्य किसी कार्य के निर्णयार्थ नियत किये जावें।

अं० रायलफैमिली=राजवंश, राजकुटुम्ब, शाहीघराना, शाही खानदान।

प्रा० रार, रारि, राड़–स्त्री० लड़ाई, झगड़ा, कलह, दंगा, फसाद।

सं० राल–(रा=देना) स्त्री० धूना, एक तरह का गोंद।

प्रा० रावचाव–पु० रागरंग, विलास, आनंद, हर्ष, भोगविलास, २ प्यार, प्रीति, लाग, लगाव।

प्रा० रावटी–स्त्री० एक तरह का डेरा।

सं० रावण–(रु=शब्द करना या रुलाना, वैरियों को) पु० लंका का राजा जिसको श्रीरामचन्द्र ने मारा।

सं० रावणारि–(रावण+अरि) पु० श्रीरामचन्द्र।

प्रा० रावत, राउत–पु० वीर, बहादुर, शूरमा, सावन्त, लड़ाका, शूरबीर, २ एक नीच जाति जो भंगी के बराबर है।

प्रा० रावरा, रावरो, राउर, रौरा–सर्वना० तुम्हारा, आपका।

सं० राशि–(अश्=फैलना, वा फैलाना) स्त्री० धान आदि का ढेर, समूह, २ ज्योतिष में मेष, वृष, मिथुन आदि बारह, ३ हिसाब में एक प्रकार का अंक।

सं० राशिचक्र–(राशि+चक्र) पु० ज्योतिश्चक्र, लग्नमण्डल, द्वादशभाव।

सं० राष्ट्र–(राज्=शोभना, चमकना) पु० बसा हुआ देश, मुल्क।

प्रा० रास–(रश्मि) स्त्री० डोर, बाग, जैसे घोड़े की रास।

सं० रास–(रास्=शब्द करना) पु० खेल, क्रीड़ा, नाच, जैसे श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ किया था।

सं० रासन–भा० पु० रसनाजन्मज्ञान, जीभ का स्वाद।

सं० रासभ–(रास=शब्द करना) पु० गधा, खर, गर्दभ।

सं० राहु–(रह=छोड़ना) आठवां [ग्रह।

सं० राहुग्रस्त, राहुग्रास–(राहु+ग्रस्त वा ग्रास) पु० चांद सूर्य का ग्रहण।

सं० रिक्त–(रिच्+त, रिच्=खाली करना) गु० खाली, छूंछा, शून्य, छिन्न, भिन्न ।

अं० रिग्युलेशन=मंजूरी क़ानून, व्यवस्था स्वीकार कराना, प्रस्ताविक विषय ।

प्रा० रिझाना–(सं० रञ्जन) क्रि० स० प्रसन्न करना, खुशकरना ।

सं० रिपु–(रप्=बुरी बात कहना) पु० वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

सं० रिपुञ्जय–(रिपुवैरी=को जि=जीतना) पु० एक राजाका नाम, गु० वैरी को जीतनेवाला ।

सं० रिपुता–स्त्री० शत्रुता, दुश्मनी, अदावत ।

सं० रिपुसूदन–(रिपु=बैरी, सूद्=नाश करना) क० पु० शत्रुघ्न, श्रीरामचन्द्र का भाई, लक्ष्मण का छोटा भाई ।

अं० रिप्रिज़्यण्टेटिवसिस्टम=साधारण प्रजाजन अपने समूह से सज्जनों को अपने अनुशासन के हेतु अनुशासक नियत करते हैं ।

अं० रिफार्मर (री=दुबारा, फ़ार्मर=सुधारनेवाला) क० पु० संशोधक, देशदशाका दुबारा सुधा करनेवाला।

प्रा० रिस–(सं० रोष) स्त्री० कोप, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट ।

प्रा० रिसाना, रिसियाना (सं० रुष्=कोप करना) क्रि० अ० कोपना, खिसियाना, क्रोधित होना, गुस्सा होना, अप्रसन्न होना ।

अं० रिस्यांडंट=अनुयोज्य, वह जिस पर अपील कीजाय ।

सं० रिष्ट–(रिष्+त,) पु० मंगल, कल्याण, २ अशुभ, पाप, नाश, गु० दुष्ट, दृढ़, कठोर ।

सं० रिष्टि–(रिष्+ति) स्त्री० शुभ, अशुभ, नाश पु० खड्ग, तलवार ।

प्रा० रींगना–सं० रिग्=जाना) क्रि० अ० चलना, रेंगना, धीरे धीरे चलना।

प्रा० रींछ, रीछ (सं० ऋक्ष, ऋष्=जाना) पु० भालू, एक जङ्गली जानवर का नाम ।

प्रा० रींधना–(सं० रन्धन, रन्ध्=पकना) क्रि० स० पकाना, रांधना ।

प्रा० रीझना–(सं० रञ्जन) क्रि० अ० प्रसन्नहोना, खुशहोना, प्यारकरना ।

प्रा० रीढ़–पु० पीठके बीचकी हड्डी ।

प्रा० रीता–(सं० रिक्त, रिच्=खाली करना) गु० खाली, छूंछा, शून्य ।

प्रा० रीत, सं० रीति (री=जाना) स्त्री० चाल, ढाल, प्रकार, प्रचार, रसम, क़ायदा, स्वभाव, पीतल, प्रस्ताव, टपकना, लोहकिट्ट, सीमा, गति, स्वभाव, लोकाचार ।

प्रा० रीस–(सं० रोष) स्त्री० क्रोध,

कोप, गुस्सा ।

सं० रुक्—(रुच्=चाहना) पु० रोग, २ उदार, दाता, ३ दीप्ति, प्रकाश ।

सं० रुकना—(सं०रुध्=रोकना) क्रि० अ० अटकना, बन्द होना ।

प्रा० रुक्म—(सं० रुक्मी, रुच्=चमकना, वा प्यार करना) पु० राजा भीष्मकका बड़ा बेटा और रुक्मिणी का भाई और श्रीकृष्ण का साला जिसको बलदेवजीने मारा ।

सं० रुक्मिणी—(रुच्=चमकना, वा प्यार करना) स्त्री० लक्ष्मीका अवतार, कुण्डिनपुर के राजा भीष्मक की बेटी जो श्रीकृष्णको ब्याही गई थी और पहले जन्ममें सीताथी ।

सं० रुक्ष, रूक्ष (रुक्ष्=रूखा होना) गु० अचिक्कण, निस्स्नेह, कठोर, रूखा ।

प्रा० रुख—पु०सन्मुख,क्रोध,मुँह,सतरंज का प्यादा, इशारा, दयादृष्टि, मेहरबानी की नजर ।

प्रा० रुखाई—(रूखा) भा० स्त्री० रुखावट, सुखावट, २ घुरकी, झिड़की, धमकी ।

सं० रुचक—(रुच्=प्रीतिकरना) पु० सज्जीखार, मांगल्य द्रव्य, उत्कट, अश्वभूषण, माला, हींग, काला नोन, बीजपूर नींबू, दल, निष्क, कपोत, गु० हर्षित, प्रसन्न ।

प्रा० रुचना—(सं०रोचन,रुच्=प्यार करना, वा चाहना) क्रि० अ० भाना, अच्छालगना, पसंदआना ।

सं० रुचि—(रुच्=चमकना, वा प्यार करना)भा० स्त्री० चाह, इच्छा,अभिलाष, स्पृहा, चोप, शौक, २ खाने की इच्छा, भोजन करनेकी इच्छा, ३ चमक, शोभा, ४ प्यार, अनुराग ।

सं० रुची—फ० स्त्री० पसंद, प्रवृत्ति ।

सं० रुचिर—(रुचि=चाह वा प्यार रा=देना) गु० सुन्दर, मनोहर, मनभावन, २ मीठा, सुस्वादु ।

सं० रुच्य, रुचिष्य गु० सुन्दर, रुचिकर, मधुर, स्वादुयुक्त, मनोहर, पसन्दीदा ।

सं० रुज्, रुजा (रुज्=बीमारहोना) पु० रोग, बीमारी ।

सं० रुण्ड—(रुद् या रुठ्=मारना) पु० धड़, बिन शिरकी देह ।

सं० रुदन—(रुद्=रोना) पु० रोना, आंसू बहाना, विलाप, गिरियावजारी करना ।

सं० रुद्ध—(रुध्=रोकना) म्म० पु० रुकाहुआ, छेंकाहुआ, अटकाहुआ, बँधाहुआ ।

सं० रुद्र—(रुद्=रोना, वा शब्द करना) पु० शिव, महादेव की ग्यारह मूर्ति, अजैकपाद, अहिर्बुध्न, विरूपाक्ष, सुरेश्वर, जयन्त, बहुरूप,

त्र्यम्बक, अपराजित, सावित्र, हर, रुद्र, ११ संख्या ।

सं० रुद्राक्रीड़—पु० श्मशान ।

सं० रुद्राक्ष—(रुद्र=शिव, अक्ष=आंख अर्थात् जिसका रूप शिव की आंखों के ऐसा होता है) पु० एक वृक्ष जिसके दानोंकी माला बनती है।

सं० रुद्राणी—(रुद्र) स्त्री० शिवा, दुर्गा, पार्वती, शिवरानी ।

सं० रुधिर—(रुध्=रोकना)पु० लोहू, लेहू, खून, रक्त, मंगलग्रह, रक्तवर्ण ।

प्रा० रुपया } रुपैया } (रूपा) पु० रूपेका एक सिक्का जो सोलह आने के बराबर होता है ।

सं० रुमा—स्त्री० सुग्रीव की० स्त्री ।

सं० रुरु—पु० मृगभेद, दैत्य, सर्प, अतिक्रूर ।

सं० रुष् } रुषा } स्त्री०क्रोध,कोप, आमर्ष ।

सं० रुषित—क०पु० क्रोधभरा हुआ ।

सं० रुष्ट—क०पु०क्रुद्ध,क्रोधभराहुआ।

प्रा० रूंगटा—(सं० रोम)पु० रों, बाल, रूंवा,—रूंगटे खड़े होना, बोल० डरसे या जाड़े के मारे बाल खड़े होना, डरना ।

प्रा० रूख—(सं० रूक्ष, रूक्ष्=कड़ा होना) पु० पेड़, वृक्ष, तरवर, तरु, दरख़्त ।

प्रा० रूखा—(सं० रुक्ष, या रूक्ष्=कठोर) गु० रूखा, फीका, बेरस, २जो चिकना न हो, खुड़खुड़ा, कड़ा ३ निर्दय, कठोर, क्रूर ।

प्रा० रूखासूखा—बोल० सादा, बे स्वाद खाना, २ कड़ा, कठोर बात।

प्रा० रूखानी } रुखानी } स्त्री०टांकी, छेनी ।

प्रा० रूठना—(सं० रुष्ट, रुष्=क्रोध करना) क्रि० अ० अप्रसन्न होना, नाराज होना, बिगड़ना ।

सं० रूढ़—(रुह्=पैदा होना) क० पु० पैदाहुआ, जमा हुआ, उत्पन्न २ प्रसिद्ध ।

सं० रूढ़ि—(रुह्=पैदा होना) स्त्री० उत्पत्ति, पैदा होना, जन्म, २ प्रसिद्धि, ३ ऐसा शब्द जो किसीसे बना न हो और उसका अर्थ उसी पद में रहे जैसे "त्रिफला" यह रूढ़िहै ।

सं० रूप—(रूप्=डौल बनाना) पु० आकार, डौल, मूरत, शकल, २ शोभा स्वरूप, सुन्दरता, ३ रीति, ढब, प्रकार, भांति, चाल, तरह ।

सं० रूपक—(रूप्=डौलबनाना) पु० नाटक, २ रूप, मूरत, ३ एक अलंकार का नाम ।

सं० रूपनिधान—(रूप+निधान) पु० सुन्दरताका घर,अर्थात् बहुतही सुन्दर ।

सं० रूपराशि—स्त्री० सुन्दरता का

समूह, मखज़नुल जमाल, रूपका खज़ाना ।

सं० रूपवती—(रूप+वती) स्त्री० सुन्दर स्त्री, मनोहर स्त्री ।

सं० रूपसागर—(रूप+सागर) पु० रूप का समुद्र, बहुतहीसुन्दर ।

प्रा० रूपा—(सं० रूप्य, रूप) पु० चांदी।

फ़ा० रूमाल—पु० मुँहपोछनेका कपड़ा, उपवस्त्र ।

सं० रूपी—क० स्त्री० रूपवाली ।

प्रा० रूरी—गु० स्त्री० सुन्दर ।

प्रा० रूसना—(सं० रोषण रुष्= क्रोध करना) क्रि० अ० क्रोधित होना, रिसाना, २ अप्रसन्न होना नाराज होना, रूठना ।

प्रा० रेंकना—क्रि० अ० गधे का बोलना ।

प्रा० रेंगना—(सं० रिग्=जाना) क्रि० अ० धीरे २ चलना, रींगना ।

प्रा० रेंड, पु० } (सं० एरण्ड)
रेंडी, स्त्री० } एरण्डका पेड़ ।

प्रा० रेख—(सं० रेखा) स्त्री० लकीर, खत।

सं० रेखा—(लिख=लिखना) स्त्री० लकीर, रेख, २ लिखना, ३ प्रारब्ध, भाग ।

सं० रेचक-(रिच्+अक, रिच्=जुदा करना) क० पु० दस्तकारक, जुलाब, पु० निशोत, भटकटैया, जयपाल, जमाल गोटा ।

सं० रेचन—(रिच्+अन) भा० पु० मलभेदन, दस्तकराना, जुलाब देना ।

अं० रेज़ीडयण्ट—राजदूत, वकील शाही, सफ़ीर ।

सं० रेणु—(रि=जाना) स्त्री० रेत, धूल।

सं० रेणुका—(रि=जाना) स्त्री० सुगंधित चीज़, २ जमदग्नि ऋषि की लुगाई और परशुरामजीकी मा ।

प्रा० रेत—स्त्री० धूल, रज, बालू, २ चूर, रेतन ।

प्रा० रेतना—(रेत) क्रि० स० घिसना, सोहनकरना, रन्दा फेरना, २ घोटना, चिकना करना, ओपना ।

सं० रेतस—पु० पाराधातु, वीर्य, शुक्र ।

प्रा० रेती—(रेत) स्त्री० नदी के तीर पर की रेतली धरती, बालू, २ सोहन, रेतने का औज़ार ।

सं० रेप—(रेप=शब्द करना) गु० निन्दित, क्रूर, कृपण ।

सं० रेफ—(र) पु० रकार, र् अक्षर जो दूसरे व्यञ्जन के साथ मिलता है तब उसका रूप (र्‍) ऐसा होताहै जैसे र्क २ कुत्सित, अधम ।

प्रा० रेलना—क्रि० स० ठेलना, पेलना, ढकेलना ।

प्रा० रेलपेल—स्त्री० भीड़, धूमधाम, २ बहुतायत ।

प्रा० रेवड़ी—(एकतरह की खाने की मीठी चीज़, खुटिया ।

अं० रेवन्यु—मालका काम ।

अं० रेवन्युबोर्ड—शुक्र सम्बन्धी

सभा, चुंगीके हाकिमों का दरबार।

प्रा० रेवड़ीके फेर में पड़ना— बोल० कठिनता में फंसना, पेच में आना।

सं० रेवती—(रेवत) स्त्री० रेवत राजा की बेटी और बलदेवजी की स्त्री, २ (रेव्=जाना) सत्ताइसवां नक्षत्र।

सं० रेवतीरमण-(रेवती + रमण) पु० बलदेव, बलराम, श्रीकृष्ण के बड़े भाई।

सं० रेवा—(रेव्=बहना, या उछल के चलना) स्त्री० नर्मदा नदी।

प्रा० रेह—स्त्री० एक तरह का खार जो कपड़ों के धोने और साबुन के बनाने में काम आता है।

सं० रै-पु० धन, स्वर्ण अर्थ, विभव।

प्रा० रैन-(सं० रजनि) स्त्री० रात।

सं० रैवत—पु० द्वारका के समीप पर्वत, महादेव चौदह मनु में का एक मनु रेवतीका पिता, बलदेव का श्वसुर।

प्रा० रोआं } रोवां } (सं० रोम) पु० शरीर परकेबाल, रऊंत, रोएं।

प्रा० रोंगटी—स्त्री० छलसे झूठ को सच और सच को झूठ बताना, हथफेर, छलविद्या।

प्रा० रोक } रोकड़ } (सं० रोक, रुच्=चाहना, वा प्यार करना) पु० नकद, नकदी।

प्रा० रोकड़िया—(रोकड़) पु० खजानची, कोठारी।

प्रा० रोकना—(सं० रोधन, रुध्=रोकना) क्रि० स० अटकाना, घेर-लेना, बंद करना, थामना, २ मना करना, ३ बात काटना।

सं० रोग—(रुज्=बीमार होना) पु० बीमारी, पीड़ा, व्याधि, दुःख।

सं० रोगी—(रोग) क०पु० बीमार, दुःखी, पीड़ित, मरीज।

सं० रोचक—(रुच्=चाहना, प्यार करना) गु० चाहकरानेवाला, रुचि करानेवाला, पाचक, पु० भूख, क्षुधा।

सं० रोचन-भा० पु० तरगीब, पसंद।

सं० रोचनीय—कर्म० पु० मरगब, पसंदीदा, स्पृहाजनक।

सं० रोचिष्णु—क० पु० दीप्तिमान, प्रकाशित।

प्रा० रोझ—(सं० ऋष्य, ऋष्=जाना) पु० एक जानवर का नाम।

प्रा० रोट—(सं० रोटिका या रोटी) पु० मोटी रोटी, जो हनुमान् को चढ़ाते हैं। [पु० मोटी रोटी।

प्रा० रोटा—(सं० रोटिका या रोटी।

सं० रोटिका } रोटी } (रुट्=ठोंकना, या काटना) स्त्री० गेहूं के आटे की बनी हुई खाने की चीज, फुलका।

अं० रोड=मार्ग, सड़क।

प्रा० रोड़ा-पु० बड़ा कंकर, ईंटका बड़ा टुकड़ा।

सं० रोदन—(रुद्=रोना) भा० पु० रोना, रुदन।

सं० रोद्धा—(रुध्=रोकना, ढापना) क० पु० रोकनेवाला।

सं० रोध—भा० पु० तट, किनारा।

प्रा० रोना—(सं० रोदन) क्रि० अ० आंसू बहाना, विलाप करना, बिलकना, चिल्लाना, २ उदास होना, नाराज होना, ३ पु० विलाप, रुदन, दुःख, शोच।

प्रा० रोपना—(सं० रोपण, रुह्=जगना) क्रि० स० बोना, जमाना, उगाना। [जमानेवाला।

सं० रोप्ता—क० पु० लगाने वाला,

सं० रोम-(रु=शब्दकरना या रुह्=उगना, जो देह पर उगते हैं) पु० लोम, बाल, केश, रोवां, रोआं।

सं०रोमाञ्च-भा०पु० रोमाखड़ाहोना।

अं० रोमनकैथोलिक-क० पु० ईसा के चित्रके पूजनेवाले।

सं० रोमन्थ—पु० राउंथ, पगुराना, दाबी वस्तु को चाबना।

सं० रोमपाट-पु० दुशाला, कम्बल।

सं० रोमहर्षण—पु० रोमाञ्च, रोमाखड़े होना, सूत, व्यासशिष्य, बहेरावृक्ष।

सं० रोमाञ्चित—(रोम=बाल, अञ्च=जाना) गु० बहुत खुशी या डरसे शरीर के रोएं खड़े होना-पुलकित, हर्षित।

सं० रोमावली—(रोम+आवली) स्त्री० रोएंकी धारी जो नाभिके बीच में से होकर जाती है।

प्रा० रोली-स्त्री० कुमकुम या जिसका रोचनाकिया जाताहै।

सं० रोष (रुष्=क्रोध करना) पु० कोप, रिस, क्रोध, गुस्सा, खिसियाहट।

सं० रोह-पु० कली, कुडमल, रोहण, ऊपर जाना। [वृक्ष, चढ़ना।

सं० रोहण—भा० पु० चढ़ाव, वृद्धि,

सं० रोहिणी—(रुह्=पैदा होना) स्त्री० चौथा नक्षत्र, २ चांद की स्त्री०, ३ रोहण राजा की बेटी, वसुदेव जी की स्त्री और बलदेव जी की मा।

सं० रोहिणीपति—(रोहिणी+पति) पु० चांद, २ वसुदेव जी।

सं० रौद्र—(रुद्र, अर्थात् जिसका देवता, रुद्र है) गु० डरावना, भयानक, पु० क्रोध, कोप, २ धूप।

प्रा० रौताई-भा०स्त्री०ठकुराई, शूरता

प्रा० रौना—पु० (त्रिरागमन) गौने के पीछे अपनी स्त्री को उसके बाप के घर से अपने घर में लाना।

सं० रौप्य—पु० रजत, चांदी।

प्रा० रौर—(सं० रव) पु० शब्द रौला, शोर, गुल, गपाड़, २ यश,